246

रूपेश

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

विषय	पृष्ठांक
नेत्र रोग का उपचार	३८४
शिरोरोग का उपचार	४००
प्रदर रोग का उपचार	४०४
योनिव्यापद् का उपचार	४०६
सूतिका रोग का उपचार	४०८
बालरोग का उपचार	४१६
सर्प आदि विष विनाशक उपचार	४१४
रसायन का वर्णन	४१७
वाजीकरण का वर्णन	४१९
[चतुर्थ परिच्छेद]	
काल (ज्यौतिष) शास्त्र	**४२१-५२४**
काल के प्रकार	४२१
कालपुरुष शरीर के अङ्ग और राशियाँ	४२२
राशि स्वरूप ज्ञान	४२२
मेष आदि राशियों का अधिवास	४२२
मेष आदि राशियों की लघुता दीर्घता	४२३
राशियों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२३
राशियों की जलचरादि संज्ञा	४२३
चतुष्पदादि संज्ञा	४२४
राशियों के दिवारात्रि बल	४२४
राशियों के धातु मूल जीव संज्ञा	४२४
मेषादि राशियों की द्विपदादि संज्ञा	४२४
राशियों के वर्ण	४२४
राशियों का स्वामी	४२४
भाव विचार	४२५
ग्रहों के आत्मादि विचार	४२६
ग्रहों के राजादि संज्ञा	४२६
ग्रहों का वर्ण ज्ञान	४२६
ग्रहों का शुभाशुभ ज्ञान	४२६
चन्द्र का बलाबल	४२७
ग्रहों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२७
ग्रहों के विहगादि स्वरूप	४२७
ग्रहों के बालादि अवस्था	४२७
ग्रहों के धातु आदि संज्ञा	४२७
ग्रहों के ताम्रादि वर्ण	४२७
ग्रहों के द्रव्य व अधिदेवता	४२७

विषय	पृष्ठांक
ग्रहों के माणिक्यादि रत्न	४२८
ग्रहों के वस्त्र	४२८
पूर्वादि दिशा स्वामी ज्ञान	४२८
ग्रहों के विप्र आदि संज्ञा	४२८
ग्रहों के पुरुषादि संज्ञा व तत्त्व	४२८
ग्रहों के मज्जा आदि ज्ञान	४२८
ग्रहों के लवणादि रस व अयनादि परिज्ञान	४२९
उच्चादि परिज्ञान	४२९
ग्रहों के मूलत्रिकोण राशियाँ	४२९
ग्रहों का फल परिमाण	४२९
ग्रहों का विफल स्थान	४२९
ग्रहों का बालादि अवस्था	४३०
सूर्य स्वरूप	४३०
चन्द्र स्वरूप	४३०
भौम स्वरूप	४३०
बुध स्वरूप	४३०
गुरु स्वरूप	४३०
भृगु स्वरूप	४३०
शनि स्वरूप	४३०
ग्रह वध क्रम	४३१
ग्रहों के मित्रादि ज्ञान	४३१
ग्रहों के स्थिरादि संज्ञा	४३१
ग्रहों की दृष्टि	४३१
ग्रहों का कारक	४३१
ग्रहों का स्थिरकारक	४३२
ग्रह अरिष्ट ज्ञान	४३२
ग्रहों से अरिष्ट नाश	४३२
सूर्य कृत दोष	४३२
चन्द्र कृत दोष	४३२
मङ्गल कृत दोष	४३२
बुध कृत दोष	४३३
गुरु भृगु कृत दोष	४३३
शनि केतु कृत दोष	४३३
राहु कृत दोष	४३३
ग्रह भाव योग	४३३

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ सूर्य फल	४३३
द्वितीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
तृतीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
चतुर्थ भावस्थ सूर्य फल	४३४
पंचम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
षष्ठ भावस्थ सूर्य	४३४
सप्तम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
अष्टम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
नवम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
दशम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
एकादश भावस्थ सूर्य फल	४३४
द्वादश भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
लग्नस्थ चन्द्र फल	४३४
द्वितीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
तृतीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल	४३५
पंचम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
षष्ठ भावस्थ चन्द्र	४३५
सप्तम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
अष्टम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
नवम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
दशम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
एकादश भावस्थ चन्द्र फल	४३६
द्वादश भाव में स्थित चन्द्र फल	४३६
लग्नस्थ मंगल फल	४३६
द्वितीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
तृतीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
चतुर्थ भावस्थ मंगल फल	४३६
पंचम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
षष्ठ भावस्थ मंगल फल	४३६
सप्तम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
अष्टम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
नवम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
दशम भाव में स्थित मंगल फल	४३७
एकादश भावस्थ मंगल फल	४३७
द्वादश भाव में स्थित मंगल फल	४३७

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ बुध फल	४३७
द्वितीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
तृतीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
चतुर्थ भावस्थ बुध फल	४३७
पंचम भाव में स्थित बुध फल	४३७
षष्ठ भावस्थ बुध फल	४३७
सप्तम भाव में स्थित बुध फल	४३७
अष्टम भाव में स्थित बुध फल	४४०
नवम भाव में स्थित बुध फल	४४०
दशम भाव में स्थित बुध फल	४४०
एकादश भावस्थ बुध फल	४४०
द्वादश भाव में स्थित बुध फल	४४०
लग्नस्थ बृहस्पति फल	४४०
द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
तृतीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
पंचम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
षष्ठ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
नवम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
दशम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
एकादश भावस्थ बृहस्पति फल	४४१
द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
लग्नस्थ शुक्र फल	४४१
द्वितीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
तृतीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
चतुर्थ भावस्थ शुक्र फल	४४१
पंचम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
षष्ठ भावस्थ शुक्र फल	४४२
सप्तम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
अष्टम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
नवम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
दशम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
एकादश भावस्थ शुक्र फल	४४२
द्वादश भाव मे स्थित शुक्र फल	४४२

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ शनि फल	४४२
द्वितीय भाव में स्थित शनि फल	४४२
तृतीय भाव में स्थित शनि फल	४४३
चतुर्थ भावस्थ शनि फल	४४३
पंचम भाव में स्थित शनि फल	४४३
षष्ठ भावस्थ शनि फल	४४३
सप्तम भाव में स्थित शनि फल	४४३
अष्टम भाव में स्थित शनि फल	४४३
नवम भाव में स्थित शनि फल	४४३
दशम भाव में स्थित शनि फल	४४३
एकादश भावस्थ शनि फल	४४३
द्वादश भाव में स्थित शनि फल	४४३
भावों का शुभाशुभत्व विचार	४४४
केन्द्रस्थ दो ग्रह योग फल	४४४
केन्द्र में स्थित सूर्य–चन्द्र योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य भौम योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य बुध योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य गुरु योग फल	४४५
सूर्य शुक्र योग फल	४४५
सूर्य शनि योग फल	४४५
चन्द्र भौम योग फल	४४६
चन्द्र बुध योग फल	४४६
चन्द्र गुरु योग फल	४४६
चन्द्र शुक्र योग फल	४४७
चन्द्र शनि योग फल	४४७
भौम बुध योग फल	४४७
भौम गुरु योग फल	४४७
भौम शुक्र योग फल	४४८
भौम शनि योग फल	४४८
बुध गुरु योग फल	४४८
बुध शुक्र योग फल	४४९
बुध शनि योग फल	४४९
गुरु शुक्र योग फल	४४९
गुरु शनि योग फल	४४९
शुक्र शनि योग फल	४५०
दो तीन आदि ग्रह योग	४५०
सूर्य चन्द्रमा योग फल	४५०
सूर्य भौम योग फल	४५०
सूर्य बुध योग फल	४५०
सूर्य गुरु योग फल	४५१
सूर्य शुक्र योग फल	४५१
सूर्य शनि योग फल	४५१
चन्द्र भौम योग फल	४५१
चन्द्र बुध योग फल	४५१
चन्द्र गुरु योग फल	४५१
चन्द्र शुक्र योग फल	४५१
चन्द्र शनि योग फल	४५१
भौम बुध योग फल	४५२
भौम गुरु योग फल	४५२
भौम शुक्र योग फल	४५२
भौम शनि योग फल	४५२
बुध गुरु योग फल	४५२
बुध शुक्र योग फल	४५२
बुध शनि योग फल	४५२
गुरु शुक्र योग फल	४५२
गुरु शनि योग फल	४५३
शुक्र शनि योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र मंगल योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र बुध योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र गुरु योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शुक्र योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शनि योग फल	४५३
सूर्य मंगल बुध योग फल	४५३
सूर्य मंगल गुरु योग फल	४५४
सूर्य भौम शुक्र योग फल	४५४
सूर्य भौम शनि योग फल	४५४
सूर्य बुध गुरु योग फल	४५४
सूर्य बुध शुक्र योग फल	४५४
सूर्य बुध शनि योग फल	४५४
सूर्य गुरु शुक्र योग फल	४५४
सूर्य गुरु शनि योग फल	४५४
सूर्य शुक्र शनि योग फल	४५४

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम बुध योग फल	४५५
चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५५
चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र भौम शनि योग फल	४५५
चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५५
चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र बुध शनि योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५५
चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५६
भौम बुध गुरु योग फल	४५६
भौम बुध शुक्र योग फल	४५६
भौम बुध शनि योग फल	४५६
भौम गुरु शुक्र योग फल	४५६
भौम गुरु शनि योग फल	४५६
भौम शुक्र शनि योग फल	४५६
बुध गुरु शुक्र योग फल	४५६
बुध गुरु शनि योग फल	४५७
बुध शुक्र शनि योग फल	४५७
गुरु शुक्र शनि योग फल	४५७
माता व पिता के सुख विचार	४५७
शुभ ग्रहों के योग फल	४५७
पाप ग्रहों के योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम बुध शनि योग फल	४५९

विषय	पृष्ठांक
सूर्य भौम गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य भौम शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य गुरु शुक्र शनि योग फल	४५९
चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६१
भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य बुध गुर शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
भौम बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
एक राशि में सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६५
सृष्टि के समय योग	४६५
स्थावर जङ्गम की अभिव्यक्ति	४६५
मनुष्येतर जन्म ज्ञान	४६५
वर्णाकृति भेद ज्ञान का विचार	४६५
पशु शरीर में राशि विभाग का ज्ञान	४६५
वियोनि का वर्ण व चिन्ह ज्ञान	४६५
ग्रहों के वर्णों का ज्ञान	४६६
प्रकारान्तर से वर्ण का ज्ञान	४६६
पक्षी जन्म ज्ञान	४६६
वृक्ष जन्म योग	४६६
लग्नांश पति से वृक्षों से भेद का ज्ञान	४६७
वृक्ष के शुभाशुभ फल का ज्ञान	४६७
वृक्षों की संख्या का ज्ञान	४६७
वियोनि जन्म ज्ञान	४६७
वियोनि ज्ञान में विशेष कथन	४६७
चतुष्पद जन्म ज्ञान	४६८
विशेष रीति से वियोनि जन्म ज्ञान	४६८
जन्तुओं की आकृति व यमलादि का ज्ञान	४६८
एक से अधिक वियोनि जन्म ज्ञान	४६८

विषय	पृष्ठांक
लोक विपरीत प्रसव ज्ञान	४६९
वृश्चिक लग्नस्थ द्विपद वा नवम नवांश फल	४६९
धनु लग्न धनु नवांश या धनु द्वादशांश फल	४६९
मकर लग्नस्थ मकर नवांश या मकर द्वादशांश फल	४६९
मीन लग्नस्थ मीन नवांश या मीन द्वादशांश फल	४६९
मेष या वृष लग्नस्थ मेष या वृष नवांश फल	४६९
गर्भाधानयोग्य रजोदर्शन	४७०
रजो दर्शन में कारण	४७०
गर्भाधान में अक्षम रजोदर्शन	४७०
स्त्री पुरुष संयोग कथन	४७०
अन्य पुरुष संयोग कथन	४७१
संभोग प्रकार का विचार	४७१
गर्भ सम्भव योग	४७१
गर्भस्थिति का स्वरूप	४७१
गर्भ में पुत्रादि का ज्ञान	४७२
पुत्र जन्म योग	४७२
नपुंसक जन्म योग कथन	४७२
यमल योग विचार	४७२
गर्भ में तीन बालकों का योग	४७३
प्रत्येक मास में गर्भ की स्थिति विचार	४७३
गर्भ के दस मासों का स्वामी	४७३
गर्भपात योग	४७३
गर्भपुष्टि ज्ञान	४७४
गर्भ सहित गर्भवती मरण विचार	४७४
गर्भ वृद्धि योग	४७४
गर्भ समय से प्रसव मास का ज्ञान	४७४
सर्वसम्मत से जन्म राशि ज्ञान	४७५
प्रसव काल का ज्ञान	४७५
प्रसवकालिक लग्नादि का ज्ञान	४७५
नेत्रहीन योग	४७५
मूक योग	४७५

विषय	पृष्ठांक
जड एवं सदन्त योग	४७५
अधिकाङ्ग योग	४७५
वामन एवं कुब्ज योग	४७६
पङ्गु योग	४७६
बिना शिर, पैर, हाथ के जन्म योग	४७६
लग्नादि से जन्मयोग का ज्ञान	४७६
प्रसव स्थान का विचार	४७६
सूतिकागृह विचार	४७७
सूतिका गृह में शयन स्थान ज्ञान	४७७
सूतिका गृह के स्वरूप ज्ञान	४७८
सूतिका की शय्या का विचार	४७८
सूतिका का भूमि शयन एवं उपसूतिका ज्ञान	४७८
दीपक की वर्त्ति व तेल का ज्ञान	४७८
अधिक दीप का ज्ञान	४७९
प्रसव के समय अन्धकार विचार	४७९
पिता की अनुपस्थिति में जन्म योग	४७९
कष्ट में प्रसव एवं माता के सुख का विचार	४८०
परजात जन्म योग	४८०
प्रसव समय में मातृकष्ट का विचार	४८०
सर्पवेष्टित जन्म योग	४८०
माता पिता का सुख योग	४८०
पुरुष–स्त्री ग्रहों के बल का ज्ञान	४८१
तीन प्रकार के अरिष्ट	४८१
तृतीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
द्वितीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
नवम वर्ष के बाद अरिष्ट योग	४८१
एक मास में अरिष्ट योग	४८१
एक वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
छठवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
चौथे वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
दो मास में अरिष्ट योग	४८२
शीघ्र अरिष्ट योग	४८२
जन्माधिपति के द्वारा शारीरिक पीड़ा का ज्ञान	४८२

विषय	पृष्ठांक
सात वर्ष में अरिष्ट का ज्ञान	४८२
दश या सोलह वर्ष में अरिष्ट का विचार	४८२
शीघ्र मरण विचार	४८२
स्वल्पकाल में मरण योग	४८२
एक, चार, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
एक, छः, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८३
चतुर्थ मास में अरिष्ट का विचार	४८३
माता के साथ अरिष्ट का विचार	४८३
शीघ्र निधन अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट का ज्ञान	४८३
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८४
मातृ अरिष्ट योग	४८४
पितृ अरिष्ट योग	४८४
पिता के अरिष्ट का योग	४८४
माता के साथ निधन योग	४८४
जन्म के समय पिता का स्थान	४८४
पिता का निधन योग	४८४
माता एवं जातक में एक के निधन का ज्ञान	४८५
नेत्र हानि योग	४८५
पुनः नेत्र हानि योग	४८५
कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
चन्द्र राशि से कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
तीन दिन जीवन योग	४८६
एक दिन का जीवन योग	४८७
सात दिन का जीवन योग	४८७
रोगारम्भ से अरिष्ट का विचार	४८७
पुनः रोगारम्भ से अरिष्ट	४८७
पुनः जन्माङ्ग से अरिष्ट योग	४८७
एक मास वा सात दिन का आयु योग	४८८
मृत जातक योग	४८८
त्रिकोण गत पापग्रह से अरिष्ट योग	४८८
शीघ्र निधन योग	४८८
१०८ वर्ष की आयु का योग	४८८

विषय	पृष्ठांक
१२० वर्ष की आयु का योग	४८८
देवतुल्य आयु योग	४८८
गतायु योग	४८९
अनुक्तकाल योगों में निधन समय का विचार	४८९
पाँचवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
ग्यारहवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
चतुर्थ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
तीन वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
नौ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
पाँच वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
बारह वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
दुर्मुहूर्त में अरिष्ट योग	४९०
अल्प समय में अरिष्ट योग	४९०
प्रत्येक राशि में चन्द्रकृत अरिष्ट योग	४९०
कथित अंशों में निधन समय का विचार	४९०
गुरुवश निधन वर्ष का विचार	४९१
राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान् योग	४९१
क्रूरकर्मा व सत्कृत राजयोग	४९१
नीचकुल में उत्पन्न होने वाले राजयोग	४९१
नीच कुलोत्पन्न राजयोगों के बत्तीस प्रकार	४९१
अधमवंशोत्पन्न का राजयोग	४९२
अखिलभूमण्डल पालक योग	४९२
विज्ञान कुशल राजयोग	४९२
सद्भूपाल राजयोग	४९२
अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग	४९२
इन्द्र तुल्य राजयोग	४९२
शत्रु से अजेय राजयोग	४९२
शत्रु को पराजित कर्त्ता राजयोग	४९२
स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग	४९३
अधिराजयोग	४९३
अपारकीर्तियुत राजयोग	४९३
प्रसन्न राजयोग	४९३
इन्द्रतुल्य बलशाली राजयोग	४९३
अखण्ड भूपतियोग	४९३
यशस्वी व समस्त शत्रुहन्ता राजयोग	४९३
सार्वभौम राजयोग	४९३
देव-दानवों से वन्दित राजा	४९४
शत्रुरहित राजयोग	४९४
सार्वभौम राजयोग	४९४
सगरादि तुल्य राजयोग	४९४
तपस्वी राजयोग	४९४
बृहस्पति की बुद्धितुल्य राजयोग	४९४
दुर्वार शत्रुमारक राजयोग	४९४
यशस्वी राजयोग	४९४
अधिक हाथी रखने वाला राजा	४९४
स्वकीर्ति से दिशाओं का शुभ्रकर्त्ता राजयोग	४९५
शत्रुजेता राजयोग	४९५
सार्वभौम राजयोग	४९५
अधिक हाथी वाला राजयोग	४९५
अपूर्व यशस्वी राजयोग	४९५
निषाद कुलोत्पन्न राजयोग	४९५
महाराज योग	४९५
ग्रामीण राजयोग	४९५
अधिक यशस्वी राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
देवतुल्य राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
लक्ष्मीयुत राजयोग	४९६
प्रसिद्ध राजयोग	४९६
ब्राह्मणकुलोत्पन्न का राजयोग	४९६
गौपालक राजयोग	४९६
सकलनृप पालक राजयोग	४९६
यशस्वी राजयोग	४९७
कुत्सित राजयोग	४९७
नीचकुलोत्पन्न राजयोग	४९७
शत्रुजेता राजयोग	४९७

विषय	पृष्ठांक
निराकुल राजयोग	४९७
चक्र व समुद्र राजयोग	४९७
अधिक सम्पत्तिवान् राजयोग	४९७
नगर नामक राजयोग	४९७
प्रशान्त राजयोग	४९७
कलश संज्ञित राजयोग	४९८
पूर्ण कुम्भ नामक राजयोग	४९८
सर्ववन्दित राजयोग	४९८
स्थिर लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
अति लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
चन्द्रांशतुल्य यशस्वी राजयोग	४९८
स्वगुण प्रख्यात राजयोग	४९८
यशस्वी राजयोग	४९९
पराक्रम धन वाहन से युक्त राजयोग	४९९
सर्पराज के तुल्य प्रतापी राजयोग	४९९
राजराजेश्वर राजयोग	४९९
शत्रुजित राजयोग	४९९
लक्ष्मीपति राजयोग	४९९
ब्राह्मणकुलोत्पन्न राजयोग	४९९
अंग देशाधिप राजयोग	४९९
मगधाधिप राजयोग	४९९
शत्रुदमन राजयोग	४९९
गोप कुलोत्पन्न राजयोग	५००
समस्त भूमण्डल का स्वामी राजयोग	५००
कश्मीरमण्डलीय राजयोग	५००
तीन ओर समुद्र से वेष्टित भूमि का राजयोग	५००
प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
द्वीपाधिप राजयोग	५००
त्रिभुवनाधिप राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
विमल कीर्तिमान् राजयोग	५००
प्रसिद्ध यशस्वी राजयोग	५०१
स्वभुज विजयी राजयोग	५०१
अस्थिर स्वभावी राजयोग	५०१
अजेय राजयोग	५०१
द्विज देवभक्त राजयोग	५०१
सर्ववन्दित राजयोग	५०१
स्वबाहुबल से शत्रु को जीतने वाले राजा का राजयोग	५०१
कीर्तिमान् राजयोग	५०१
पुष्कल नामक राजयोग एवं फल	५०१
शतयोजन भूमि का स्वामी	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
वर्धितश्री राजयोग	५०२
शत्रुजेता राजयोग	५०२
विश्व का कल्याण करने वाला राजा	५०२
वीर राजयोग	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
अतुल्य बलवान् राजयोग	५०२
अहंकारी राजयोग	५०२
कुबेर के समान धनी राजयोग	५०२
त्रिसमुद्रपारग राजयोग	५०३
सिंहासनाधिशायी राजयोग	५०३
अपने बाहुबल से पृथ्वी को जीतने वाला राजा	५०३
समस्त नृपों से वन्दित राजा	५०३
सुनफादि योग में भी राजयोग का विचार	५०३
अतुल कीर्तिमान् राजयोग	५०३
सार्वभौम राजयोग	५०३
जातक भङ्ग योग	५०३
चाण्डाल सदृशी योग	५०३
ब्राह्मण सदृशी योग	५०३
भिक्षाटन-धनरहित-नित्य लुब्ध योग	५०४
दास और भिक्षाटन योग	५०४
श्वास क्षयप्लीहगुल्मविद्रधि रोग योग	५०४
अङ्ग वैकल्य व तनु शोषण योग	५०४
सूखा रोग-अंधापन-विक्षिप्तता योग	५०४
उन्माद व स्मृति भ्रंश योग	५०५

विषय	पृष्ठांक
अन्य वसु (धन) स्त्री भोग करने वाला योग	५०५
कुलनाशक-अल्पायु-भिक्षुक योग	५०५
भिक्षाशनी-दु:खित देहभोग योग	५०६
अपस्मार (मृगी) रोग योग	५०६
'गदा' नामक योग अपस्मार रोग योग	५०६
चाण्डाल योग-कुलाचार-सत्कर्महीन योग	५०६
वाग्दोष-परिभ्रंश योग	५०६
कुलघ्न आदि योग	५०६
कुलध्वंस-विदार योग	५०७
गृह से बहिष्कृत-स्त्री-पुत्रहीन-मूर्ख योग	५०७
अति हीन वृत्ति योग	५०७
जन्मभूमि भ्रष्ट-भाग्यहीन योग	५०७
राज योग भङ्गार्थ योग	५०७
परप्रैष्य (दूत) योग	५०८
फटे-चिथड़े वस्त्र और बन्धन योग	५०८
मन्द-अक्षि रोगी योग	५०८
अन्धा योग	५०८
विकलाङ्गता-जाति भ्रष्टता योग	५०८
कुष्ठ रोगी योग	५०९
गुल्म और कण्ठ रोगी योग	५०९
उन्माद (बाबलापन) क्रोधी-कलह प्रिय योग	५०९
हृदयशूल-भाग्यहीनता योग	५०९
ज्ञान धनादि हीन-परान्नभुक्-रुग्णदेह-कलहप्रिय योग	५०९
संस्कारहानि योग	५१०
वाहन से भयप्रद योग	५१०
शारीरिक उष्णता और जल में पिता मृत्यु योग	५१०
पिता की जल में मृत्यु योग	५१०
द्विज (ब्राह्मणादि) प्रहर्ता-कर्ण रहित-शिशुघ्न योग	५१०
शिशुघ्न और गोमृग जाति हन्ता योग	५११
नित्य पक्षिहन्ता योग	५११
गलान्तमृत्यु और वामनयनहीन योग	५११
शिथिली भय-कृकलास भय योग	५११
कौल्यादि पातित्य-कूर्म भय-दंशभय-स्त्रियों के निद्रा से भय योग	५१२
स्त्री गमन योग	५१२
सम्भोग और सम्भोग स्थान योग	५१२
पशुसङ्ग या समान सम्भोग योग	५१३
स्त्रियों के स्तन आदि स्वरूप योग	५१३
ग्रह स्थिति योग	५१३
द्विज-देवतार्थ धन योग	५१३
विंशोत्तरी महादशा जन्मनक्षत्र से दशेश ज्ञान प्रकार	५१३
विंशोत्तरी दशा ज्ञानार्थ महा-दशान्तर्दशा चक्र	५१४
ग्रहदशा वर्ष और भुक्त भोग्य वर्ष ज्ञान प्रकार	५१५
विंशोत्तरी दशा क्रम जानने का प्रकार	५१५
पुन: अन्तर्दशा ज्ञान प्रकार	५१५
सूर्यान्तर्दशा फल	५१५
चन्द्रान्तर्दशाफल	५१५
भौमान्तर्दशा फल	५१५
राहवन्तर्दशा फल	५१५
गुर्वन्तर्दशा फल	५१६
शन्यन्तर्दशा फल	५१६
बुधान्तर्दशा फल	५१६
केत्वन्तर्दशा फल	५१६
शुक्रान्तर्दशा फल	५१६
योगिनी दशा के स्वामी कथन	५१६
जन्मनक्षत्र वश योगिनी दशा ज्ञान	५१६
योगिनी दशा के नाम	५१६
योगिनी दशा वर्ष	५१६
अन्तर्दशा लाने में विशेष	५१७
योगिनी दशा फल	५१७
पुन: मंगलादिदशा फल	५१८

विषय	पृष्ठांक
वर्ष दशा क्रम प्रकार	५१८
ग्रहों की नित्यानित्य दशाओं का प्रकार	५१९
नित्यदशाज्ञानार्थ अन्य प्रकार	५१९
पञ्चमहापुरुष-भूत विचार	५१९
पञ्चमहापुरुष लक्षण कथन	५१९
रूचक लक्षण	५१९
भद्र लक्षण	५१९
हंस लक्षण	५२०
मालव्य लक्षण	५२०
शश लक्षण	५२०
पञ्चमहाभूत का प्रयोजन	५२०
जातक प्रकृति	५२१
पंचभूत स्वभाव लक्षण	५२१
प्रयोजन	५२२
सत्त्वादिगुणफल	५२२
गुण के प्रकार	५२२
उत्तम-मध्यम-अधम के लक्षण	५२३
उदासीन के लक्षण	५२३
गुण प्रयोजन	५२३
मेलापन विचार	५२३

चतुर्थ परिच्छेद

काल (ज्योतिष) शास्त्र

ज्यौतिषशास्त्र का प्रधान विषय निश्चित रूप से काल है इसलिए उसको काल विधायक शास्त्र भी कहा जाता है। जैसाकि वेदाङ्ग ज्यौतिष में लगधमुनि ने 'कालज्ञानं प्रवक्ष्यामि लगधस्य महात्मना' इस प्रकार कहा भी है। अतएव ज्यौतिषशास्त्र के प्रसङ्ग में 'काल' अति महत्त्वपूर्ण है।

काल शब्द 'कल् संख्याने' सूत्रानुसार कल् धातु से निष्पन्न और गणना के अर्थ में व्यवहारार्ह माना गया है। काल के विना एक तुच्छतम कार्य का भी सम्पादन करना असम्भव है। इस तरह सर्वोपयोगी व सर्वसाधारण काल, जिसे नेत्र से देखा भी नहीं जा सकता और जिसका प्रत्यक्षीकरण मात्र कार्य से ही सम्भव होता है। वस्तुत: संसार के सभी कार्य काल की अपेक्षा रखता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इस संसार में क्रिया की अपेक्षा काल निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है। वह काल सर्वव्यापक व नित्य है, जिसमें ही अखिल ब्रह्माण्ड स्थित है। वह काल ही इस व्यापक ब्रह्माण्ड का सञ्चालक होने से उसका ईश्वर-परमेश्वर है, यह स्पष्ट हो जाता है। इस काल के प्रसङ्ग को भारतीय वैदिक साहित्य व दर्शन में अनेक स्वरूपों में प्रतिपादित व विवेचित किया गया है। उसमें उसके दो स्वरूप स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। एक सृष्टि सञ्चालक, पालक व संहारक के रूप में और दूसरा गणनात्मक या कलनात्मक रूप में। यहाँ उस काल के दूसरे स्वरूप के व्यावहारिक पक्ष की विशद चर्चा करना उद्देश्य है।

काल के प्रकार

यहाँ काल के दो प्रकार का उल्लेख हुआ है। एक वह, जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के चराचर का सृष्टि, पालन और संहार करने वाला काल या महाकाल है।

दूसरा वह जो गणना करने योग्य है। उस गणना योग्य काल के भी दो भाग है। एक स्थूल काल, जिसमें प्राण से प्रलयान्त (कल्पान्त) तक के कालखण्ड आते है, जिन्हें मूर्त्त काल कहा जाता है।

दूसरा सूक्ष्मकाल, जिसमें त्रुटि से प्राण तक व्यवहार अयोग्य काल आता है, जिसे अमूर्त्त काल कहा जाता है। इस प्रकार काल प्रमुख तीन स्वरूपों में हमारे समक्ष आता है— १. महाकाल, २. व्यावहारिक गणनायोग्य स्थूल काल (मूर्त्तकाल) और ३. व्यवहार अयोग्य सूक्ष्मकाल (अमूर्त्त काल)।

अश्विन्यादि नक्षत्रों के नव चरणों से संयुत व आकाश में चलने वाली व चक्र

में टिकी हुई मेषादिक बारह राशियाँ होती हैं और राशियों में भली-भाँति बँटी हुई क्षेत्र, ऋक्ष, राशि व भवन ये स्थानों के नाम होते हैं।

कालपुरुष शरीर के अङ्ग और राशियाँ

शीश में मेष, मुख में वृष, बाहुओं में मिथुन, हृदय में कर्क, कोखों में सिंह, कमर में कन्या, बस्ति देश में तुला, गुदा में वृश्चिक, ऊरूओं में धनु, जानुओं में मकर, जंघाओं में कुम्भ और पैरों में मीन रहता है। ये अङ्गगत राशियाँ कालपुरुष के शरीरगत अवयव कहे जाते हैं।

राशि स्वरूप ज्ञान

मीन राशि–दो मछलियों में एक के मुख पर दूसरे की पूँछ लगकर गोल बनी हुई है।

कुम्भ–कन्धे पर कलश लिए हुए पुरुष के सदृश है।

तुला–तराजू हथ में लिए हुए पुरुष के समान है।

धनु–धनुष हाथ में लिए हुए कमर के ऊपर मनुष्य नीचे जानुनी जङ्घा आदि घोड़े के समान है।

मकर–मृग के सदृश मुख वाला है।

मिथुन–नारी व पुरुष का युग्म, नारी के हाथ में वीणा और पुरुष के हाथ में गदा धारण किये हुए के समान है।

कन्या–नौका पर बैठी हुई हाथ में धान व अग्नि को लिए हुए है।

शेष (मेष, वृष, कर्क, सिंह व वृश्चिक) राशियों का स्वरूप जाति नाम के समान है। जैसे–मेष भेड़ा के समान, वृष बैल के समान, कर्क केकड़ा के समान, सिंह शेर के समान और वृश्चिक का स्वरूप बिच्छू के समान है।

मेष आदि राशियों का अधिवास

धातु व रत्नों की खान और धरातल में मेष का अधिवास है।

पर्वतों की चोटी सम भूभाग, खेत, गोकुल तथा वन में वृष का अधिवास है।

जुआ, रति और विहार करने की भूमि में मिथुन का अधिवास कहा गया है।

बावली, तालाब, पोखरा और पुलों का किनारा कर्क का वास रहता है।

घने पहाड़ों, गुफाओं और वनों में सिंह का वास रहता है।

हरी घास, रमणियों के रतिस्थान तथा कारीगरी की भूमि में कन्या का अधिवास कहा गया है।

समग्र अर्थसार, पुर, बाजार या दूकानों की भूमि में तुला का अधिवास है।

पत्थर, विष, कीट व बिलप्रदेश में वृश्चिक का वास कहा गया है।

घोड़े, रथ और हाथियों के रहने की भूमि में धनु का वास है।
नदी, जल तथा जंगलों में मकर का वास होता है।
जल, घट, भाण्डगृह में कुम्भ का अधिवास कहा गया है।
मछलियों के रहने की जगह (हदों) नदी, समुद्र और जलराशियों में मीन का अधिवास है।

मेष आदि राशियों की लघुता दीर्घता

मेष, वृष, कुम्भ ये ह्रस्व संज्ञक हैं। मकर, मिथुन, धनु, मीन और कर्क ये समसंज्ञक हैं। वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला ये दीर्घसंज्ञक हैं।

मेषादि राशियाँ पुरुष तथा नारीसंज्ञक भी होती हैं। अर्थात् मेष पुरुष, वृष नारी, मिथुन पुरुष, कर्क नारी, सिंह पुरुष, कन्या नारी, तुला पुरुष, वृश्चिक नारी, धनु पुरुष, मकर नारी, कुम्भ पुरुष, मीन नारी संज्ञक है।

मेष, वृष, मिथुन व कर्क ये चार और इनसे पाँचवीं राशि क्रम से पूर्वादि दिशाओं में रहती हैं। अर्थात् मेष पूर्व में रहता है। दक्षिण में कन्या, तुला पश्चिम में और कर्क उत्तर में रहता है तथा सिंह पूर्व में, कन्या दक्षिण में, तुला पश्चिम में, वृश्चिक उत्तर में बसता है। पूर्व में धनु, दक्षिण में मकर, पश्चिम में कुम्भ, उत्तर में मीन है।

मेषादि बारह राशियाँ क्रूर व सौम्य संज्ञक कही जाती हैं अर्थात् मेष क्रूर, वृष सौम्य, मिथुन क्रूर, कर्क सौम्य, सिंह क्रूर, कन्या सौम्य, तुला क्रूर, वृश्चिक सौम्य, धन क्रूर, मकर सौम्य, कुम्भ क्रूर और मीन सौम्य कहा जाता है।

मेषादि बारह राशियाँ चर, स्थिर व द्विस्वभावसंज्ञक भी कही जाती हैं। अर्थात् मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन द्विस्वभाव, कर्क चर, सिंह स्थिर, कन्या द्विस्वभाव, तुला चर, वृश्चिक स्थिर, धनु द्विस्वभाव, मकर चर, कुम्भ स्थिर और मीन द्विस्वभाव संज्ञक कहा गया है।

राशियों के पृष्ठोदयादि संज्ञा

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर ये राशियाँ रात्रि में बलवान् कही जाती हैं। इनमें मिथुन राशि को छोड़कर अन्य राशियाँ पृष्ठोदयसंज्ञक होती हैं। सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक व कुम्भ ये राशियाँ दिन में बली व श्रेष्ठ तथा मिथुन राशि के सहित शीर्षोदय कही जाती हैं। मीन राशि दिन और रात्रि में बलवान् व दो मछलियों के मुख पुच्छ मिलकर उभयोदयी होती है, जो पृष्ठभाग से उदय लेते हैं, वे पृष्ठोदय और जो शिरभाग से उदय लेते हैं, वे शीर्षोदयी कहलाते हैं।

राशियों की जलचरादि संज्ञा

मीन, वृश्चिक, कर्क और मकर ये जल संज्ञक कहे जाते हैं। कुम्भ, कन्या,

मिथुन और वृष ये जल का आश्रय रखते हैं, अर्थात् जलाश्रयी कहलाते हैं। मेष, धनु, तुला और सिंह ये निर्जल भूतल में विचरते हैं। ऐसा बहुत से सन्त लोग कहते हैं।

चतुष्पदादि संज्ञा

धनु का परार्द्ध, सिंह, वृष, मकर का पूर्वार्ध और मेष ये चतुष्पदसंज्ञक हैं तथा ये दशम भाव में बली होते हैं। कन्या, मिथुन, कुम्भ, तुला और धनु का पूर्वार्ध ये नर रूपधारी द्विपद कहे जाते हैं। यदि लग्न में हों, तो बलवान् होते हैं। मकर का परार्ध, मीन और कर्क ये जलचर कहे जाते हैं। यदि चौथे घर में हों, तो बलवान् होते हैं। वृश्चिक जलाश्रयी कहा जाता है। यदि सातवें घर में हो, तो बलवान् होती है।

राशियों के दिवारात्रि बल

दिन के समय केन्द्र में बैठा हुआ द्विपद बलवान् होता है। रात्रि के समय केन्द्र के चतुष्पद बलवान् होते हैं और समस्त कीटसंज्ञक यदि केन्द्र में हों, तो दोनों सन्धियों सुबह व शाम में बली होते हैं।

राशियों के धातु मूल जीव संज्ञा

विद्वानों ने मेषादि बारह राशियों की धातु, मूल व जीव संज्ञा कहा है। जैसे— मेष, कर्क, तुला व मकर की धातुसंज्ञक: वृष, सिंह, वृश्चिक व कुम्भ की मूल संज्ञा तथा मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशियों की जीव संज्ञा है एवं राशियों की सम व विषम संज्ञा भी कही गई है। वहाँ सोने से लेकर मृत्तिकापर्यन्त धातु कहलाती है। वृक्ष से लेकर तिनका पर्यन्त मल कहा जाता है। जो जीव-समुदाय दिखता है, वह जीव कहा जाता है।

मेषादि राशियों की द्विपदादि संज्ञा

मेष में द्विपदों की चिन्ता होती है। वृष में चौपायों की, मिथुन में गर्भ की, कर्क में रोजगार-व्यवसाय की, सिंह में जीवों की, कन्या में नारियों की, तुला में धन की, वृश्चिक में व्याधि की, धनु में धन की, मकर में शत्रु की, कुम्भ में स्थान की और मीन में दैवी चिन्ता करनी चाहिये।

राशियों के वर्ण

मीन, वृश्चिक और कर्क ये ब्राह्मण कहे जाते हैं। धनु, मेष और सिंह ये क्षत्रिय कहे जाते हैं। वृष, मकर और कन्या वैश्यवर्ण कहे जाते हैं और कुम्भ, मिथुन और तुला ये शूद्रवर्ण होते हैं।

राशियों का स्वामी

मेष का स्वामी मङ्गल, वृष का शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, तुला का शुक्र, वृश्चिक का मङ्गल, धनु का गुरु, मकर व कुम्भ का शनैश्चर और मीन का बृहस्पति अधिपति व अंशप है।

भाव विचार

ज्योतिषशास्त्र में कुण्डली के अन्तर्गत बारह राशियाँ और बारह ही भाव होते हैं। पृथ्वी अपनी धुरी पर भ्रमण करती रहती है। सूर्य समेत समस्त ग्रह पूरब की ओर जन्म-स्थान से विभिन्न प्रकार के कोण बनाते हैं और इस कोण से कौन-सा ग्रह किस भाव में है यह पता चलता है।

जातकशास्त्र में भाव का क्या प्रयोजन है? उनका प्रयोजन यह है कि प्रत्येक भाव शरीर के किसी अंग का, किसी सम्बन्ध का (पिता, माता, भाई इत्यादि) और जीवन के किसी भाव का द्योतक है।

किसी भी विशेष बात का निर्णय करने के लिए उस भाव के स्वामी या जो ग्रह उस भाव में बैठे हों या उसे देखते हों या उस भाव का कारक हो, इन सबका विचार करना पड़ता है।

ग्रह किस प्रकार दूसरे भावों पर दृष्टि डालता है, इसे आगे बताएगें परन्तु अभी हम यह बताएंगे कि भाव के स्वामी से हमारा क्या तात्पर्य है। यह हम पहले भी बता चुके हैं कि जब अलग-अलग राशियों का पूर्वीय क्षितिज में उदय होता है उस समय एक के बाद दूसरी राशि से एक के बाद दूसरे भावों का ज्ञान होता है।

जिस समय मेष राशि उदित हो तो मेष से चौथे भाव में कर्क राशि में होगी। अब कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है इसलिए चन्द्रमा को चौथे भाव का स्वामी कहते हैं। मान लीजिए,वृषभ लग्न से उस समय वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह चौथे भाव या चौथे भाव में स्थित सिंह राशि हुई और सूर्य क्योंकि सिंह राशि का स्वामी है इसलिए वह चौथे भाव का स्वामी हुआ।

सूर्य और चन्द्रमा एक-एक भाव के ही स्वामी होंगे; क्योंकि इन दोनों की एक-एक राशि ही है, परन्तु मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि इनमें से प्रत्येक ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी या अधिपति हैं। राहु और केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं होते, इसलिए वे किसी भी भाव के स्वामी नहीं होंगे।

भावों की संज्ञायें—(क) पहला, चौथा, सातवां और दसवां भाव केन्द्र कहलाता है। इनमें बैठे हुए ग्रह बलवान होते हैं।

(ख) दूसरा, पांचवां, आठवां और ग्यारहवां भाव पणफर कहलाता है। आठवें स्थान के अतिरिक्त यहां बैठे हुए ग्रह भी काफी बलवान होते हैं, परन्तु केन्द्र में बैठे हुए ग्रह के समान नहीं।

(ग) तीसरा, छठा, नवां और बारहवां भाव आपोक्लिम कहलाता है। नवम भाव के अलावा इन भावों में ग्रह कमजोर समझे जाते हैं, परन्तु छठे भाव में क्रूर ग्रह

अच्छे समझे जाते हैं। कौन-से ग्रह क्रूर हैं और कौन-से ग्रह शुभ यह आगे बताया जाएगा।

(घ) पांचवें और नवें भावों को त्रिकोण कहते है। त्रिकोण के स्वामी और त्रिकोण में बैठे हुए ग्रह शुभ और बलवान् होते हैं।

(ङ) तीसरा, छठा, दसवां और ग्यारहवां भाव उपचय कहलाता है। 'उपचय' का मतलब है बढ़ाना।

(च) छठे, आठवें और ग्यारहवें भावों को त्रिक कहते हैं, जो ग्रह इनके स्वामी हों या जो ग्रह इनके स्वामी के साथ बैठे या जो ग्रह इनमें बैठें, वे अशुभ होते हैं।

'त्रिक' का मतलब है—तीन खराब भाव।

संसार की प्रत्येक बातें—स्वास्थ्य, धन, बुद्धि, विद्या, प्रसन्नता, दुःख, धर्म, जायदाद, सम्बन्धी, दुकानदारी और व्यापार, वैवाहिक सुख, विवाह, सामाजिक स्थिति, आमदनी, विदेश यात्राएं, बीमारी, विरासत,शत्रु, भोग-विलास इत्यादि ये सब किसी न किसी भाव से ज्ञात होते हैं।

परन्तु प्रत्येक भाव से क्या-क्या बातें पता लगती हैं, यह विस्तार से बताना सम्भव नहीं है। इसलिए संक्षेप में ही किस भाव से क्या विचार होता है, यह बताते हैं। कुछ बातें एक से अधिक भावों से देखी जाती हैं,इसलिए इसके लिए वह सब भाव देखने पड़ेंगे।

पहला भाव—शरीर, शरीर की बनावट, शारीरिक शक्ति, शक्ति, सूरत, रंग, व्यक्तित्व, स्वभाव, झुकाव, स्वास्थ्य, प्रसन्नता और दुःख, आयु, बाल और सिर, यश, सामाजिक स्तर, जन्मस्थान, नाना, दादी इत्यादि।

दूसरा भाव—चेहरा, आंखें (विशेष रूप से दाहिनी आंख), नाक, मुंह, दांत और जीभ, बोलने, बात करने की निपुणता, कठोर या नर्म वाणी (सच या झूठ बोलना) और खाना, भोजन में रुचि, धन और धान्य, सोना, चाँदी और जवाहरात, कंजूसी, वस्तुओं का खरीदना और बेचना, कुटुम्ब, मृत्यु इत्यादि।

तीसरा भाव—गला, आवाज, कान, सुनने की शक्ति, कन्धा, बाजू, छाती का ऊपर का हिस्सा, भाई या बहन (विशेष रूप से अपने से छोटे), साथी, सम्बन्धी, पड़ोसी, नौकर, अपने से नीचे कार्य करने वाले और मददगार, हिम्मत, लड़ना, क्रोध, धर्म, शारीरिक और मानसिक शक्ति, होशियारी, क्षमता, खेल-कद, छोटी यात्राएं, इधर-उधर घूमना, छोटे-छोटे लेख, आयु, धर्म इत्यादि।

चौथा भाव—हृदय और उसके समानन्तर छाती का दहिना हिस्सा, माता,

पिता और माता की ओर के सम्बन्धि, मित्र, रहने का मकान, जमीन, बाग, खेती की भूमि, गीली जमीन और वहां का उत्पादन, पशु, पानी के नीचे का स्थान, तालाब और कुआं, आराम, सोना, प्रसन्नता, सम्मान, मीठी सुगन्ध, सवारी, दक्षिण भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार विद्या, धार्मिक स्वभाव, जीवन का अन्तिम समय, जीवन के अच्छे सिद्धान्त।

पांचवां भाव—पेट, बच्चे, बच्चा जनने की शक्ति, यकृत, बच्चे (लड़के और लड़कियां), बुद्धि, विद्या, याददाश्त, मन, ज्ञान, सलाह, पुस्तक लिखने की क्षमता, भगवान् में भक्ति, साधना और प्रार्थना, पिछले जन्म में किए गए अच्छे कार्य, आनन्द, वेश्याओं से सम्बन्ध, सट्टा, जुआ, घुड़दौड़ इत्यादि।

छठा भाव—नाभि के पास शरीर का हिस्सा, नीचे की अंतड़ियां, मामा और मौसी, बीमारी, चोट इत्यादि, मानसिक और शारीरिक रोग, चिन्ता, दुष्मनी, दुश्मन, लड़ना, मेहनत, खतरे, जेल, भाई/बहन से कलह, चोरी, नौकर, नौकरी, कर्जा, गन्दी और बुरी आदतें, क्रूर कर्म, विघ्न और बाधाएं इत्यादि।

सातवां भाव—विवाह, पति-पत्नी, दूसरों से सम्बन्ध, कामेन्द्रियों का सुख, वैवाहिक प्रसन्नता, पति-पत्नी का स्वरूप और उनकी आयु, साझेदारी और साझेदारी में किया गया कार्य,यात्रा, यात्रा में रुकावट, मुकदमें, शत्रु पर विजय,पेशाब का रास्ता, दुकानदारी इत्यादि।

आठवां भाव—जननेन्द्रियों का बाहरी भाग, छूत की बीमारी (गर्मी, सुज़ाक इत्यादि), मधुमेह, भगन्दर, बवासीर, आयु, मानसिक उदासीनता, पाप, दुःख, खतरे, बीमारियां, कृति, पति-पत्नी की परेशानियां, भाई के शत्रु, जमीन के नीचे गड़ा हुआ धन, मृत्यु. मृत्यु का स्थान और कारण, युद्ध, समुद्र पार की वस्तुएं, धन की हानि, राजदण्ड, डर, हार, पैतृक सम्पत्ति के अतिरिक्त दूसरा मकान, विरासत में मिला हुआ धन, पति की आर्थिक स्थिति इत्यादि।

नवां भाव—जांघ और कूल्हा, पिता (दक्षिण के ज्योतिषियों के अनुसार) पौत्र, भाई की पत्नी, पति के भाई और बहन, मठ, धर्म, अच्छे कार्य, दान, आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रवृत्ति, ज्ञानप्राप्ति के तरीके, अच्छे व्यक्तियों से सम्बन्ध, समुद्री यात्रा,समृद्धि, भाग्य स्थान कहते है 'भाग्य' में धन, प्रसन्नता, सुख सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं।

दसवां भाव—घुटना, पीठ, पिता, सास, गोद लिया पुत्र, उपार्जन करने की क्षमता, कर्म, अच्छे या बुरे कार्य,सफलता,खेती,विदेश में रहना, राजा, राज्य, सरकार,यश,जीवन-स्तर, अपने से बड़े लोग, सन्यास, नौकरी इत्यादि।

ग्यारहवां भाव—पिण्डली, बड़े भाई और बहन, मित्र, दामाद, माता की आयु, लाभ, आय, हानि, ससुर से लाभ, सांसारिक सुख की वस्तुएं, सवारी, शत्रु और उनके कार्य, कपड़े, पैतृक सम्पत्ति, कार्य कुशलता, इच्छाएं, ज्ञान और देवभक्ति इत्यादि।

बारहवां भाव—पांव (पंजे), काका, बुआ, मामी, जननेन्द्रियों के सुख, पत्नी का क्षय, दूसरी पत्नी, मानसिक उदासीनता, शरीर का व्यय, दुःख, जेल जाना, पांव का काटना, हानि, खर्चे, वस्तुओं का खरीदना, उदारता, मातृभूमि से दूर रहना, जीवन में नाम, यश वगैरह की हानि, बायां नेत्र, दांत इत्यादि।

ज्योतिष में जीवन में काम आने वाली समस्त वस्तुएं किसी न किसी भाव में या किसी न किसी ग्रहों से देखी जाती हैं।

विशेष—ग्रहों के बारे में हमारे कुछ पाठक शुरू में यह देखकर कि बहुत-सी वस्तुयें एक से अधिक भाव पर आधारित होती हैं, निष्कर्ष निकालने में कुछ कठिनाई महसूस करते हैं; परन्तु यह जानना चाहिए कि जीवन की प्रत्येक बात किसी न किसी प्रकार दूसरी बातों पर निर्भर करती है।

जैसे एक अच्छे हृदय का होना लम्बी आयु के लिए आवश्यक है, परन्तु उसके लिए पेट और अंतड़ियां ठीक से काम करें, अच्छा रक्तप्रवाह हो, मानसिक तनाव भी साधारण रहे आदि-आदि। इसीलिए यदि कुछ बातें एक से अधिक भाव से निकलें तो उसके लिए तारतम्य से निष्कर्ष निकालना चाहिए।

ग्रहों के आत्मादि विचार

सूर्य काल की आत्मा है। चन्द्रमा काल का चित्त (दिल) है। मङ्गल बल है। बुध वचन है। बृहस्पति सौख्य व विज्ञान का सार है। शुक्र कामदेव है और शनैश्चर दुःखरूप होता है।

ग्रहों के राजादि संज्ञा

सूर्य और चन्द्रमा राजा कहे जाते हैं। बृहस्पति तथा शुक्र मन्त्री कहे जाते हैं। बुध कुमार और मङ्गल नेता कहे जाते हैं। शनैश्चर दास कहलाता है।

ग्रहों का वर्ण ज्ञान

सूर्य श्याम तथा लाल वर्ण वाला होता है। चन्द्रमा सफेद अङ्ग वाला तथा जवान रहता है। बुध दूब के समान श्याम अङ्ग वाला होता है। मङ्गल लाल और गोरा होता है। शुक्र सफेद अङ्ग वाला, शनैश्चर काला, राहु नीला और केतु विचित्र वर्ण वाला कहा जाता है।

ग्रहों का शुभाशुभ ज्ञान

चन्द्रमा और सूर्य प्रकाशक कहे जाते हैं। मङ्गल आदि पाँच ग्रह तारा कहे

जाते हैं। राहु तथा केतु दोनों तमोरूपी कहे जाते हैं। चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये शुभग्रह कहे जाते हैं।

क्षीण चन्द्रमा, शनैश्चर, सूर्य, राहु, केतु और मङ्गल ये पापक्रह कहे जाते हैं। पाप ग्रहों से युक्त बुध पापी कहलाता है। उनके बीच में बृहस्पति और शुक्र अत्यन्त शुभदायक हैं। शनैश्चर तथा मङ्गल दोनों क्रूर ग्रह कहलाते हैं।

चन्द्र का बलाबल

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से दशमी तक चन्द्रमा मध्यम वीर्य वाला होता है। दशमी से कृष्णपक्ष की पञ्चमी पर्यन्त, यही चन्द्रमा शुभदायक है। पञ्चमी से लेकर अमावस पर्यन्त चन्द्रमा क्षीण बल वाला कहा जाता है। यदि वह शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा संयुक्त हो, तो शुभदायक हो जाता है।

ग्रहों के पृष्ठोदयादि संज्ञा

सूर्य, मङ्गल, राहु और शनैश्चर सदैव पीठ से उदय होते हैं। शुक्र, चन्द्रमा और बुध शीश से और बृहस्पति दोनों से उदय होते हैं।

ग्रहों के विहगादि स्वरूप

सूर्य तथा बुध दोनों पक्षीरूप हैं। चन्द्रमा सरीसृप रूपी होता है। बृहस्पति तथा शुक्र दोनों द्विपद कहे जाते हैं। शनैश्चर और मङ्गल दोनों चतुष्पदसंज्ञक होते हैं।

ग्रहों के बालादि अवस्था

मङ्गल बालक, बुध कुमार, बृहस्पति तीस वर्ष वाला, शुक्र सोलह वर्ष वाला, सूर्य पचास वर्ष वाला, चन्द्रमा सत्तर वर्ष वाला तथा शनैश्चर, राहु और केतु सौ वर्ष वाले होते हैं।

ग्रहों के धातु आदि संज्ञा

बृहस्पति, शुक्र, मङ्गल और बुध शाखाधिप कहे जाते हैं। आकाशचारी मङ्गल व सूर्य धातु रूप कहे जाते हैं। चन्द्रमा और शनैश्चर मूलप्रधान; शुक्र व बृहस्पति जीवरूप और बुध विमिश्ररूप माने जाते हैं।

ग्रहों के ताम्रादि वर्ण

सूर्य ताम्रवर्ण, चन्द्रमा श्वेतवर्ण, मङ्गल रक्तवर्ण, बुध हरित, बृहस्पति पीतवर्ण, शुक्र कर्बुरवर्ण और शनैश्चर कृष्ण वर्ण कहे जाते हैं।

ग्रहों के द्रव्य व अधिदेवता

ताम्र, मणि, काञ्चन, सीपी, रूपा, मोती और लोहा सूर्यादि ग्रहों के द्रव्य कहे जाते हैं। अर्थात् सूर्य का ताम्र, चन्द्रमा का मणि, मङ्गल का सुवर्ण, बुध का सीपी, बृहस्पति का रूपा, शुक्र का मोती और शनैश्चर का लोहा द्रव्य है।

एवं अग्नि, जल, स्वामिकार्त्तिकेय, विष्णु, इन्द्र, शची और ब्रह्मा सूर्यादि ग्रहों के अधिदेवता हैं।

ग्रहों के माणिक्यादि रत्न

सूर्य का माणिक्य, चन्द्रमा का अमल मोती, मङ्गल का मूँगा या मरकत, बुध का गारुत्मक, बृहस्पति का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनैश्चर का नीलम, राहु का गोमेद और केतु का वैडूर्य्य कहा जाता है।

ग्रहों के वस्त्र

सूर्य का मोटा कपड़ा, चन्द्रमा का नया, मङ्गल का सुन्दर, बुध का रेशमी, बृहस्पति का फटा, शुक्र का मजबूत और शनैश्चर का पुराना कपड़ा कहा गया है।

पूर्वादि दिशा स्वामी ज्ञान

पूर्व का सूर्य, आग्नेय का शुक्र, दक्षिण का मङ्गल, नैर्ऋत्य का राहु, पश्चिम का शनि, वायव्य का चन्द्रमा, उत्तर का बुध और ईशान का बृहस्पति स्वामी है।

शुक्र, मङ्गल, चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शनैश्चर ये दृगाणों से वसन्तादि ऋतुओं के अधिपति हैं, अर्थात् वसन्त का शुक्र, ग्रीष्म का सूर्य और मङ्गल, वर्षा का चन्द्रमा, शरत् का बुध, हेमन्त का बृहस्पति और शिशिर का अधिपति शनैश्चर कहा गया है।

ग्रहों के विप्र आदि संज्ञा

बृहस्पति और शुक्र ब्राह्मण कहे जाते हैं। सूर्य तथा मङ्गल क्षत्रिय हैं। चन्द्रमा वैश्य है। बुध शूद्रों का स्वामी है। शनैश्चर अन्त्यजों का अधिपति है। सूर्य, गुरु तथा चन्द्रमा सत्त्वगुण वाले कहे जाते हैं। शुक्र और बुध रजोगुणी तथा शनैश्चर और मङ्गल तमोगुणी हैं।

ग्रहों के पुरुषादि संज्ञा व तत्त्व

सूर्य, मङ्गल और बृहस्पति पुरुषसंज्ञक हैं। शुक्र और चन्द्रमा नारीसंज्ञक हैं। बुध तथा शनैश्चर प्रकृति पुरुष होते हुए भी नपुंसक कहे जाते हैं।

आकाश, पृथ्वी, तेज, पवन और जल के अधिपति क्रमशः बृहस्पति, बुध, मङ्गल, शनैश्चर व शुक्र हैं, अर्थात् आकाश के बृहस्पति पृथ्वी के बुध, तेज के मङ्गल, पवन के शनि और जल के अधिपति शुक्र हैं और ये आकाशादि पञ्चतत्त्व माने हैं।

ग्रहों के मज्जा आदि ज्ञान

मज्जा, स्नायु, वसा, अस्थि, शुक्र, रुधिर और त्वचा के स्वामी क्रम से मङ्गल, शनि, गुरु, सूर्य, शुक्र, चन्द्र और बुध कहे जाते हैं।

ग्रहों के लवणादि रस व अयनादि परिज्ञान

लवण, कटु, कषाय, स्वादु, तिक्त, अम्ल और मिश्र इन रसों के चन्द्रमा, सूर्य, शनि, गुरु, मङ्गल, शुक्र और बुध अधिपति हैं।

अयन, दिन, पक्ष, ऋतु, अब्द (वर्ष), मास और क्षण इनके सूर्य, मङ्गल, शुक्र, बुध शनि, गुरु और चन्द्र स्वामी हैं।

उच्चादि परिज्ञान

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला और कुम्भ ये सूर्यादि ग्रहों के उच्च स्थान हैं और ठीक इन स्थानों से सातवाँ स्थान उनके नीचस्थान होते हैं; अर्थात् तुला, वृश्चिक, कर्क, मीन, मकर, कन्या और मेष ये सूर्यादि ग्रहों के नीच स्थान हैं।

१०-३-२८-१५-५-२७-२० उन राशियों के इन अंशों में ग्रह परमोच्च व परमनीच में होते हैं। जैसे—मेष राशि में सूर्य उच्च का और मेष से ठीक सातवाँ तुला राशि में नीच का होता है तथा इन दोनों राशियों के १० अंश का सूर्य क्रम से परमोच्च परमनीच में होता है।

ग्रहों के मूलत्रिकोण राशियाँ

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुम्भ ये सूर्यादि ग्रहों के मूलत्रिकोण होते हैं।

शुक्र, शनि, सूर्य और गुरु राशि के बीस अंश आदि में मूल त्रिकोण उसके बाद अपने घर को जाते हैं।

वृष के आदि से तीन अंश चन्द्र का उच्च होता है और उसके बाद शेषांश उसका मूल त्रिकोण होता है। मेष के आदि से बारह अंश मङ्गल का मूलत्रिकोण होता है, शेषांश स्वराशि होता है।

कन्या का आधा बुध का उच्च होता है। दश अंश मूल त्रिकोण होता है। पाँच अंश अपने राशिफल को देता है।

कुम्भ राहु का मूलत्रिकोण, मिथुन उच्च तथा कन्या अपना घर कहा जाता है।

ग्रहों का फल परिमाण

अपने उच्च में बैठा हुआ ग्रह पूर्णफल देता है। अपनी राशि में स्थित आधा फल देता है। अपने मित्र के घर में चौथाई फल देता है। शत्रु के घर में थोड़ा फल देता है। नीच व अस्तङ्गत हुआ ग्रह कुछ फल नहीं देता है। अपने मूलत्रिकाण में बैठा हुआ ग्रह चौथाई फल निश्चय देता है।

ग्रहों का विफल स्थान

सूर्य समेत चन्द्र, बुध लग्न से चौथे में, गुरु पाँचवें घर में, मङ्गल दूसरे में, शुक्र छठे में और शनि सातवें हो, तो विफल होते हैं।

ग्रहों का बालादि अवस्था

विषम राशि में ग्रहों की क्रम से बालादि अवस्थाएँ होती हैं। सम राशियों में वे अवस्थाएँ उलटे क्रम से हो जाती हैं। बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत ये अवस्थाएँ छः अंशों से विषम-सम राशियों में क्रम से होती हैं। इसलिये सूर्यादि ग्रह उक्त अवस्थाओं के पाककाल में बालादि अवस्थाओं के अनुरूप (समान) फल देते हैं।

सूर्य स्वरूप

सूर्य प्रतापशाली, चौकोर देह वाला, काला तथा लाल अङ्ग वाला, शहद के रंग के पिङ्गल नयनों वाला, पित्त स्वभावयुक्त, थोड़े बालों वाला और सतोगुण प्रधान होता है।

चन्द्र स्वरूप

चन्द्र सञ्चारशाली, कोमल वाग्विलासी, विवेकी, शोभन दृष्टि वाला, बड़े सुन्दर तथा पुष्ट अङ्ग वाला, सदा बुद्धिमान्, छोटे गोल आकार वाला, कफ व वात प्रकृति वाला होता है।

भौम स्वरूप

मङ्गल क्रूरदृष्टि वाला, तरुणमूर्तिधारी, उदारशील, पित्तप्रकृति वाला, महाचपल, क्षीण कटि वाला, लाल एवं गोरे अङ्गों वाला, कामी तथा प्रतापी और तमोगुण में स होता है।

बुध स्वरूप

बुध दूर्वादल के समान शरीर वाला, साफ वाणी बोलने वाला, दुबले शरीर वाला, रजोगुण वालों का स्वामी, हँसने में चपल, हानि करने वाला, महाधनी, कफी, वादी, वैभव व प्रतापशाली और विद्वान् होता है।

गुरु स्वरूप

गुरु महोदर शरीर वाला, पीला, कफी, सर्वगुण युक्त, सकलशास्त्राधिकारी, पीली आँखों तथा बालों वाला, अत्यन्त बुद्धिमान, सतोगुणी, अल्पराजचिह्न वाला और शोभायुक्त है।

भृगु स्वरूप

शुक्र श्याम तथा घुँघराले केश वाला, श्यामतनुधारी, सौन्दर्यशाली एवं सुन्दर अङ्गों वाला, शोभन आँखों वाला, कामी, अतिवादी, कफी, रजोगुण की शोभा का निधान, सुख-बल और गुण की खान है।

शनि स्वरूप

शनि कर्कश रोमों तथा अङ्गों वाला, दुबला, काला, कफी, बादी, बड़े दाँतों वाला, सुन्दर पीले नयनों वाला, तमोगुणी और आलसी है।

ग्रह वध क्रम

सूर्य से शनि, शनि से मङ्गल, मङ्गल से गुरु, गुरु से चन्द्रमा, बुध से शुक्र, शुक्र से बुध और बुध से चन्द्र सदैव वध किया जाता है।

ग्रहों के मित्रादि ज्ञान

मङ्गल, चन्द्रमा और गुरु सूर्य के मित्र हैं। शुक्र तथा शनि शत्रु हैं।बुध सम है। सूर्य एवं बुध चन्द्र के मित्र हैं; गुरु, मङ्गल, शुक्र और शनि शत्रु हैं। सूर्य, चन्द्र एवं गुरु मङ्गल के मित्र हैं। बुध शत्रु है।

शुक्र और शनि सम हैं। सूर्य तथा शुक्र बुध के मित्र हैं। शनि, गुरु एवं मङ्गल सम हैं। चन्द्र वैरी है। सूर्य, मङ्गल और चन्द्र गुरु के मित्र हैं।

शुक्र और बुध शत्रु हैं और शनि सम (उदासीन) है। शनि तथा बुध शुक्र के मित्र हैं। चन्द्र तथा सूर्य शत्रु हैं।

गुरु और मङ्गल सम हैं। सूर्य, चन्द्र और मङ्गल शनि के शत्रु हैं। गुरु सम (उदासीन) हैं। शुक्र और बुध मित्र हैं।

तात्कालिक और नैसर्गिक मित्रता से अतिमित्र एवं अतिशत्रु पाँच प्रकार कहना चाहिये।

ग्रहों के स्थिरादि संज्ञा

सूर्य स्थिर, चन्द्र चर, मङ्गल उग्र, बुध मिश्र, गुरु मृदु, शुक्र लघु और शनि तीक्ष्णसंज्ञक हैं।

ग्रहों की दृष्टि

तीसरी एवं दसवीं राशि में समस्त ग्रहों की पाददृष्टि होती है। पाँचवें एवं नवें अर्धदृष्टि होती है। चौथे एवं आठवें पादोनदृष्टि कही जाती है और सातवें घर में सम्पूर्ण दृष्टि होती है।

पापदृष्टि बल के योग में शनि अतिबलशाली होता है। आधीदृष्टि में गुरु शुभदायक है। तीन चरण की दृष्टि से मङ्गल समर्थ होता है। सम्पूर्ण ग्रह सातवें घर में दृष्टिबल से सम्पन्न रहते हैं।

सूर्य एवं मङ्गल दोनों ऊर्ध्व दृष्टिवाले हैं। शुक्र एवं बुध कटाक्ष (नेत्रों की कोर से) दृष्टि रखते हैं। चन्द्र एवं गुरु दोनों सम दृष्टि वाले हैं। राहु एवं शनि की दृष्टि नीचे रहती है।

ग्रहों का कारक

आत्मा एवं पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और सम्पत्ति या शोभा को सूर्य से विचार करना चाहिए।

मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता और सम्पदा को चन्द्र से देखना चाहिए।

बल, रोग, गुण, भाई, भूमि, पुत्र और कुटुम्ब को मङ्गल से विचारना चाहिए। विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र और वाक्कर्म को बुध से विचारना योग्य है।

प्रज्ञा, धन, तनुपुष्टि, पुत्र और ज्ञान को गुरु से विचार किया जाता है। पत्नी, वाहन, आभूषण, कामकेलि, रोजगार और सौख्य को शुक्र से देखना योग्य है।

आयु, जीवन, मरणकारण, सम्पत्ति और विपत्ति का दाता शनि है। बाबा का राहु से और नाना का केतु से विचार करना चाहिये।

ग्रहों का स्थिरकारक

सूर्य तनु कारक, गुरु धनकारक, मङ्गल सहजकारक, सोम एवं बुध सुखकारक, गुरु पुत्रकारक, शनि व मङ्गल शत्रुकारक, शुक्र नारीकारक, शनि मृत्युकारक, सूर्य एवं गुरु धर्मकारक, गुरु, सूर्य, बुध एवं शनि राजकारक, गुरु लाभकारक और शनि व्ययकारक है। ये लग्न से स्थिरकारक होते हैं।

ग्रह अरिष्ट ज्ञान

शुक्र, बुध और बृहस्पति क्रम से सातवें, चौथे और पाँचवें स्थान में होकर प्रत्येक जातक में अरिष्टकारक होते हैं।

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है। चन्द्रमा २४ में, मङ्गल २८ में, बुध ३२ में, गुरु १६ में, शुक्र २५ में, शनि ३६ में, राहु ४२ में और केतु ४८ वर्ष में फल देता है।

जो ग्रह अपने घर एवं अपने उच्च में बैठा हो और जो ग्रह षड्वर्ग से शुद्ध हो, उसी के वर्ष में मनुष्यों को निश्चय ही सुख और भाग्योदय मिलता है।

ग्रहों से अरिष्ट नाश

बुध राहुदोष को विनाशता है। शनि दोनों के दोषों को हरता है। मङ्गल चारों के दोषों को दूर करता है। गुरु पाँचों के दोषों को विनाशता है। चन्द्र पूर्वोक्त छः ग्रहों के दोषों को हरता है। सूर्य सातों ग्रहों के दोषों को विनाशता है; परन्तु सूर्य उत्तरायण में विशेषतः सातों ग्रहों के दोषों को हरण करता है।

सूर्य कृत दोष

अग्निरोग, ज्वरवृद्धि, ज्वरदीपन, क्षय एवं अतीसार आदि रोगों से तथा राजा, देवता, ब्राह्मण, किंकरों द्वारा सूर्य सदा चित्त में दोष को करता है।

चन्द्र कृत दोष

पाण्डुदोष, जलदोष, कामला, पीनस आदि रोग एवं नारियों द्वारा उत्पन्न रोग कालिका, देवता और सुवासिनीगणों से चन्द्र मनुष्य को व्याकुल करता है।

मङ्गल कृत दोष

स्थूलता, बीजदोष, कफ, हथियार, अग्नि एवं गिलटियों से उपजे रोग, घाव

एवं दरिद्र से पैदा हुए रोग, वीरगण, शैवगण एवं भैरवादिगणों द्वारा मङ्गल भय उत्पन्न करता है।

बुध कृत दोष

गुदा, उदर, दृष्टि, वात, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी, आदि रोग तथा बुधादि विष्णु के प्रियदास प्राणियों से बुध अत्यन्त दुःख को करता है।

गुरु भृगु कृत दोष

आचार्य, देवता, गुरु और ब्राह्मणों द्वारा दिये गये शाप-दोषों से गुरु शोक और गुल्म रोग उत्पन्न करता है तथा नारियों के विकारों से उत्पन्न प्रमेहरोग एवं असुरादिकों व अपनी चाही अङ्गनाओं के दोषों से शुक्र भय उत्पन्न करता है।

शनि केतु कृत दोष

दारिद्र्यदोष, अपने कर्म, पिशाच, चोर और सन्धि रोगों से शनि क्लेश उत्पन्न करता है। खाज, मसूरिका, शत्रु, कृत्रिम कर्मरोग और आचारहीन छोटी जाति वालों द्वारा केतु कष्ट उत्पन्न करता है।

राहु कृत दोष

अपस्मार (मिरगी), मसूरिका, रज्जु, क्षुत् (छींक या क्षुधा), दृष्टि रोग, कीड़े, प्रेत, पिशाच, भूत, उद्बन्धन, अरुचि और कुष्ठ रोगों से राहु मनुष्यों को बड़ा भय करता है।

ग्रह भाव योग

जिससे समस्त जन्तुओं के शरीर, धन, भाई, माता, सन्तान, शत्रु, स्त्री इत्यादि पदार्थ के शुभाशुभ फल का ज्ञान करना सम्भव होता है। इसलिये अब आगे भाव और ग्रह से उत्पन्न फलों को विशेषरूप से वर्णन करते हैं।

लग्नस्थ सूर्य फल

जन्मकुण्डली में लग्न में सूर्य हो तो जातक थोड़े केशवाला, कार्य करने में आलसी, क्रोधी, उच्चाकृति, मानी, रुक्षदृष्टि, कठोर देह, शूर, क्षमाहीन, दया से रहित होता है। यदि लग्न में कर्क राशि हो तो फूली नेत्र वाला, मेष हो तो मन्द दृष्टि, सिंह लग्न हो तो रतौंधी वाला और यदि तुला लग्न हो तो दरिद्र और पुत्रहीन होता है।

द्वितीय भाव में स्थित सूर्य फल

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में सूर्य हो तो नौकर और पशुओं से युक्त, मुख का रोगी, ऐश्वर्य सुख से हीन, राजा या चोर से अपहृत धन वाला होता है।

तृतीय भाव में स्थित सूर्य फल

जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में रवि हो तो पराक्रमी, बली, भाईयों रहित, लोक में मा य, मनोहर और पण्डित तथा शत्रु को जीतने वाला होता है।

चतुर्थ भावस्थ सूर्य फल

यदि कुण्डली में चतुर्थभाव में सूर्य हो तो धन वाहन हीन, दुःखित हृदय, पैतृक घर, धन का नाश करने वाला और दृष्ट राजा का सेवा करने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मकुण्डली में जन्मलग्न से पञ्चम भाव में सूर्य हो तो सुख, पुत्र और मित्र से हीन, खेती करने वाला, पर्वतादि दुर्ग स्थान में रहने वाला, बुद्धिमान्, धनहीन और अल्पायु होता है।

षष्ठ भावस्थ सूर्य

जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में रवि हो तो अधिक कामी, प्रबल जठराग्नि वाला, बली, धनवान, राजा या न्यायधीश होता है।

सप्तम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में सप्तम भाव में रवि हो तो कान्तिहीन, लोक में अनादृत, रोगी, बन्धनभागी, कुमार्गगामी और स्त्री से शत्रुता करने वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में अष्टमभावगत सूर्य हो तो आँख का रोगी, धन और सुख से हीन, अल्पायु, अपने हित जनों के वियोग से दुखी रहता है।

नवम भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में नवमाव में रवि हो तो धनवान, पुत्रवान्, देव और ब्राह्मण का भक्त, पिता और स्त्री से शत्रुता करने वाला तथा दुःखी है।

दशम भाव में स्थित सूर्य फल

यदि पत्रिका में दशम भाव में रवि हो तो बुद्धि, बल, वाहन और पुत्र से युक्त, कार्य को सम्पन्न करने वाला, अजेय और उत्तम पुरुष होता है।

एकादश भावस्थ सूर्य फल

जन्म पत्रिका में एकादश भाव में रवि हो तो धन संग्रह करनेवाला, बली, लोगों का द्वेषी नौकरहीन, स्वयं प्रेष्य, वचन पालनेवाला, हितजनों से हीन, कार्यसाधक होता है।

द्वादश भाव में स्थित सूर्य फल

जन्मपत्री में द्वादश भावस्थ सूर्य हो तो क्षीणदेह, काना, पतित, वन्ध्या स्त्री का पति, पिता का द्वेषी, बलहीन और नीच होता है।

लग्नस्थ चन्द्र फल

जन्मपत्री में यदि लग्न कर्क, वृष या मेष हो, उसमें चन्द्रमा हो अथवा पूर्ण चन्द्रमा किसी लग्न में हो तो जातक उदारता, रूप, गुण, धन, और भोग से प्रधान होता है।

शेष लग्न में चन्द्रमा हो तो नीच, बहिरा, गूँगा और विकल होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से अशुभ फल प्रदान करने वाला होता है।

द्वितीय भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्म पत्री में द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो अनुपम सुख, मित्र और धन से युक्त होता है।

यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो थोड़े बोलने वाला और बहुत बड़े धन का स्वामी होता है।

तृतीय भाव में स्थित चन्द्र फल

कुण्डली में तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक भाइयों का पालन करने वाला, हर्ष से युक्त, शूर, विद्या, वस्त्र, अन्न का संग्रह करने में तत्पर होता है।

चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल

जन्मपत्री में चतुर्थभावगत चन्द्रमा हो तो बन्धु, अन्न, वस्त्र, घर, वाहन से युक्त, नदी या समुद्र में व्यापार करने वाला, अति सुखी होता है।

पंचम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मपत्री में पञ्चमभाव में चन्द्र हो तो भीरु, विद्या, अन्न, वस्त्र का संग्रह करने वाला, बहुत पुत्र और सुशील मित्र से युक्त, तेजस्वी और बुद्धिमान् होता है।

षष्ठ भावस्थ चन्द्र

जन्मपत्री में छठे भावगत चन्द्र हो तो जातक पेट के रोग से पीड़ित और क्षीण चन्द्रमा हो तो अल्पायु होता है।

सप्तम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मपत्री में सप्तम स्थान में पूर्ण चन्द्रमा हो तो सौम्य, धर्षणयोग्य (दमनीय), सुखी, सुरूप और कामी होता है। क्षीण चन्द्र हो तो दीन और रोगों से पीड़ित शरीर वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो बुद्धिमान, तेजस्वी रोग से कृश शरीर होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो अल्पायु होता है।

नवम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में नवम भाव में चन्द्र हो तो देवता और पितर का भक्त, सुख, बुद्धि और पुत्र से युक्त, स्त्रियों का मन हरने वाला प्रिय कार्यों में उद्योगी होता है।

दशम भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में दशम भाव में चन्द्रमा हो तो विषाद से युक्त, कार्यों में तत्पर होकर सम्पन्न करने वाला, धनी, पवित्र, बली, शूर और दानी होता है।

एकादश भावस्थ चन्द्र फल

जन्मकाल में एकादश भावगत चन्द्रमा हो तो धनी, अधिक पुत्रवाला, दीर्घायु, उत्तम मित्र और नौकर वाला, मनस्वी, तेजस्वी, शूर, कान्तिमान् होता है।

द्वादश भाव में स्थित चन्द्र फल

जन्मकाल में द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो द्वेषी, नीच, क्षुद्र, आँख का रोगी, आलसी, अशान्त, दूसरे से उत्पन्न और लोक में सदादु:खी होता है।

लग्नस्थ मंगल फल

जन्म पत्रिका में मङ्गल लग्न में हो तो जातक क्रूर, साहसी, मूढ़, अल्पायु, अभिमानी, शूर, क्षतदेह, सुन्दररूप वाला और चञ्चल होता है।

द्वितीय भाव में स्थित मंगल फल

जन्मपत्री में द्वितीय भाव में मङ्गल हो तो निर्धन, कदन्नभोजी, विकृतमुखवाला, नीच लोगों का सङ्ग करने वाला और विद्या से हीन होता है।

तृतीय भाव में स्थित मंगल फल

जन्मपत्री में तृतीय भावगत मङ्गल हो तो शूर, अजेय, भ्रातृहीन, हृष्ट, सभी गुणों का निधान और सुप्रसिद्ध होता है।

चतुर्थ भावस्थ मंगल फल

जन्मकाल में चतुर्भाव में भौम हो तो गृह, अन्न, वस्त्र और बन्धु से हीन, वाहनरहित, दु:खी, दूसरे के घर में रहने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में पञ्चम भावगत भौम हो तो सुख धन और पुत्र से हीन, चञ्चलबुद्धि, चुगुलखोर, दुष्ट, अशान्त और नीच होता है।

षष्ठ भावस्थ मंगल फल

जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में मङ्गल हो तो अतिकामी, दीप्तजठराग्नि, सुन्दर और दीर्घदेह वाला बलवान्, बन्धुओं में श्रेष्ठ अर्थात् मुखिया होता है।

सप्तम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में सप्तम भावगत भौम हो तो स्त्री का नाशक रोगी, कुमार्गगामी, दु:खी, पापी, सन्तार युत, निर्धन, निरस (पतला) शरीर वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में अष्टमभाव में मङ्गल हो तो रोगी, अल्पायु, कुरूप, निन्धकर्म करने वाला और शोक से दुखी रहता है।

नवम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में नवमभाव में मङ्गल हो तो कार्यों में अक्षम, द्वेष्य, हिंसक, धर्महीन, पापी, राजा से सम्मान पाने वाला होता है।

दशम भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकाल में दशम भाव में मङ्गल हो तो कार्य में दक्ष, शूर, अजेय, श्रेष्ठ पुरुष का सेवक, पुत्र सुख से युक्त और अधिक प्रतापी होता है।

एकादश भावस्थ मंगल फल

जन्मकुण्डली में एकादश भाव में मङ्गल हो तो गुणी, सुखी, शूर, धनवान, पुत्रवान् और शोकरहित होता है।

द्वादश भाव में स्थित मंगल फल

जन्मकुण्डली में द्वादश भावगत भौम हो तो आँख से रोगी, पतित, स्त्रीनाशक चुगलखोर, क्रूर, लोक में अनादृत और जेल भोगने वाला होता है।

लग्नस्थ बुध फल

जन्मकुण्डली में लग्न में बुध हो तो जातक सुन्दर देह युक्त, सुबुद्धि, देश, कला, ज्ञान, काव्य और गणित को जानने वाला, चतुर, मधुर वचन बोलने वाला और दीर्घायु होता है।

द्वितीय भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में द्वितीय भावगत बुध हो तो बुद्धि से धनोपार्जन करनेवाला, अन्न पान का भोक्ता, प्रियभाषी, सुनीति प्रिय होता है।

तृतीय भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में तृतीय भावगत बुध हो तो परिश्रमी, इष्ट मित्रों से हीन, कार्य में निपुण, सहोदर युक्त, मायावी और चञ्चल होता है।

चतुर्थ भावस्थ बुध फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थभाव गत बुध हो तो धन जन और वाहन, सुवस्त्र से युक्त, श्रेष्ठ बन्धु वाला और विद्वान् होता है।

पंचम भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में पञ्चम भाव में बुध हो तो मन्त्रशास्त्री, मारण मोहन आदि क्रिया में कुशल, अधिक पुत्र, विद्या, सुख, प्रभुत्व और प्रसन्नता से युक्त होता है।

षष्ठ भावस्थ बुध फल

जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में बुध हो तो वाद विवाद और युद्ध में विजयी, रोग से युक्त आलसी, कोपहीन, निष्ठुरभाषी और पीड़ित होता है।

सप्तम भाव में स्थित बुध फल

जन्मकुण्डली में सप्तम स्थान में बुध हो तो जातक की स्त्री बुद्धिमती, सुन्दरी, अकुलीना, कलहकारिणी धनवती होती है। स्वयं भी महान् पुरुष होता है।

अष्टम भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में अष्ठम स्थान में बुध हो तो विख्यात यश और बलवाला, दीर्घायु, कुलपोषक, राजा के तुल्य अथवा न्यायाधीश होता है।

नवम भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में नवम भाव में बुध हो तो अतिधनी, विद्या से सम्पन्न, सदाचारी, वक्ता, कार्य में कुशल और धर्मात्मा होता है।

दशम भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में दशमभाव में बुध हो तो श्रेष्ठबुद्धि, सत्कर्मी, कार्य को सफल करनेवाला धैर्यशाली, बली, विविध आभूषणों के सुख का भोगी होता है।

एकादश भावस्थ बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में एकादश स्थान में बुध हो तो धनी, आज्ञाकारी नौकर वाला, पण्डित, सुखी भोगी, दीर्घायु और प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

द्वादश भाव में स्थित बुध फल

यदि जन्मकुण्डली में द्वादशभाव में बुध हो तो वचन पालन करने वाला, आलसी, अपमानित, वक्ता, पण्डित, दीन और कठोर पुरुष होता है।

लग्नस्थ बृहस्पति फल

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में गुरु हो तो जातक सुन्दर देह वाला, दीर्घायु विचारकर कार्य करने वाला, पण्डित, धैर्यवान् और श्रेष्ठ होता है।

द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में गुरु हो तो धनी, भोजनार्थी, वक्ता, सुन्दर, सुरूप, सुवचन, सुन्दर वस्त्र वाला और त्यागी होता है।

तृतीय भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो लोक में अत्यधिक दुःखी, कृपण, सहोदरों में लघु, मन्दाग्नि, स्त्री से पराजित और पाप कर्म करने वाला होता है।

चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में गुरु हो तो परिजन, भवन, वस्त्रवाहन, सुख, सुमति, भोग, धन से युक्त, श्रेष्ठ, शत्रु को जीतने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में पञ्चमभाव में गुरु हो तो पुत्र और मित्रों से सम्पन्न, पण्डित, धीर, स्थिर धन से युक्त और सदा सुखी होता है।

षष्ठ भावस्थ बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में षष्ठ भावगत गुरु हो तो दुषित जठराग्नि और पुंस्त्ववाला, अपमानित, दुर्बल, आलसी, स्त्री द्वारा पराजित, शत्रुजेता और विख्यात होता है।

सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु हो तो सुन्दर भाग्यवान्, सुन्दर स्त्री का पति, पिता से गुण में श्रेष्ठ, वक्ता, कवि, गाँव में मुख्य और सुविख्यात पण्डित होता है।

अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में अष्टम भाव में गुरु हो तो अपमानित, दीर्घायु, नौकरी करनेवाला, दीन और मलिना स्त्री का पति होता है।

नवम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्मकुण्डली में नवम स्थान में गुरु हो तो देव पितर का भक्त, विद्वान्, सुन्दर, राजमन्त्री वा सेनापति और प्रधान होता है।

दशम भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्म पत्रिका में दशम भाव में यदि गुरु हो तो जातक कार्य को सम्पन्न करने वाला, माननीय, सब उपाय और कुशलता से युक्त, सुख, धन, जन, वाहन और सुन्दर यश से युक्त होता है।

एकादश भावस्थ बृहस्पति फल

जन्म पत्रिका में एकादश भाव में गुरु हो तो अत्यधिक लाभ, अधिक वाहन, नौकर से युक्त, साधु, थोड़ी विद्या और अल्प पुत्र वाला होता है।

द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति फल

जन्म पत्रिका में द्वादश भाव में गुरु हो तो आलसी, लोगों का द्वेषी, वाग्विहीन, अथवा भाग्यहीन तथा सेवा कार्य में निरत होता है।

लग्नस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में लग्न में शुक्र हो तो सर्वाङ्गसुन्दर, सुखी, दीर्घायु, डरपोक स्त्रियों का प्रिय होता है।

द्वितीय भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में शुक्र हो तो बहुत अन्न, पान, ऐश्वर्य, द्रव्य और उत्तम विलास तथा सुन्दर वचन बोलने वाला और अति धनी होता है।

तृतीय भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मपत्री में तृतीय स्थान में शुक्र हो तो सुख धन से युक्त, स्त्री से पराजित, कृपण, अल्प उत्साह वाला, सौभाग्यवान् और वस्त्रों से युत होता है।

चतुर्थ भावस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो बन्धु मित्र सुख वाहन अन्न वस्त्र गृह से युक्त सुन्दर उदार पुरुष होता है।

पंचम भाव में स्थित शुक्र फल

जन्म पत्रिका में पञ्चम भाव में शुक्र हो तो सुखी, पुत्रवान्, मित्रयुत, विलासी, अतिधनी, सब वस्तु से परिपूर्ण, राजमन्त्री या न्यायाधीश होता है।

षष्ठ भावस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में षष्ठ भाव में शुक्र हो तो जातक स्त्री का द्वेषी, अधिक शत्रुवाला, ऐश्वर्य से हीन, अत्यन्त विह्वल और अधिक दुष्ट होता है।

सप्तम भाव में स्थित शुक्र फल

सप्तम भाव में शुक्र हो तो अत्यन्त रूपवती स्त्री के सुख और विभव से युक्त, अजातशत्रु और सौभाग्य सम्पन्न होता है।

अष्टम भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मकुण्डली में अष्टम स्थान में शुक्र हो तो दीर्घायु, अतुलसुख से युत, धनाढ्य, राजा के तुल्य प्रतिक्षण संतोष प्राप्त करने वाला होता है।

नवम भाव में स्थित शुक्र फल

यदि कुण्डली में नवम भाव में शुक्र हो तो पुष्ट, विशाल शरीर, धनवान, उदार, स्त्री सुख, मित्रों से युक्त, देव, अतिथि और गुरु की सेवा में तल्लीन होता है।

दशम भाव में स्थित शुक्र फल

जन्मकुण्डली में दशम भाव में शुक्र हो तो उत्थान (पौरुष) और विवाद से सुख, रति, मान, धन और कीर्ति उपार्जित करने वाला तथा अत्यधिक बुद्धिमान और विख्यात पुरुष होता है।

एकादश भावस्थ शुक्र फल

जन्मकुण्डली में एकादश भाव में शुक्र हो तो जातक अनुकूल नौकर वाला, अधिक लाभ करने वाला तथा समस्त दुःखों से रहित व्यक्ति होता है।

द्वादश भाव में स्थित शुक्र फल

जन्म पत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र हो तो आलसी, सुखी, स्थूलदेह, नीच, शोधित (साफ) अन्न खाने वाला, शय्या के उपचार में चतुर, स्त्री से पराजित होता है।

लग्नस्थ शनि फल

जन्मकुण्डली में लग्न में स्वोच्च या स्वराशिस्थ शनि हो तो जातक राजा के तुल्य, देश या गाँव का अधिपति होता है, यदि अवशिष्ट राशियों में लग्नस्थ शनि लग्न में हो तो बाल्यावस्था में रोगाक्रान्त, दरिद्र, कार्यों के वश में दुषित तथा आलसी होता है।

द्वितीय भाव में स्थित शनि फल

द्वितीय भाव में शनि हो तो विकृत मुख वाला, धन का भोगी, जनहित, न्यायी, पश्चात् परदेश में जाकर धन वाहन आदि का भोग करने वाला होता है।

तृतीय भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में शनि हो तो संस्कार से युत शरीर वाला, नीच, आलसी परिवार वाला, शूर, दाता और विशाल बुद्धि वाला होता है।

चतुर्थ भावस्थ शनि फल

जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में शनि हो तो दुःखी हृदय, बन्धु, वाहन, धन, बुद्धि और सुख से हीन, बाल्यावस्था में रोगी, बड़े बड़े नख और रोम धारण करने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में पञ्चम भाव में शनि हो तो सुख पुत्र मित्र बुद्धि हृदय से हीन, पागल और गरीब होता है।

षष्ठ भावस्थ शनि फल

जन्मपत्री में षष्ठ भाव में शनि हो तो कामी, सुन्दर, शूर, अधिक खानेवाला, कुटिलस्वभाव, बहुत शत्रुओं को जीतने वाला होता है।

सप्तम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में सप्तम भाव में शनि हो तो सदा रोगी, स्त्रीनाशक, धनहीन, खराब वेश–भूषा वाला, पापी और नीच काम को करने वाला होता है।

अष्टम भाव में स्थित शनि फल

जन्म पत्री में अष्टम भाव में शनि हो तो कुष्ठ या भगन्दर रोग से दुःखी, थोड़ी आयु वाला, किसी भी कार्य को नहीं करनेवाला होता है।

नवम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में नवम भाव में शनि हो तो धर्महीन, थोड़े धन वाला, सोदर और पुत्र से हीन, सुख रहित और दूसरों को दुःख देनेवाला होता है।

दशम भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में दशम भाव में शनि हो तो धनी, पण्डित, शूर, राजमन्त्री, या न्यायाधीश, समुदाय तथा नगर और ग्राम का प्रधान होता है।

एकादश भावस्थ शनि फल

जन्मकुण्डली में एकादाशभाव में शनि हो तो जातक दीर्घायु, स्थिर धनवाला, शिल्पज्ञ, नीरोग, तथा धन मनुष्य सम्पत्ति से युत होता है।

द्वादश भाव में स्थित शनि फल

जन्मकुण्डली में द्वादाश भाव में शनि हो तो अशान्त चित्त, पतित, बकवादी, कुटिल दृष्टि, निर्दय, निर्लज्ज, बहुत खर्चीला और पीड़ित होता है।

भावों का शुभाशुभत्व विचार

लग्नादि भावों में शुभग्रह हो तो उस भाव की वृद्धि करते हैं तथा पाप ग्रह हो तो उस भाव के फल का नाश करते हैं।

६,८,१२ भावों में शुभ–अशुभ फल विपरीत होते हैं।

अर्थात् त्रिक में स्थित शुभग्रह अशुभ फल और पाप ग्रह शुभ फल करता है।

शुभग्रह से दृष्ट योग बलवान् होता है तथा उच्चस्थ ग्रहों से दृष्टयोग का फल विपरीत होता है।

केन्द्रस्थ दो ग्रह योग फल

अब केन्द्र अर्थात् १-४-७-१० भावों में स्थित दो-दो ग्रहों के योग से जो फल होते हैं, उन फलों को अब आगे सविस्तारपूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं—

केन्द्र में स्थित सूर्य-चन्द्र योग फल

यदि जन्म समय लग्न में रवि चन्द्र हो तो जातक माता और पिता के दुख से पीड़ित, मान पुत्र और धन से हीन तथा दुःखी होता है।

यदि रवि चन्द्रमा दोनों चतुर्थ भाव में हो तो भाई पुत्र और सुख से रहित, दरिद्र, और महामूर्ख स्वभाव वाला होता है।

रवि और चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो मित्र पुत्र और स्त्री से पीड़ित और स्त्री द्वारा अपमानित दीन होता है।

रवि और चन्द्रमा दशम भाव में हो तो सुन्दर देह, सेनापति, राजोगुण, युक्त, निर्दय, कुटिल स्वभाव और शत्रुओं को जितने वाला होता है।

केन्द्रस्थ सूर्य भौम योग फल

रवि और मङ्गल लग्न में हो तो पित्तप्रकृति, रण में विजय प्राप्त करने वाला, क्रोधी, भग्न शरीर वाला, क्रूर, धूर्त और कठोर हृदय होता है।

रवि मङ्गल चतुर्थ भाव में हो तो बन्धुजन, धन और सुख से हीन, क्षुब्ध, सबसे द्वेष करने वाला होता है।

रवि सहित मङ्गल सप्तम स्थान में हो तो स्त्री के वियोग से दुखी, सर्वदा स्त्री के हेतु से अपमानित और परदेश में निवास करने वाला होता है।

सूर्य मङ्गल दशमभाव में हो तो कार्य में विफल, उद्विग्न, प्रसिद्ध राजा का सेवक और सदा अशान्त चित्त होता है।

केन्द्रस्थ सूर्य बुध योग फल

जन्मकाल में सूर्य और बुध दोनों लग्न में हो तो जातक विज्ञ, बहुत बोलने वाला, कठोर देही शूर प्रिय, बुद्धिमान् और दीर्घायु होता है।

सूर्य, बुध चतुर्थ स्थान में हो तो राजा के तुल्य, ख्यात, वचन पालने वाला, महाधनी, स्थूल देह, और टेढ़ी नाकवाला होता है।

सप्तम भाव में दोनों हो तो हिंसा और वचन कर्त्ता मृत्युकाल में सारगर्भिकत वाणी वाला तथा धन का लोभी नहीं होता है, और स्त्रीहीन और चोर होता है।

दोनों अर्थात् सूर्य, बुध यदि दशम (१०) भाव में हो तो समस्त संसार में विख्यात, घोड़े हाथी रखने वाला राजा होता है।

यदि ये दोनों अर्थात् सूर्य, बुध नीच स्थान में नहीं हो तभी यह फल समझना उचित होगा।

केन्द्रस्थ सूर्य गुरु योग फल

सूर्य और बृहस्पति दोनों लग्न में हो तो जातक गुणी, राजमन्त्री, सेनापति, सज्जन, विद्वान्, धनी, भोगी और विख्यात होता है।

सूर्य, गुरु चतुर्थ भाव में हो तो वेद, नीतिशास्त्र काव्य में निपुण, भव्य, परिजनों से युक्त, प्रियवक्ता, सदाचारी होता है।

दोनों सप्तम भाव में हो तो कामी, स्त्री का वश, पिता का द्वेषी, सुवर्णरत्नादियुक्त, सुन्दर शरीराला होता है। दशम भाव में हो तो यश, सुख, मान, ऐश्वर्य से युक्त, नीचकुलोत्पन्न भी राजा होता है।

सूर्य शुक्र योग फल

जन्मकाल में रवि शुक्र दोनों यदि लग्न में हो तो जातक कलहप्रिय, विनयहीन, दुराचारी, दुखी नीच, धन और स्त्री से रहित होता है।

यदि दोनों (रवि, शुक्र) चतुर्थ भाव में हो तो दूसरों की नौकरी करने वाला, शोक से युक्त, लोगों का द्वेषी और दरिद्र होता है।

यदि दोनों अर्थात् रवि, शुक्र सप्तम स्थान में हों तो स्त्री से पराजित, धनहीन, लम्बा देह, धन और पर्वत में रहने वाला होता है।

यदि दोनों रवि, शुक्र दशम स्थान में हो तो लोक व्यवहार का ज्ञाता, राजमन्त्री, शास्त्र और कला में निपुण, धन वाहन और सुख से युक्त होता है।

सूर्य शनि योग फल

जन्मकाल में लग्न में सूर्य और शनि दोनों हो तो जातक निन्द्यमाता का पुत्र, स्वयं दुराचारी, मन्दबुद्धि और पापी होता है।

यदि दोनों अर्थात् रवि, शनि चतुर्थ भाव में हो तो जातक नीच, दरिद्र और बन्धुओं से अपमानित होता है।

यदि सप्तम भाव में हो तो जातक आलसी, भाग्यहीन, स्त्री और धन से रहित, शिकार खेलने वाला एवं महामूर्ख होता है।

यदि दशम भाव में दोनों अर्थात् सूर्य, शनि हो तो विदेश में नौकरी करने वाला, कदाचित् किसी राजादि से धन प्राप्त भी हो तो चोरों द्वारा हरण कर लिया जाता है तथा अच्छे घोड़ों का धनी होता है।

चन्द्र भौम योग फल

यदि जन्मकाल में लग्नस्थ चन्द्र मंगल हो तो जातक खून, अग्नि, पित्त दोष या रोग से पीड़ित एवं उग्र स्वभाव वाला होता है।

यदि चन्द्र, मंगल का योग चतुर्थभाव में हो तो जातक कलह युक्त, दरिद्र, सुख पुत्र धन से रहित अशान्त होता है।

यदि सप्तम में चन्द्र, मंगल हो तो परधन का लोभी, बहुत बोलने वाला, असत्यवादी और ईर्ष्यालु होता है।

यदि दशमभाव में चन्द्र, मंगल हो तो जातक घोड़ा, हाथी, सेना सम्पत्ति से युक्त पराक्रमी होता है।

चन्द्र बुध योग फल

जन्मकाल में यदि चन्द्रमा और बुध दोनों लग्न में हो तो जातक सुखी, बुद्धिमान, बल, और भाग्य से युक्त, सुन्दर, वक्ता और अन्य कार्य में कुशल होता है।

दोनों अर्थात् चन्द्र, बुध यदि चतुर्थ भाव में हो तो बन्धु, मित्र, पुत्र, सुख, प्रताप, धन, सवारी और रत्न से युक्त सुन्दर स्वरूप वाला होता है।

सप्तम भाव में चन्द्र, बुध हो तो प्रतापी, राजा या राजा का प्रिय, विख्यात, सुन्दर कवि होता है।

दशम भाव में चन्द्र, बुध हो तो मानी, धनी, ख्यात, राजा का सचिव, या राजा का प्रिय, अवस्था के अन्त में दुःखी तथा बन्धुओं से रहित होता है।

चन्द्र गुरु योग फल

जन्मकाल में चन्द्रमा यदि गुरु के साथ लग्न में हो तो जातक विशालवक्षःस्थल वाला, बहुत पुत्र, मित्र, स्त्री, बन्धु से युक्त, सुन्दर देह वाला और राजा होता है।

यदि चन्द्र गुरु चतुर्थ भाव में हो तो बहुत शास्त्रों का ज्ञाता, राजमन्त्री या राजा के तुल्य, सुख प्राप्त करने वाला, बन्धु बान्धवों से युत और धनवान होता है।

दोनों अर्थात् चन्द्र गुरु सप्तम भाव में हों तो पण्डित, राजा, कला में कुशल, व्यापारी, या राजा का प्रिय, धनवान होता है।

यदि चन्द्र, गुरु दशम स्थान में हों तो विद्वान्, दाता, धनी, मानी, यशस्वी, सरल स्वभाव, दीर्घ बाहु और सर्वत्र पूज्य होता है।

चन्द्र शुक्र योग फल

यदि जन्मकाल में यदि चन्द्रमा शुक्र दोनों लग्न में हो तो वेश्या में रत सुन्दररूप, गुरुजनों का प्रिय, वस्त्र विभूषण से युक्त होता है।

दोनों चतुर्थ स्थान में हो तो स्त्री सुख से युत, नौका द्वारा धन प्राप्ति करने वाला, लोगों का प्रिय और भोगी होता है।

दोनों यदि सप्तम भाव में हो तो बहुत स्त्री, धन और पुत्र वाला, मेधावी, राजा के तुल्य क्रियावान् होता है।

दशम भाव में दोनों हो तो मान और धन से युक्त, राजा का मन्त्री, सुविख्यात, क्षमावान् और अधिक मनुष्यों से युत होता है।

चन्द्र शनि योग फल

जन्मकाल में लग्न में चन्द्रमा और शनि का योग हो तो जातक नौकरी करने वाला, खल, क्रूर, लोभी, नीच, आलसी और पापी होता है।

चतुर्थ भाव में हो तो जलोत्पन्न मुक्ता आदि तथा नौका या खनिज पदार्थों के व्यापार से अर्थलाभ करने वाला श्रेष्ठ और लोक में मान्य होता।

सप्तम स्थान में दोनों अर्थात् शनि, चन्द्र हो तो नगर या गाँव का मालिक, राजा का प्रिय, और स्त्रीहीन होता है।

दशम भाव में दोनों अर्थात् शनि, चन्द्र हो तो घोड़े आदि सेना द्वारा शत्रु को जीतने वाला, सुविख्यात भ्रष्टा का पुत्र, तथा राजा होता है।

चन्द्रमा शुभग्रह से युत शुभ फल देने वाला तथा शनि मंगल से युत होने पर अशुभ फल दाता और सेनानायक बनाने वाला होता है।

भौम बुध योग फल

जन्मकाल में मङ्गल और बुध दोनों लग्न में हो तो जातक हिंसक, अग्नि कार्य में निपुण, धातु क्रिया में कुशल, दूत और कारागार का स्वामी होता है।

दोनों चतुर्थ स्थान में हो तो बन्धुहीन, किन्तु मित्र, धन, अन्न, भोग, वाहनों से युक्त, अपने जन में अनादृत होता है।

दोनों सप्तम भाव में हो तो जातक की प्रथम स्त्री की मृत्यु हो जाती है, वह देश विदेश में भ्रमण कर नीचों के अधीन कार्य करने वाला और विवादी होता है।

दशम भाव में हो तो सेनापति, शूर, धूर्त, क्रूर, धनी और राजा का प्रिय और धैर्यवान् होता है।

भौम गुरु योग फल

जन्मकाल में मङ्गल गुरु के साथ लग्न में हो तो जातक गुणी, प्रधान सचिव, धर्मकृत्य में कीर्ति पाने वाला उत्साही पुरुष होता है।

यदि दोनों अर्थात् मंगल, गुरु चतुर्थ भाव में हो तो बन्धु मित्र से युत स्थिर चित्त धन और सुख से युक्त राजा का सेवक देवता और गुरुओं का भक्त होता है।

सप्तम भाव में मंगल, गुरु हो तो पर्वत वन जल आदि दुर्ग स्थान में घूमने वाला, अच्छे भाई–बन्धुओं से युत, शूर तथा स्त्री हीन होता है।

दशम स्थान में दोनों अर्थात् मंगल, गुरु हो तो कीर्तिमान् विज्ञजनों में युक्त, कार्य में कुशल और चतुर होता है।

भौम शुक्र योग फल

जन्मकाल में लग्न में मङ्गल और शुक्र दोनों हो तो वेश्यागामी, निन्द्यकला को करने वाला, स्त्री के कारण धन नष्ट करनेवाला तथा अल्पायु होता है।

दोनों अर्थात् मंगल, शुक्र यदि चतुर्थ भाव में हो तो बन्धु पुत्र से हीन, मानसिक पीड़ा और अनेक दुःख से दुःखी होता है।

दोनों अर्थात् मंगल, शुक्र सप्तम भाव में हो तो स्त्री में आसक्त, उससे कष्ट पाने वाला और आचारहीन होता है।

दशम भाव में मंगल, गुरु हो तो अस्त्रविद्या में कुशल, बुद्धिमान्, विद्या धन वस्त्रादि से युक्त, विख्यात राजा का मंत्री होता है।

भौम शनि योग फल

जन्मकाल में मङ्गल और शनि लग्न में हो तो जातक संग्राम में विजयी, माता का द्वेषी, अल्पायु और भाग्यहीन होता है।

दोनों अर्थात् मंगल, शनि चतुर्थ भाव में हो तो अन्न–पान सुख से हीन, बन्धु और मित्रों से भी रहित होता है।

सप्तम भाव में मंगल, शनि हो तो स्त्री पुत्र विहीन, गरीब, रोगी, व्यसनी, लोक में अनादृत और कृपण होता है।

दशम भाव में मंगल, शनि हो तो राजमन्त्री होता है, परञ्च अपराधी होकर राजा से दण्डित होता है तथा असत्य बोलने वाला भी होता है।

बुध गुरु योग फल

जन्मकाल में बुध और गुरु दोनों यदि लग्न में हो तो जातक सुरूप, सुशील, विद्वान्, राजमान्य, विषय (ग्राम समूह) का अधिप वाहनादि सुख का भोग कर्त्ता होता है।

चतुर्थ भाव में दोनों अर्थात् बुध, गुरु हो तो बन्धु मित्र स्त्री धन सौभाग्य सुख से युक्त, कार्य कुशल राजमन्त्री होता है।

सप्तम भाव में बुध, गुरु हो तो सुन्दरी पत्नी वाला, शत्रुहीन, परिजनों का प्रिय धन–बल से युक्त, पिता से अधिक यशस्वी होता है।

दशम भाव में बुध, गुरु हो तो राजा अथवा राजमन्त्री, मानी, धनी, विख्यात, वेदार्थ का ज्ञाता और नम्र होता है।

बुध शुक्र योग फल

जन्मकाल में बुध और शुक्र दोनों लग्न में हो तो सुरूप, पण्डित, सौभाग्यवान्, राजमान्य, देव और ब्राह्मण का भक्त होता है।

चतुर्थ भाव में बुध, शुक्र हो तो पुत्र मित्र और वन्धु से युत, भाग्यवान्, राजा या राजमन्त्री तथा कल्याण भागी होता है।

सप्तम भाव में बुध, शुक्र हो तो बहुत स्त्री, भोग, धन, प्रभुत्व से युक्त राजप्रिय और सुखी होता है।

दशम भाव में हो तो नीतिज्ञ, साधु राजा होता है, वह नीचजन को आश्रय नहीं देता है, तथा धन युक्त और कार्य करने में समर्थ्यवान् होता है।

बुध शनि योग फल

बुध शनि दोनों यदि लग्न में हो तो जातक मलिन देह, पापी, विद्या, धन वाहन से हीन, अल्पायु और भाग्यहीन होता है।

चतुर्थ भाव में हो तो अपने जन में अपमानित, अन्न पान बन्धु मित्र से हीन, मूढ़ और पापी होता है।

सप्तम में हो तो राजा का भृत्य, मूर्ख, परोपकारी, खल, मलिन, मिथ्याभाषी होता है।

दशम में हो तो शत्रु को जीतने वाला, परिजन मित्र वाहन धन से सम्पन्न, विप्र, गुरु और देवताओं का पूजक होता है।

गुरु शुक्र योग फल

गुरु और शुक्र दोनों लग्न में हो तो जातक ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर भी गुरु के उपदेश से न्यायी राजा अथवा राजमन्त्री होता है।

चतुर्थ भाव में हो तो शत्रुओं को जीतने वाला, परिजन मित्र वाहन धन से युक्त, विप्र गुरु और देव का भक्त होता है।

सप्तम में दोनों हो तो सुशीलास्त्री धन रत्न से युक्त, कन्या सन्तान वाला, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहन का भोगी होता है।

दशम में दोनों हो तो मान, प्रभुत्व, धन, नौकरों से युक्त और सुशील राजा होता है।

गुरु शनि योग फल

जन्मकाल में गुरु और शनि दोनों लग्न में हो तो जातक नशे में चूर, आलसी, निष्ठुर, विद्वान्, धनी, खल और अल्पसुखी होता है।

चतुर्थ भाव में गुरु, शनि हो तो राजमन्त्री, नीरोग, विजयी, बन्धु मित्र से युक्त, लोक प्रिय और सुखी होता है।

सातवें भाव में गुरु, शनि हो तो स्त्री के द्वेष से धन नष्टकर्त्ता, शूर, व्यसनी, शठ, कुरूप पिता से धन छीनने वाला मूर्ख होता है।

दशम भाव में गुरु, शनि हो तो राजप्रिय या राजा, थोड़ी सन्तान वाला, स्थिर, गोपालक और अनेक वाहनों को रखने वाला होता है।

शुक्र शनि योग फल

जन्मकाल में शुक्र शनि दोनों जन्म लग्न में हो तो वह मनुष्य स्त्री सुख में लीन, सुन्दर रूप, सुख धन भोग से युक्त, बहुत नौकरों से युक्त होकर अन्त में शोकसन्तप्त होता है।

चतुर्थ भाव में शुक्र, शनि हो तो मित्र से धन और बन्धु से आदर पाता है तथा राजा का विश्वास पात्र होता है।

सप्तम भाव शुक्र, शनि में हो तो स्त्री धन रत्न सुख, समस्त सम्पत्ति और विषयों का भागी होता है।

दशम भाव में हो शुक्र, शनि तो जातक समस्त द्वन्द (सुख, दुःख, राग द्वेष इत्यादि) से रहित विशेष कार्य करने वाला विख्यात राजमन्त्री होता है।

इस प्रकार यहाँ केन्द्रस्थ दो–दो ग्रहों का फल बतलाया गया है। इसे आधार बनाकर तीन, चार, पाँच, छः ग्रहों का केन्द्रस्थ ग्रहयोग फल अपनी बुद्धि से विचार करना चाहिए।

दो तीन आदि ग्रह योग

प्राचीनाचार्यों ने द्विग्रह योग के फल जो कहे हैं, उनको यहाँ अहङ्कार मुक्तभाव से विशेष रूप आगे कहने जा रहे हैं—

सूर्य चन्द्रमा योग फल

जन्माङ्ग में रवि और चन्द्रमा एक स्थान में हों तो जातक स्त्री का वश विनय रहित कूट (सुवर्णादि धातुओं को मिश्रणपरिवर्तन क्रिया) को जानने वाला, अधिक धनवान, मदिरादि बेचने में चतुर होता है।

सूर्य भौम योग फल

कुण्डली में सूर्य मङ्गल एक स्थान में हों तो तेजस्वी, साहसी, मूर्ख, बलवान, मिथ्या– भाषी, पापी, हिंसक और उग्रस्वभाव होता है।

सूर्य बुध योग फल

कुण्डली में रवि बुध का योग हो तो जातक सेवा कार्य में निपुण, चञ्चल धन

वाला, प्रियवक्ता, यशरूप धन वाला, श्रेष्ठ, राजा और सज्जनों का प्रिय, बल, रूप, धन और विद्या से युत होता है।

सूर्य गुरु योग फल

यदि कुण्डली में रवि गुरु का योग हो तो जातक धर्मात्मा, राजमन्त्री, बुद्धिमान् मित्रों के आश्रय से धनलाभ करने वाला, और वेद शास्त्रों का अध्यापक होता है।

सूर्य शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में रवि शुक्र का योग हो तो शस्त्र प्रहार विद्या और शक्ति से युक्त वृद्धावस्था में क्षीण दृष्टि, नृत्य नाट्यादि कला को जानने वाला, स्त्री के आश्रय से अधिक धन पाने वाला होता है।

सूर्य शनि योग फल

यदि कुण्डली में रवि, शनि का योग हो तो जातक धातु क्रिया में कुशल, धर्मात्मा, स्वकर्मनिष्ठ, स्त्री एवं पुत्रादि से रहित, अपने कुल के गुणों से प्रसिद्ध और हीनशील होता है।

चन्द्र भौम योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र मङ्गल का योग हो तो वह व्यक्ति शूर, रण में विजयी, योद्धा, रक्तविकार से पीड़ित, मिट्टी, चर्म और धातुओं के वस्तु बनाने वाला, कूट (धातु पर रंग चढ़ाने की क्रिया) को जानने वाला होता है।

चन्द्र बुध योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र बुध का योग हो तो जातक काव्य करने में निपुण, धनवान स्त्री का प्रिय, सुरुपवान, हँसमुख, धर्मात्मा और विशेष गुण वाला होता है।

चन्द्र गुरु योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र गुरु का योग हो तो पुरुष स्थिर मैत्री वाला, विनययुक्त, बन्धुओं का आदर करने वाला धनवान, सुशील और देव ब्राह्मणों का हित चिन्तक होता है।

चन्द्र शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र शुक्र का योग हो तो वह व्यक्ति माला सुगन्ध वस्त्रादि से युत कार्य प्रणाली को जानने वाला, अपने कुल का प्रिय, आलसी, क्रय विक्रय में कुशल होता है।

चन्द्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र शनि का योग हो तो जातक वृद्धा स्त्री में आसक्त,

हाथी एवं घोड़े आदि का सम्पालक, शीलहीन, दूसरे का अनुकरण करने वाला, निर्धन और विवादादि (झगड़ा) में हारने वाला होता है।

भौम बुध योग फल

यदि कुण्डली में मङ्गल बुध का योग हो तो स्त्रीजनों में तुच्छ (अपमानित), अल्प धन वाला, सोना और लोहा का कार्य करने वाला, कुलटा स्त्री और दुश्चरित्रा विधवा को रखने वाला और औषधि बनाने में निपुण होता है।

भौम गुरु योग फल

यदि जातक की कुण्डली में मङ्गल गुरु का योग हो तो वह पुरुष शिल्प, वेद, शास्त्रों का ज्ञाता, मेधावी, बोलने में चतुर, बुद्धिमान तथा शस्त्र चलाने वालों में प्रधान (श्रेष्ठ) होता है।

भौम शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में मङ्गल शुक्र का योग हो तो लोकमें पूज्य, समाज में मुख्य, गणितज्ञ, परस्त्री में आसक्त, धूर्त, जुआ, मिथ्या तथा शठता में रत और विद् (परस्त्रीरत) होता है।

भौम शनि योग फल

यदि जातक की कुण्डली में मङ्गल शनि का योग हो तो वह धातु क्रिया, इन्द्रजाल विद्या में कुशल, वञ्चक, चोर विद्या में निपुण, धर्महीन शस्त्र और विष से आहत और कलह प्रिय होता है।

बुध गुरु योग फल

कुण्डली में बुध गुरु का योग हो तो नृत्य कला को जानने वाला, पण्डित शान और वाद्य में निपुण, बुद्धिमान और सुखी होता है।

बुध शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में बुध शुक्र का योग हो तो अति धनवान, नीतिज्ञ, विविधशिल्प कला का ज्ञाता, वेद जानने वाला, प्रियवक्ता, शीतज्ञ, हास्य और सुगन्ध मालादि में रुचि रखने वाला होता है।

बुध शनि योग फल

यदि कुण्डली में बुध शनि का योग हो तो जातक ऋण से युत, घमण्डी, प्रपञ्ची, कवि, घूमने वाला; कार्य में चतुर और प्रियभाषी होता है।

गुरु शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में गुरु शुक्र का योग हो तो जातक विद्या, वाद से जिविका वाला सप्रमाण विशेष धर्म में रहने वाला, श्रेष्ठ स्त्री वाला तथा बुद्धिमान होता है।

गुरु शनि योग फल

यदि कुण्डली में गुरु शनि का योग हो तो धनवान, नगराध्यक्ष, यशस्वी, श्रेणी, सभा ग्राम और संस्था का प्रधान होता है।

शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में शुक्र शनि का योग हो तो लकड़ी चीरने में चतुर चौर कर्म, चित्ररचना, पत्थर आदि से शिल्प क्रिया को करने में निपुण, योद्धा, भ्रमणशील, और पशुओं को पालन करने वाला होता है।

इस प्रकार यहाँ दो ग्रहों के योग से फल का वर्णन किया गया है। इनमें ग्रह परस्पर वर्ग में हो तो अधमादि विकल्प से फल में न्यूनाधिकता भी होती है। आगे त्रिग्रहों के योग का फल कहते हैं।

सूर्य चन्द्र मंगल योग फल

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य, चन्द्र मङ्गल का योग हो तो जातक लज्जारहित, पापी, यन्त्र बनाने वाला, शत्रु को जीतने वाला, सब कार्यों में दक्ष होता है।

सूर्य चन्द्र बुध योग फल

यदि रवि चन्द्र बुध का योग हो अर्थात् एक राशि में तो जातक तेजस्वी, पूर्ण बुद्धिमान शस्त्रकला में निपुण, सभा व पान (मदिरादि) में लीन, राजा का कार्य करने वाला और धैर्यवान् होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु योग फल

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु एक राशि में हो तो जातक क्रोधी मायाचार में चतुर, सेवा कर्म में निपुण, विदेश गमन में लीन अर्थात् परदेश मे रहने वाला, अत्यन्त बुद्धिमान और चञ्चल होता है।

सूर्य चन्द्र शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र और शुक्र एक राशि में हों तो जातक दूसरे के द्रव्य हरण करने पर चतुर, परस्त्री आसक्त रहने वाला और शास्त्र में चतुर होता है।

सूर्य चन्द्र शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य, चन्द्रमा, शनि एक राशि में हों तो जातक काम शास्त्र में चतुर, मूर्ख पराधीन और दरिद्र होता है।

सूर्य मंगल बुध योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, मङ्गल और बुध ये तीनों ग्रह यदि एक ही राशि में बैठे हो तो जातक प्रसिद्ध, कुश्ती लड़ने वाला, साहसी, निठुर, निर्लज्ज और धन पुत्र स्त्री से रहित होता है।

सूर्य मंगल गुरु योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य मङ्गल गुरु की युति हो तो जातक बोलने में चतुर, बड़ा धनवान्, सलाहकार, सत्यवादी और स्वभाव से उदार होता है।

सूर्य भौम शुक्र योग फल

जिस जातक के जन्म काल में यदि सूर्य, मङ्गल, शुक्र एक राशि में हों तो वह जातक नेत्ररोगी, अच्छे कुल में उत्पन्न, भाग्यशाली, कठोर वचन बोलने वाला और सम्पतिशाली होता है।

सूर्य भौम शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, मङ्गल, शनि एक राशि में हों तो जातक अङ्गहीन, धनहीन, रोगी, स्वजन रहित, और अत्यन्त मूर्ख होता है।

सूर्य बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, गुरु की युति हो तो जातक नेत्र रोगी, सम्पत्ति-शाली, मूर्ख, शास्त्रादि शिल्पविद्या एवं काव्यादि कार्य करने में लीन और सुन्दर लेखक होता है।

सूर्य बुध शुक्र योग फल

जन्म पत्रिका में यदि सूर्य, बुध शुक्र एक राशि में हों तो जातक अत्यन्त दुखी, वाचाल, घुमने में प्रवृत्ति वाला, एवं स्त्री के लिए दुखी होता है।

सूर्य बुध शनि योग फल

जन्म काल में सूर्य, बुध, शनि युति हो तो जातक नपुंसक की तरह आचरण करने वाला, द्वेषी, सबसे पराजित, बन्धु बान्धवों से त्यागा हुआ होता है।

सूर्य गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, गुरु तथा शुक्र एक ही राशि में स्थित हों तो इस प्रकार का जातक कमजोर नेत्रों वाला, वीर, पण्डित, निर्धन, राजा का मन्त्री तथा दूसरे के कार्य में लीन रहने वाला होता है।

सूर्य गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य गुरु शनि एक राशि में हों तो जातक असमान शरीर वाला पूजनीय, अपने लोगों से अनाहत, सुन्दर स्त्री पुत्र तथा मित्र वाला राजा का प्रिय तथा निर्भय होता है।

सूर्य शुक्र शनि योग फल

जन्मकाल में यदि सूर्य, शुक्र तथा शनि एक राशि में स्थित हों तो वह जातक शत्रु के भय से दुखी, सम्मान, कला एवं काव्य से रहित, दूषित आचरण वाला और कोढ़ी होता है।

चन्द्र भौम बुध योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्रमा, भौम, बुध एक राशि में हों तो पाप करने वाला, दुष्ट आचरण में लीन, जीवन पर्यन्त मित्र व अपने बन्धुओं से रहित होता है।

चन्द्र भौम गुरु योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, भौम, गुरु एक राशि में हों तो जातक नम्र देह (पाठान्तर से घावों से युत) स्त्री लोलुप, चोर, सुन्दर, स्त्रियों का प्रिय व महाक्रोधी होता है।

चन्द्र भौम शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा, भौम एवं शुक्र एक राशि में हों तो जातक दुःशीला अर्थात् शील (नम्रता) रहित, पुत्र व पति, घूमने की रुचि वाला और ठण्ड से डरने वाला होता है।

चन्द्र भौम शनि योग फल

यदि जातक की कुण्डली में चन्द्र, भौम तथा शनि एक ही राशि में स्थित हों तो वह जातक बाल्यावस्था में मातृ सुख से रहित, क्षुद्र स्वभाव, विषम बुद्धि व लोक (संसार) द्वेषी होती है।

चन्द्र बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, गुरु एक राशि में हों तो जातक धनी, रोगी, वक्ता, तेजस्वी, विख्यात, विशाल कीर्तिवाला एवं अधिक भाई और पुत्रों से युक्त होता है।

चन्द्र बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, गुरु एक राशि में हों तो जातक विद्या से सुसंस्कृत बुद्धिमान होकर भी दुष्टाचरण करने वाला सौम्य स्वभाव वाला और धन का लोभी होता है।

चन्द्र बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, शनि एक राशि में हों तो जातक रोगी, विकल शरीर वाला, पण्डित, वक्ता, पूजनीय और राजा होता है।

चन्द्र गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, बुध, शनि एक राशि में हों तो जातक पतिव्रता स्त्री का पुत्र पण्डित, कलाओं को जानने वाला, बहुज्ञ, सज्जन, भाग्यशाली होता है।

चन्द्र गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र, गुरु तथा शनि एक ही राशि में स्थित हों तो

जातक शास्त्र के तत्व का ज्ञाता, वृद्धा स्त्री का सङ्ग रखने वाला, गतरोग और किसी ग्राम का प्रधान होता है।

चन्द्र शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि चन्द्र शुक्र शनि एक राशि में हों तो जातक लेखक, कथा वाचक, पुरोहित, और ज्योतिषी पूर्व जन्म के पुण्य से होता है।

भौम बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि मङ्गल बुध, गुरु एक राशि में हों तो जातक अच्छा कवि, राजा, सज्जन स्त्री का स्वामी, दूसरों के उपकार करने में लीन एवं गान विद्या में चतुर होता है।

भौम बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि कुण्डली में मङ्गल, बुध, शुक्र एक राशि में हों तो जातक कुलहीन विकलाङ्ग, चञ्चल, दृष्ट, वाचाल और प्रतिदिन उत्साह युक्त होता है।

भौम बुध शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि मङ्गल, बुध, शनि एक राशि में हों तो जातक सेवक या दरिद्र, कृष्ण नेत्र प्रवासी, मुख का रोगी एवं हास्य प्रेमियों के साथ रमण करने वाला होता है।

भौम गुरु शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में यदि मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि एक राशि में हों तो जातक राजा का प्रिय पात्र सत्पुत्रों से युत, स्त्रियों से सदा बहुत सुख प्राप्त करने वाला एवं समस्त लोगों का सुख दाता है।

भौम गुरु शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि मङ्गल, गुरु, शनि एक राशि नें हों तो जातक राजा से संमत, भग्न देह, दृष्ट आचरण करने वाला, मित्रों से निन्दनीय एवं घृणा से रहित होता है।

भौम शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, शुक्र, शनि एक राशि में हों तो जातक चरित्रहीन स्त्री का पुत्र और पति (अर्थात् चरित्रहीन स्त्री का पति भी), सुख–साधनों से रहित और परदेशवासी होता है।

बुध गुरु शुक्र योग फल

जन्म कुण्डली में यदि बुध, गुरु, शुक्र एक साथ हों तो जातक सुन्दर शरीर वाला, शत्रुहीन, राजा, भाग्यवान्, यशस्वी, और सत्यवक्ता होता है।

बुध गुरु शनि योग फल

जन्म कुण्डली में यदि बुध, गुरु, शनि एक राशि में हों तो जातक धन ऐश्वर्य युक्त, पण्डित, बहुत सुखभोगी, अपने स्त्री से प्रेम करने वाला, धैर्ययुत और भाग्यवान् होता है।

बुध शुक्र शनि योग फल

जन्म कुण्डली में बुध, शुक्र, शनि एक साथ हों तो वाचाल, धूर्त, मिथ्यावादी, परस्त्रीगामी, कलाकार और स्वदेश प्रिय होता है।

गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि गुरु, शुक्र, शनि का योग हो तो नीच कुलोत्पन्न जातक भी यशस्वी राजा और सुशील होता है।

माता व पिता के सुख विचार

जन्म के समय चन्द्रमा पापग्रहों से युक्त हो तो जातक मातृसुख से हीन और सूर्य पापयुक्त हो तो जातक पितृसुख से हीन तथा दोनों शुभग्रह से युत हों तो माता और पिता का सुख समझना चाहिए।

मिश्र अर्थात् शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रह युक्त हों तो मिश्रफल कहना चाहिए।

शुभ ग्रहों के योग फल

जन्म के समय यदि परस्पर ३ ग्रहों की युति हो तो जातक धन, ऐश्वर्य, यश से युत राजा सदृश पृथ्वी के भूषण रूप अति श्रेष्ठ पुरुष का जन्म होता है।

पाप ग्रहों के योग फल

जन्म के समय यदि जन्म काल में तीन पाप ग्रहों की युति हो तो जातक भाग्यहीन दरिद्र, दुखी कुरूप और विनयहीन होता है।

अब आगे चार ग्रहों के योग का फल कहते हैं—

सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग फल

यदि जन्म के समय सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध एक साथ हों तो जातक लिपिकर्ता या लेखक, चोर, वाचाल, रोगी व चतुर मायावी होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु योग फल

यदि जातक के जन्म के समय सूर्य, चन्द्र, भौम एवं गुरु एक साथ हों तो वह जातक धनी, स्त्री से निन्दित, तेजस्वी, नितिज्ञ, शोक से रहित, कार्य करने में सक्षम व चतुर होता है।

सूर्य चन्द्र भौम शुक्र योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र एक साथ हों तो जातक श्रेष्ठ उचित वाणी व

व्यवहार वाला, (पाठान्तर से उग्र अर्थात् तीक्ष्ण, जठराग्नि वाला) सुखभोगी, चतुर, धन संग्रहकर्ता, विद्या पुत्र व स्त्री से युक्त होता है।

सूर्य चन्द्र भौम शनि योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि एक साथ हों तो जातक न्यूनाधिक शरीर वाला, वामन (लघु), धन हीन, भिक्षाशी और सर्व विदित मूर्ख होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग फल

यदि सूर्य, बुध, गुरु, चन्द्रमा एक साथ हों तो जातक सुवर्ण (सोना) का कार्य करने वाला (सुनार), बड़े नेत्र वाला कला का ज्ञाता, बड़ा धनवान, धैर्यधारी, (पाठान्तर से वीर) व रोगहीन, देहधारी, (पाठान्तर से गम्भीर) होता है।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक व्यग्र, सुन्दर भाग्य वाला, प्रवक्ता, छोटे कद वाला, पाठान्तर से नेत्र रोगी व पीत नेत्र वाला व राजा का प्यारा होता है।

सूर्य चन्द्र बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि एक साथ हों तो जातक माता पिता से हीन, धन सुख से रहित, घूमने वाला, भिक्षाशी व असत्य भाषी होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शुक्र एक साथ हों तो जातक जल हिरन व जङ्गल का स्वामी, सुख भागी (पाठान्तर से राजा से सम्मानित) व कुशल होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि एक साथ हों तो जातक लाल नेत्र वाला, क्रोध दृष्टि वाला, उग्र, अधिक पुत्र धन से युक्त और श्रेष्ठ स्त्रियों का प्रिय पात्र होता है।

सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि एक साथ हों तो जातक स्त्री के समान आचरण करने वाला अर्थात् जनखा, आगे चलने वाला, अत्यन्त दुर्बल देहधारी व सब जगह भयभीत होता है।

सूर्य भौम बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु एक साथ हों तो जातक वीर, सूत बनाने वाला वा चक्की चलाने वाला और (ग्रन्थान्तर से साइकिल वगैरह पर चलने वाला) स्त्री व धन से रहित, दुःखी अथवा घूमने वाला होता है।

सूर्य भौम बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक दूसरों की स्त्री में लीन, चोर, असमान शरीर धारी, दुर्जन व दुर्बल होता है।

सूर्य भौम बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, बुध, शनि एक राशि हों तो जातक युद्ध करने वाला पण्डित, उग्र, बुरे आचरण करने वाला प्रधान कवि, उत्तम सलाहकार अर्थात् मन्त्री अथवा राजा होता है।

सूर्य भौम गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र एक भाव में हों तो जातक सुन्दर भाग्यवाला, संसार में सम्मानित, धनी, राजा से सम्मत, संसार में विख्यात और नीति का ज्ञाता होता है।

सूर्य भौम गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, गुरु शनि एक घर में हों तो जातक पागल, जन समुदाय में सम्मानित, प्रयोजन सिद्ध कर्ता, बन्धु व मित्र से युत और राजा का प्रिय होता है।

सूर्य भौम शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, भौम, शुक्र, शनि एक राशि में हों तो जातक अशान्त चित्त असत्कार्यकर्त्ता, असमान दृष्टि वाला, बन्धुद्वेषी व सब से पराजित होता है।

सूर्य बुध गुरु शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एक साथ हों तो जातक धनी पूर्ण सुखी, मतलब सिद्ध करने वाला, बन्धुओं से युत व श्रेष्ठ पुरुष होता है।

सूर्य बुध गुरु शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, गुरु, शनि एक भाव में हों तो उत्पन्न जातक नपुंसक के समान आचरण करने वाला, अभिमानी, क्लेश प्रिय भाई से युक्त व उत्साह से हीन होता है।

सूर्य बुध शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि सूर्य, बुध, शुक्र, शनि एक भाव में हों तो जातक वाचाल, सुन्दर भाग्यवाला, पण्डित, सरल, सुखी, सत्त्वगुण व पवित्रता से युक्त, धीर व मित्रों की सहायता की सहायता करने वाला होता है।

सूर्य गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्म काल में यदि कुण्डली में सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो

जातक लोभी कवि, अध्यक्ष, शिल्पकरों का स्वामी, नीच अर्थात् दुष्टों का मुखिया व राजाओं का प्रिय होता है।

चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल

जन्म काल में यदि पत्रिका में चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक शास्त्रों में निपुण राजा, सुयोग्य महान् मन्त्री अथवा बड़ी बुद्धि वाला होता है।

चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल

जन्म काल में यदि पत्रिका मे चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र एक साथ हों तो जातक कलहप्रिय, अधिक सोने वाला अर्थात् आलसी, दुष्ट, कुलटा का पति, सुन्दर, बन्धु का विरोधी और दुःखी होता है।

चन्द्र भौम बुध शनि योग फल

जन्म काल में यदि जन्मकुण्डली में चन्द्र, भौम, बुध, शनि एक साथ हों तो जातक वीर, माता पिता के सुख से रहित, नीच कुल में उत्पन्न, अधिक स्त्री व मित्र एवं पुत्र से युक्त अच्छे कार्य करने वाला होता है।

चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल

यदि चन्द्र, भौम, गुरु एवं शुक्र एक साथ हों तो जातक विकलाङ्ग सुन्दरी स्त्री वाला, सबको सहन करने वाला (पाठान्तर से कष्ट सहनकर्त्ता) अत्यन्त सम्मान से युक्त, पण्डित व अधिक मित्रों के सुख को भोगने वाला होता है।

चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल

चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शनि के योग से जातक बहिर, धनी, वीर, उन्माद रोगी, बोलने में चतुर, स्थिर स्वभाव, बुद्धिमान और उदार हृदय वाला होता है।

चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र, मङ्गल, शनि एक साथ हों तो वह पुरुष कुलटा का स्वामी प्रौढ़ सांप के समान नेत्र वाला तथा सर्वदा उद्वेगयुक्त होता है।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्म चक्र में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एक साथ में हों तो जातक विद्वान् माता–पिता से रहित सुरूप धनवान, सौभाग्यवान् तथा शत्रु रहित होता है।

चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शनि एक साथ हों तो जातक धर्मात्मा यशस्वी श्रेष्ठ, तेजस्वी, बन्धुओं का प्रिय, बुद्धिमान्, राजमन्त्री और श्रेष्ठ कवि होता है।

चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में चन्द्र, बुध, शनि एक राशि में हों तो परस्त्रीगामी, दुःशीला स्त्री का पति, विपत्ति से युक्त बन्धुवाला, पण्डित तथा संसार का द्वेषी होता है।

चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि के योग होने से जातक मातृविहीन, सौभाग्य-शाली, चर्मरोगी, दुःखी, भ्रमणशील, बहुत बोलने वाला और सत्य में रत होता है।

भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र का योग हो तो स्त्री से कलह करने वाला, धनी, लोकमान्य, सुशील एवं नीरोग शरीर वाला होता है।

भौम बुध गुरु शनि योग फल

यदि मङ्गल, बुध, गुरु, शनि का योग हो तो जातक पण्डित, वक्ता, धनहीन, सत्य और शौच से बोलने वाला, कष्ट सहनशील और बुद्धिमान होता है।

भौम बुध शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि का योग हो तो जातक योद्धा दूसरों से पोषित, कठिन शरीर वाला, युद्ध में स्वाभिमान, रखने वाला विख्यात और कुत्तों से पालने वाला होता है।

भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक तेजस्वी, धनवान, स्त्रैण, साहसी, चञ्चल और धूर्त होता है।

बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि बुध, गुरु, शुक्र, शनि का योग हो तो जातक (जन्म लेने वाला) मेधावी, शास्त्राभ्यासी, स्त्री में आसक्त और (आज्ञाकारी नौकरों वाला) होता है।

अब आगे पञ्चग्रहयोग का फल जैसा महर्षियों ने कहा है, वैसा ही कहते हैं—

सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल

यादे कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध एवं गुरु एक भवन में हों तो जातक दुःखी, अधिक प्रपञ्ची व स्त्री के वियोग से तप्त देहधारी होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र एक भवन में हो तो जातक दूसरों के कार्य में लीन, बन्धु और मित्रों के बल से हीन अर्थात् बन्धु मित्रों से दुःखी एवं नपुंसकों से मित्रता करने वाला होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध शनि योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि एक भवन में हो तो जातक थोड़ी आयु वाला कारागार में वृद्ध, दीन, समस्त सुख से हीन एवं स्त्री पुत्र धन से रहित होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र एक भवन में हो तो जातक जन्म से अन्ध, अत्यन्त दुःखी, माता–पिता से सदा संत्यक्त अर्थात् माता पिता के सुख का अभाव तथा गान (संगीत) में अभिरुचि रखने वाला होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि एक भवन में हों तो जातक युद्ध में निपुण, सामर्थ्यवान्, दूसरों के धन का हरण करने वाला, अन्य लोगों को कष्टदायी अथवा चुगलखोर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है।

सूर्य चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र तथा शनि एक ही भवन में हों तो जातक सम्मान धन, वैभव से रहित, दुष्ट आचरण कर्ता व दूसरों के स्त्री में लीन होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एक भवन में हो तो जातक मशीनरी का ज्ञाता, अधिक धनी, राजा का मन्त्री, न्यायाधीश, विख्यात और अच्छे यशवाला होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल

जन्म पत्री में रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शनि एक साथ हों तो वह जातक डरपोक, शुभ चिन्तकों से रहित, उन्मादी, रोग युक्त, कपट में निपुण, उग्र और परान्नभोक्ता होता है।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि के योग से जातक लम्बा कद रोम युक्त शरीर वाला, मरने तक का उत्साह रखने वाला, सुख, धन एवं पुत्र रहित होता है।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि के योग से वक्ता, इन्द्रजाल जानने वाला, चञ्चलचित्त स्त्री का प्रिय, बुद्धिमान, बहुत शत्रु वाला और निर्भय होता है।

सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र के योग से जातक कामी, बहुत घोड़ा रखने वाला, पुण्यवान्, सेनापति, शोकरहित राजा का प्रिय और सौभाग्यवान् होता है।

सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में रवि, मङ्गल, बुध, गुरु, शनि के एक राशि में होने से जातक सदा उद्विग्न, रोगी, घर-घर भीख माँगने वाला, पुराना मैला वस्त्र पहनने वाला होता है।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि के योग होने पर जातक मृत्यु, बन्धन और रोग से पीड़ित लोक में मान्य और रोग से व्यथित, विद्वान्, निर्धन और विकल शरीर वाला होता है।

सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में रवि, मङ्गल, बुध, शुक्र एवं शनि के योग से जातक रोग और शत्रु से पीड़ित, स्थानहीन, दुःख से युक्त, सदा क्षोभ रहित होकर भ्रमण करने वाला होता है।

चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक नपुंसक, नीच आचरण वाला, दुर्भाग्य युक्त, विकल और धनहीन होता है।

सूर्य भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में सूर्य, मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक जलयन्त्र, धातु, पारा आदि रसायन निर्माण क्रिया में निपुण और इन्हीं कार्यों को प्रसिद्ध कार्य मानने वाला होता है।

सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

जन्माङ्ग में रवि, बुध, गुरु, शुक्र, शनि के योग से जातक बहुत शास्त्र जानने में निपुण, मित्र और गुरुजनों का प्रिय, धर्मात्मा और दयालु होता है।

चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र के योग से जातक सज्जन, नीरोगी शरीर, विद्या, धन और सुख से सम्पन्न, बन्धुओं का हित और बहुत मित्र वाला होता है।

चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल

जन्माङ्ग में चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शनि के योग से जातक आँख का रोगी, दरिद्र, परान्नभोगी, दीन और अपने बन्धु वर्गों को लज्जित करने वाला होता है।

चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल

यदि कुण्डली में चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि एक भाव में हों तो जातक अधिक शत्रु व मित्रों से युक्त, परोपकारी, विपरीत स्वभाव वाला एवं अधिक अहंकारी होता है।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक राज्य सचिव या राजा के समान, समुदाय का स्वामी एवं सर्वमान्य होता है।

भौम बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक ही भवन में हों तो जातक सुन्दर मन चित्त वाला, उन्मादी, राजा का प्रिय पात्र, शोक से रहित, निद्रालु एवं निर्धन होता है।

अब आगे छः ग्रहों के योग का फल प्रस्तुत किया जा रहा है—

एक राशि में सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र एक स्थान में हों तो जातक विद्या वित्त धर्म में लीन कृश, देहधारी अधिक भाषी (बहुभाषी) एवं विशिष्ट बुद्धिमान् होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि एक स्थान में हों तो जातक दानी, परोपकारी, अस्थिर स्वभाव वाला, संत एवं गुणी, निर्जन स्थान में रमण करने वाला होता है।

सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि एक स्थान में हों तो जातक चोर, परस्त्रीगामी, कोढ़ी, अपने मनुष्यों से निरादर पाने वाला, मूर्ख, स्थान से च्युत एवं पुत्रहीन होता है।

सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि एक स्थान में हों तो जातक दुष्ट, दूसरों के कार्य में लीन वा करने वाला, क्षय रोगी (टी.वी. का रोगी), श्वास व खाँसी से पीड़ित देहधारी और भाई बन्धुओं में निन्दित होता है।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक राजा का मन्त्री, सौभाग्यवान्, क्षमा से युक्त, शोक से पीड़ित एवं स्त्री और धन से रहित होता है।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक तीर्थ में सदा रमण करने वाला, धन व पुत्र से हीन, वन या पर्वत का सेवन करने वाला होता है।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल

यदि जन्माङ्ग में सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एक साथ हों तो जातक सदा पवित्र, प्रतापी, अधिक स्त्रियों में लीन, राजा का प्यारा, राज्य मन्त्री, धन, पुत्र व सौभाग्य से युत होता है।

सृष्टि के समय योग

जिस समय चन्द्रमा सहित कर्कलग्न में बृहस्पति की दृष्टि से युत और शेष सब ग्रह अपने अपने गृह में थे, तो ब्रह्मा ने इस भूमि की रचना की।

अत: इस प्रकार का योग जिस पुरुष के जन्म समय में होता है तो वह अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करता हुआ त्रैलोक्य का पालन करता है।

स्थावर जङ्गम की अभिव्यक्ति

समय, निमित्त, आकृति और देश भेद से होराशास्त्र स्थावर (वृक्षादि) और जङ्गम (मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतङ्गादि) का जन्म ज्ञान जिस प्रकार अभिव्यक्त करता है, उस शास्त्र को आगे कहते हैं।

मनुष्येतर जन्म ज्ञान

जातक की कुण्डली में सब पापग्रह बलवान् और सब क्रूरग्रह निर्बल हो तथा वियोनि संज्ञक (जलचर चतुष्पद कीट राशि) लग्न हो, बुध शनि केन्द्र में हों या लग्न को देखते हों तो वियोनि (मनुष्येतर) का जन्म समझना चाहिये। आधान या जन्म समय चन्द्रमा या लग्न में जिस राशि के द्वादशांश हो तत्सदृश अर्थात् उस राशि के समान जन्तु का जन्म समझना चाहिए।

वर्णाकृति भेद ज्ञान का विचार

ग्रहों के योग या दृष्टि द्वारा प्राणियों के वर्ण आकार आदि के भेद मुनियों ने जो वर्णन किये हैं, उनके सारांश को यहाँ भी कहते हैं।

पशु शरीर में राशि विभाग का ज्ञान

चतुष्पद पशुओं के मुख में मेष, गले में वृष, दोनों कन्धा सहित पैर में मिथुन और मीन, पीठ के दोनों भाग में कर्क और कुम्भ, सिंह और मकर अगले पैरों में, कन्या और धनु पिछले पैरों में, तुला, वृश्चिक गुद और लिङ्ग में स्थित समझना चाहिए।

इनमें मिथुन से तुला पर्यन्त दहिने भाग में और वृश्चिक से मीन पर्यन्त वामभाग में राशियों को जानना चाहिए।

वियोनि का वर्ण व चिन्ह ज्ञान

लग्न में मेषादि राशि या उसके नवांश में जो बली हो उसके वर्ण के समान ही वियोनि का वर्ण (आकृति) कहना उचित होगा।

यदि लग्न में ग्रह हो तो बली ग्रह के समान वर्ण या व्रणादि कहना चाहिये।

ग्रह यदि अपने गृह या नवांश में हो तो स्पष्ट वर्ण, यदि अन्य राशि नवांश में हो तो रुक्ष (ग्रह और परराशि मिश्रित) वर्ण समझना चाहिए।

लग्न से सप्तम भाव में ग्रह हो या ग्रह की दृष्टि हो तो उस ग्रह के वर्ण-सदृश उस पशु के पृष्ठ पर चिह्न जानना चाहिए।

जितने ग्रह हों उतने वर्ण के चिह्न समझना चाहिए। जो ग्रह सबसे बलवान् है उसी का वर्ण प्रधान रूप से होता है।

ग्रहों के वर्णों का ज्ञान

वियोनि कुण्डली में लग्न में बलवान् बृहस्पति हो तो पीला, चन्द्रमा हो तो श्वेत, शुक्र हो तो चित्र (अनेक वर्ण), रवि या मङ्गल हो तो लाल वर्ण होता है।

शनि हो तो काला और बुध हो तो शबल (दूर्वा श्याम) वर्ण होता है।

यदि ग्रह अपने गृह और अन्य नवांश में अथवा अपने नवांश या अन्य राशि में रह कर लग्न को देखे तो सोने के सामान वर्ण समझना चाहिए।

प्रकारान्तर से वर्ण का ज्ञान

जन्मलग्नस्थ ग्रह यदि परिघ, परिवेष (मण्डल), मेघ, वृक्ष, मृग, वृष, दण्ड (यष्टी), सर्प, इन्द्र धनुष या धूलि आदि जिस वर्ण से आवृत (आच्छादित) हो उसी प्रकार का वर्ण कहना चाहिये।

अन्यथा ग्रह का जैसा स्वाभाविक वर्ण कहा गया है उसी प्रकार का वर्ण जातक का होता है।

पक्षी जन्म ज्ञान

पक्षी द्रेष्काण या चर नवांश, या बुध का नवमांश लग्न में हो वह किसी बली ग्रह से युत हो और उस पर शनि या चन्द्रमा की दृष्टि या योग हो तो क्रम से स्थल या जल के पक्षी का जन्म कहना चाहिए।

अथवा जलचर राशि लग्न हो तथा बली ग्रह से युत दृष्ट हो तो जल का, स्थलराशि लग्न हो और बली ग्रह से युत या दृष्ट हो तो स्थल का पक्षी और उसी ग्रह के सदृश वर्ण कहना चाहिए।

वृक्ष जन्म योग

यदि वियोनि जन्म का लग्न हो, सूर्य गुरु अथवा चन्द्रमा बलहीन हों तथा शेष ग्रह भी पूर्ण बली न हों तो वृक्षादि का जन्म कहना चाहिए।

यदि लग्न में स्थल राशि का नवमांश हो तो वृक्ष का जन्म बताना चाहिए। यदि जलचर राशि का नवांश हो तो जलीय वृक्ष का जन्म कहना चाहिए।

लग्नांश पति से वृक्षों से भेद का ज्ञान

वियोनि लग्न नवांशपति सूर्य हो तो सागरवान् (सँखुआ आदि) वृक्ष, चन्द्रमा हो तो चिकना और दूध वाला, गुरु हो तो फल वाला (आम, केला आदि) का वृक्ष का जन्म समझना चाहिए।

मङ्गल हो तो कडुआ और काँटे वाला, शनि हो तो दुर्भग (फरहद आदि निष्प्रयोजननीय), शुक्र हो तो पुष्प वाला और चिकना तथा यदि बुध हो तो फलहीन वृक्ष समझना चाहिए।

वृक्ष के शुभाशुभ फल का ज्ञान

उक्त लग्नांशपति पापग्रह हो तथा शुभ ग्रह की राशि में हो उत्तम स्थान, खराब वृक्ष, तथा अंशपति शुभ हो और पाप राशि में हो तो खराब भूमि में उत्तम वृक्ष कहना चाहिए।

इसी से सिद्ध है कि शुभग्रह शुभराशि में हो तो सुभूमि में सुवृक्ष और पापग्रह पापराशि में हो तो कुभूमि कुवृक्ष का जन्म कहना चाहिए।

मिश्र से मिश्र (अनेक प्रकार के) वृक्ष समझना चाहिए।

उनमें जो स्थल राशिपति हो उससे स्थलीय वृक्ष, जो जलराशिपति हो उससे जलीय वृक्ष का जन्म समझना चाहिए।

वृक्षों की संख्या का ज्ञान

वियोनि कुण्डली में उक्त अंशपति लग्न राशि से आगे जितनी राशि में हो उतने वृक्ष समझना चाहिए।

अपने नवमांश (जिसमें ग्रह हो उस) से लग्न नवमांश की जितनी संख्या हो उतने वृक्ष की संख्या समझना चाहिए।

वियोनि जन्म ज्ञान

वियोनि कुण्डली में शुभग्रह निर्बल होकर अपने नवांश में बैठे हो, तथा पापग्रह बली होकर अपने राशि या पाप के नवांश में बैठे हों तो वियोनि जन्म कहना चाहिए।

लग्नांश ग्रह यदि निर्बल ग्रह की राशि में हो या अस्त हो तो युद्ध में पराजित, भेदित हो, पाप से युत या दृष्ट हो तो उस समय उत्पन्न वियोनि का शीघ्र ही नाश होता है।

वियोनि ज्ञान में विशेष कथन

उद्भिज्ज, जरायुज, स्वेदज और अण्डज इन चारो प्रकार के जन्तुओं के जन्म ग्रहों के योगादि लक्षणों से पृथक् पृथक् वर्णन करता हूँ।

चतुष्पद जन्म ज्ञान

वियोनि कुण्डली में दुर्बल राशि पें दुर्बल ग्रह हों सूर्य चतुष्पद राशि में हो तथा मेष लग्न हो तो सामान्यतया चार पैर वाले प्राणी का का जन्म होता है।

इस प्रकार पूर्व मैंने संक्षेप नें सामान्य वियोनि–जन्म कहा है।

अब कौतुक–जनक (आश्चर्यजनक) विशेषरूप से वियोनि जन्म ज्ञान का वर्णन करते हैं।

विशेष रीति से वियोनि जन्म ज्ञान

इस ग्रन्थ में पूर्व प्रत्येक राशि में जो जो द्वादशांश कहे गये हैं, वे सबल रवि, चन्द्र और लग्न में हों तो वियोनिसंज्ञक द्वादशांश में वियोनि का जन्म होता है।

जैसे मेष राशि में चन्द्रमा मेष के द्वादशांश में हो तो बकरा, मेढ़ा आदि का जन्म, वृष के द्वादशांश में गाय, भैंस आदि का, मिथुन के अंश मनुष्यरूप (वानर आदि) का, कर्क में, केकड़ा, कछुआ आदि का, सिंह के अंश में सिंह, बाघ आदि का, कन्या के अंश में मनुष्यों का, तुला के अंश में मनुष्य की आकृति वाले का, वृश्चिक के अंश में बिच्छू, साँप आदि का, धनु के अंश में घोड़े, गधे आदि का, मकर के अंश (पूर्वार्ध) में हारेन आदि, उत्तरार्ध में मगर आदि का, कुम्भ के अंश में मनुष्य का, मीन के द्वादशांश में मछली आदि जलजन्तुओं का जन्म कहना चाहिए।

जिस प्रकार मेष के द्वादशांश में नाना प्रकार के जन्तुओं का जन्म कहा गया है; इसी प्रकार शेष राशि के द्वादशांशों में भी कहना चाहिये।

जन्तुओं की आकृति व यमलादि का ज्ञान

लग्न के द्वादश भाग में प्रथम भाग में जो राशि वही दादशांश वियोनि कुण्डली में होता है तो उसी की आकृति वाले प्राणियों का जन्म समझना चाहिए। प्रथम के आधार पर ही आगे के द्वादशांशवश वर्ण आकृति आदि कहना चाहिए।

जैसे पूर्व मनुष्यों में लग्नगत पुरुष ग्रह के नवांश और द्विस्वभाव राशि से यमलादि जन्म कहा गया है उसी प्रकार प्रथम द्वादशांश में पुरुष ग्रह स्त्री ग्रह के अंश को द्विस्वभावादि देखकर एक वा अनेक का जन्म कहना चाहिये।

एक से अधिक वियोनि जन्म ज्ञान

जैसे श्वान (कुत्ता) आदि जन्तुओं का बहुत सन्तान होती है, अतः उसके प्रसव में लग्न में जितनी द्वादशांश संख्या हो उतनी सन्तति पुरुष, या स्त्री की संख्या समझनी चाहिये।

यदि लग्न में बृहस्पति, शनि या चन्द्र हो तो कछुए आदि जन्तु की द्वादशांश संख्या तुल्य सन्तति कहना चाहिये।

शुक्र, मंगल, बुध या चन्द्रमा अथवा शनि बलयुक्त हों तो पूर्ववत् (मनुष्य जातकोक्तवत्) अपने अपने अंश सदृश सत्त्व (प्राणियों) के देह (शरीर) को बनाते हैं।

लोक विपरीत प्रसव ज्ञान

प्रसव काल में ग्रह अपने नवांश से दूसरे ग्रह के नवांश में चला जाय तो संसार के विरुद्ध उत्पन्न होने वाले प्राणी घी आकृति (स्वरूप) निश्चय ही होती है।

वृश्चिक लग्नस्थ द्विपद वा नवम नवांश फल

वियोनि कुण्डली में वृश्चिक लग्न में द्विपद नवमांश हो तो बिल में रहने वाले सर्प, गोह, शाही, चूहा, कीड़ा, न्योला, बिच्छू, गोजर, विना विष के सर्प आदि घोर जन्तुओं का जन्म कहना चाहिए।

धनु लग्न धनु नवांश या धनु द्वादशांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली में धनु लग्न या नवमांश या द्वादशांश धनु का हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो घोड़े, खच्चर, गाए, भैंस, ऊँट का जन्म कहना तथा गुरु की राशि या अंश सदृश उस जन्तु के वर्ण आदि पूर्ववत् समझना चाहिए।

मकर लग्नस्थ मकर नवांश या मकर द्वादशांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली के मकर लग्न में यदि मकर का नवांश या द्वादशांश हो तो जङ्गली जन्तु का जन्म जैसे हाथी, गैंड़ा, सूकर, भालू, बाघ, गीदड़ आदि मांसभक्षी का जन्म समझना चाहिए।

मीन लग्नस्थ मीन नवांश या मीन द्वादशांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली के मीन लग्न में मीन के नवमांश या द्वादशांश हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो अगाध जल में रहने वाले मछली आदि जीव का जन्म समझना चाहिए।

मेष या वृष लग्नस्थ मेष या वृष नवांश फल

वियोनि जन्म कुण्डली के मेष लग्न में मेष का अंश हो उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो मेढ़ा, बकड़ा आदि, तथा वृषलग्न में वृषांश हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो गाय, भैंस आदि जन्तु का जन्म कहना चाहिए।

पूर्वोक्त जो जो राशियाँ अपने अपने अंश सहित लग्न में हों और अपने अपने स्वामी से दृष्ट हों तो उन-उन राशियों के राशीश के सदृश जन्तु का जन्म निश्चित रूप से कहना चाहिए।

पूर्वोक्त ग्राम्य राशि लग्न हो उसमें यदि सिंह, वृश्चिक, मकर का नवमांश हो तो गांव में पालित जंगली प्राणियों का जन्म कहना चाहिए।

एवं ग्राम्य राशि (मिथुन आदि) लग्न में जैसे स्थल या जल राशि के नवांश हो, उसी प्रकार स्थलचर या जलचर जन्तुओं का जन्म कहना चाहिए।

तुला लग्न में तुला के द्रेष्काण शुक्र से दृष्ट हो तो तोता, मैना, कोयल, चकोर, प्रभावशाली अर्थात् कान्तिमान पक्षी का जन्म कहना चाहिए।

वियोनि जन्म कुण्डली में सिंह लग्न में सिंह के द्वादशांश हो उस पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो मुर्गा, मयूर, तित्तिर, कबूतर, चातक आदि का जन्म कहना चाहिए।

एवं वियोनि जन्म कुण्डली में स्थिर राशि लग्न हो उसमें स्थिर राशि का द्वादशांश शनि से दृष्ट हो तो स्थिर मठ, मन्दिर, मकान आदि की उत्पत्ति अर्थात् प्रारम्भ करना चाहिये। उसके रङ्ग रूप–ग्रहों के रूप रंग अनुसार पूर्ववत् समझना चाहिये। जैसे सूतिका के घर का ज्ञान कहा गया है।

यहाँ समस्त जीवों के कारणभूत आधान या निषेक या गर्भाधान विषय को रावण द्वारा इस प्रकार कहा गया है—

गर्भाधानयोग्य रजोदर्शन

स्त्री की जन्म राशि से चन्द्रमा जब अनुपचय राशि में अर्थात् राशि से १/२/४/५/७/८/९/१२ इन स्थानों में हो और गोचर में स्थित मङ्गल की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टि हो तो प्रति मास स्त्री को मासिक धर्म होता है। ऐसा बहुत आचार्यों का कथन है तथा सर्वार्थचिन्तामणि आदि ग्रन्थ से भी इस तथ्य की पुष्टि की गई है।

रजो दर्शन में कारण

स्त्रियों को प्रत्येक मास में योनि से तीन दिन तक रक्त स्राव होता है। उसी को रजोदर्शन कहते हैं। उस रजो दर्शन का कारण मङ्गल और चन्द्रमा हैं। क्योंकि जलमय चन्द्रमा और अग्निमय मङ्गल के शास्त्रकारों ने माना है। इसलिए जल से रुधिर और अग्नि से पित्त की उत्पत्ति होती है। जब पित्त के द्वारा रुधिर (खून) में हलचल होती है तो स्त्रियों को मासिक धर्म होता है।

गर्भाधान में अक्षम रजोदर्शन

इस प्रकार जो प्रत्येक मास स्त्रियों को मासिक धर्म होता है; उस ही विद्वानों ने गर्भ का कारण स्वीकार किया है।

यदि स्त्री की शशि से ३/६/१०/११ वें चन्द्रमा हो तो वह मासिक धर्म निष्फल होता है अर्थात् गर्भधारण की क्षमता उस रजोदर्शन में नहीं होती है।

स्त्री पुरुष संयोग कथन

पुरुष की राशि से उपचय (३/६/१०/११) राशि में चन्द्रमा हो और उस पर गुरु की या अपने मित्र ग्रह की विशेष कर शुक्र की दृष्टि रहने पर यदि स्त्री पुरुष संयोग होता है तो गर्भ धारण होगा।

तीन दिन तक रजोदर्शन गर्भ धारण करने में समर्थ नहीं होता है तथा धर्मशास्त्र में त्याज्य भी है।

इसलिये ५वें दिन से १६वें दिन तक ही निषेक का समय माना गया है। इसी से पुरुष स्त्री की राशि से चन्द्रमा को पूर्वोक्त रीति से जानकर उक्त काल में निषेक करने पर सन्तान अवश्य होती है।

अन्य पुरुष संयोग कथन

यदि उपचय राशि में चन्द्रमा रजोदर्शन के समय मङ्गल से दृष्ट हो तो धूर्त पुरुष से स्त्री का संयोग, सूर्य से दृष्ट हो तो राजपुरुष से तथा शनि से दृष्ट हो तो नौकर से स्त्री का संयोग होता है।

इस प्रकार एक एक पाप ग्रह से दृष्ट हो और अन्य (शुभग्रह) से अदृष्ट होने पर पूर्वोक्त फल समझना चाहिए।

यदि भौमादि सब पापग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो वह स्त्री घर का परित्याग करके वेश्या हो जाती है।

संभोग प्रकार का विचार

गर्भाधान कालिक लग्न से अथवा प्रश्नकालिक लग्न से सप्तमभाव स्थित द्विपदादि अर्थात् द्विपद राशि अथवा चतुष्पद राशि जिस रीति से संभोग करता है अभिप्राय यह है कि यदि सप्तम में द्विपद राशि हो तो द्विपद की तरह चतुष्पद हो तो चतुष्पद की तरह स्त्री पुरुष के संभोग को कहना चाहिए।

यदि सप्तमभाव पर पाप ग्रह की दृष्टि या उससे युति हो तो क्रोध व लड़ाई के साथ, यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट सप्तमभाव हो तो कामशास्त्र की रीति से शान्ति पूर्वक हास–विलासादि से युत, यदि शुभ पाप दोनों की दृष्टि या युति हो तो शुक्र (वीर्य) शोणित (रज) संयुक्त गर्भावास (बच्चेदानी) में कर्मानुकूल विषय वृत्ति पतित होती है।

गर्भ सम्भव योग

गर्भाधान के समय यदि रवि, शुक्र समराश्यंश में बली होकर पुरुष के उपचय राशि में हो, अथवा मङ्गल, चन्द्रमा बली होकर स्त्री के उपचय राशि में हो तो गर्भ सम्भव कहना चाहिए।

यदि शुक्र, रवि, मङ्गल चन्द्र अपने नवांश में होकर उपचय स्थान में हो या गुरु (१/५/९) भाव में बली होकर ह्वे तो भी गर्भ सम्भव कहना चाहिए।

गर्भस्थिति का स्वरूप

गर्भाधान समय में स्त्री पुरुष का जिस प्रकार का मनोभाव, जिस प्रकार की

अभिलाषा, कफ पित्तादि जिस प्रकार के दोष से युत हो उसी प्रकार के गुण दोष से युक्त गर्भ में पलने वाला बालक होता है।

गर्भ में पुत्रादि का ज्ञान

लग्न, चन्द्र, गुरु, रवि ये विषमराशि और विषम नवांश में बली होकर हो तो पुरुष का जन्म, यदि समराशि, सम नवांश में हो तो स्त्री (कन्या) का जन्म समझना चाहिए।

यदि बलवान् गुरु, रवि विषम राशि में हो तो पुरुष का, यदि शुक्र, चन्द्र, मङ्गल समराशि में हो तो कन्या जन्म कहना चाहिए।

पुत्र जन्म योग

लग्न को छोड़कर अन्य विषम स्थान में शनि हो तो पुत्र जन्मकारक होता है। इस प्रकार आधानकाल में ग्रह के बलानुसार पुत्र या कन्या का जन्म कहना चाहिए।

नपुंसक जन्म योग कथन

प्रश्न कालिक या गर्भाधान कालिक कुण्डली में यदि बलवान् विषम राशि में सूर्य चन्द्रमा परस्पर दृष्ट हों अर्थात् सूर्य चन्द्र को देखता हो और चन्द्र सूर्य को देखता हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए यह प्रथम योग है।

यदि विषम राशिगत बली शनि और बुध परस्पर दृष्ट हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह द्वितीय योग है।

यदि विषम राशिगत मंगल समराशि में सूर्य को देखता हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह तृतीय योग है।

यदि समराशिगत मंगल विषमराशिस्थ लग्न और चन्द्र हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह चतुर्थ योग है।

यदि विषम राशिस्थ बुध और समराशिस्थ चन्द्रमा को मंगल देखता हो तो नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह पंचम योग है।

यदि विषम राशि में या विषम राशि के नवांश में लग्न चन्द्र का और बुध हों तो और उन पर शुक्र शनि की दृष्टि हो तो भी नपुंसक का जन्म कहना चाहिए। यह छठा योग है।

यमल योग विचार

लग्न और चन्द्रमा समराशि में हो उस पर बली ग्रह की दृष्टि हो तो गर्भ में मिथुन (यमल) समझना चाहिए।

चन्द्रमा, शुक्र समराशि में हो और गुरु, शुक्र, बुध, लग्न ये विषम राशि में बली या द्विस्वभाव में हो तो भी यमल स्त्री पुरुष समझना चाहिए।

यदि रवि, गुरु मिथुन या धनु में बुध से दृष्ट हो तो पुरुष का, तथा शुक्र, चन्द्र, मङ्गल यदि कन्या या मीन में हो तो दो कन्या का जन्म कहना चाहिए।

लग्नेश भातृ स्थान में हो या उच्च स्थान में हो तो यमल योग अर्थात् दो सन्तान की उत्पत्ति होती है।

गर्भ में तीन बालकों का योग

आधान काल में या जन्म काल में यदि द्विस्वभाव राशि के नवमांश में ग्रह या लग्न हो और मिथुन राशि के नवांश में स्थित बुध लग्न और ग्रहों को देखता हो तो गर्भ में एक कन्या और दो पुत्र कहना चाहिए।

यदि कन्या राशि के नवांश में स्थित बुध पूर्वोक्त स्थिति में विद्यमान ग्रह और लग्न को देखें तो गर्भ में २ कन्या १ पुत्र कहना चाहिए।

यदि मिथुन या धनु राशि के नवांश में ग्रह और लग्न हों तथा मिथुन राशि के नवांश में स्थित बुध लग्न और ग्रहों को देखता हो तो गर्भ में तीन बालक (पुरुष) कहना चाहिए।

यदि कन्या या मीन राशि के नवांश में लग्न व ग्रह हों और कन्या राशि के नवांश में स्थित बुध देखता हो तो गर्भ में ३ कन्याओं को समझना चाहिए। अर्थात् तीन कन्याओं का जन्म होता है।

प्रत्येक मास में गर्भ की स्थिति विचार

गर्भाधान से ७ मास में क्रम से १ कलल (शुक्र शोणित मिश्रण) २ पिण्ड, ३ शाखा (अवयव), ४ अस्थि, ५ त्वचा, ६ रोम और, ७ चेतन्य होते हैं।

अष्टम मास में प्यास, भूख, ९वें में उद्वेग और १०वें मास में पूर्ण पके फल के समान बाहर निकल आता है।

गर्भ के दस मासों का स्वामी

इन १० मासों के स्वामी क्रम से १ शुक्र, २ मङ्गल, ३ गुरु, ४ रवि, ५ चन्द्र, ६ शनि, ७ बुध, ८ लग्नेश, ९ चन्द्र, १० सूर्य होते हैं। इन मासों के शुभाशुभत्व से गर्भ के शुभाशुभत्व समझना चाहिए।

गर्भपात योग

यदि गर्भाधान समय में जो ग्रह दिव्यान्तरिक्षादि उत्पात से हत या पाप ग्रह से पराजित हो तो उस ग्रह के मास में गर्भपतन होता है अथवा लग्न राशि गर्भपतन का कारण होता है।

अथवा आधान कालिक लग्न में शनि मङ्गल हो अथवा शनि मङ्गल की राशि (१०/११/१/८) में चन्द्रमा हो अथवा शनि मङ्गल से दृष्ट चन्द्रमा हो तो गर्भ का पतन होता है।

गर्भपुष्टि ज्ञान

आधान काल में या प्रश्नकाल में होरा "होरेतिलग्नं" अर्थात् लग्न में शुभ ग्रह हो या चन्द्र शुभग्रह से युत हो अथवा लग्न या चन्द्र से ९,५,७,२,१०,४ भावों में शुभग्रह हो अथवा ३,११ भाव में पापग्रह हों अथवा लग्न या चन्द्र पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो प्रसव काल तक गर्भ सुखी अर्थात् सुरक्षित रहता है।

गर्भ सहित गर्भवती मरण विचार

प्रश्नकाल या आधान काल में सूर्य या चन्द्रमा यदि दो पाप ग्रह के मध्य में हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो गर्भ सहित स्त्री का मरण होता है।

लग्न और सप्तम में पाप ग्रह हो उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो अथवा लग्न में शनि तथा क्षीण चन्द्र हो उन पर मङ्गल की दृष्टि हो तो गर्भवती का मरण होता है।

रवि या क्षीण चन्द्रमा द्वादश भाव में और मङ्गल चतुर्थ भाव में हो अथवा दो पाप ग्रहों के बीच शुक्र हो तो इन योगो में भी गर्भवती का मरण होता है।

चन्द्रमा से या लग्न से चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तो गर्भ नष्ट हो तो माता के साथ ही गर्भ नष्ट होता है।

चतुर्थ भाव में मङ्गल १२ में रवि और चन्द्रमा क्षीण हो अथवा मङ्गल लग्न में हो और १२, २ में पाप ग्रह हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तब भी मरण होता है।

सप्तम में रवि लग्न में मङ्गल हो तो शस्त्र से सगर्भ स्त्री का मरण होता है।

गर्भ वृद्धि योग

गर्भाधानकालिक लग्न पर बलवान बुध, गुरु, शुक्र और रवि की दृष्टि हो तो गर्भ पुष्ट होता है अर्थात् गर्भ का पतन नहीं होता।

एवं प्रत्येक मास में मासेश्वर के बल के अनुसार मासेश्वर के स्वभाव और गुणों से युक्त होता है।

तीसरे मास में गर्भिणी स्त्री को दोहद (अनेक प्रकार के वस्तु खाने पीने की इच्छा) होती है। वह मास स्वामी (मासेश) के स्वभाव और लग्न, योगादि से भी समझना चाहिए।

गर्भ समय से प्रसव मास का ज्ञान

यदि आधान काल में चरराशि में सूर्य हो तो १० मास में, स्थिर राशि में हो तो ११वें मास में और द्विस्वभाव में हो तो १२वें मास में प्रसव होता है।

मतान्तर से कहते हैं कि चर राशि का चन्द्र हो तो १०वें में; स्थिर का हो तो ११वें में; द्विस्वभाव का हो तो १२वें मास में प्रसव होता है।

सर्वसम्मत से जन्म राशि ज्ञान

गर्भाधान काल में जिस राशि के द्वादशांश में चन्द्रमा हो उससे उतने संख्यक राशि में चन्द्रमा के जाने पर संभव (१० आदि) मास में प्रसव कहना चाहिए।

प्रसव काल का ज्ञान

गर्भाधान कालिक दिनसंज्ञक या रात्रिसंज्ञक लग्न हो तो राशि के जितने अंश उदित हुए हों उतना ही दिन या रात्रि व्यतीत होने पर प्रसव कहना चाहिए।

जैसे ३० अंश में दिनमान, या रात्रिमान हो, तो लग्न के गतांश में क्या? इस प्रकार त्रैराशिक से दिन या रात्रि गत इष्टघटी का ज्ञान होता है। बृहद् पाराशरादि होराशास्त्र के प्रतिष्ठित ग्रन्थों में भी इस विषय को प्रतिपादित किया गया है।

प्रसवकालिक लग्नादि का ज्ञान

पूर्व कथन से दिन रात्रि ज्ञान करके जन्म के समय में होरादि षड्वर्ग में स्थित लग्न का ज्ञान युक्ति से कहना चाहिये।

इस प्रकार उदय (लग्न) समुदाय (षड्वर्गादि) से दिन (वासर) पक्ष मुहूर्त मास संज्ञक राशि में प्रसव होता है।

इस प्रकार आधान समय में प्रथम प्रसव समय का निश्चय करके ज्योतिषी को जातकोक्त फलादेश का विचार करना चाहिए।

नेत्रहीन योग

यदि आधान में सिंह लग्न रवि और चन्द्रमा हो उन पर शनि मङ्गल की दृष्टि हो तो गर्भस्थ शिशु जन्म काल से ही अन्धा होता है।

उन्हीं (रवि, चन्द्र) को यदि मङ्गल और बुध देखते हों तो नेत्र में फूला होता है।

मूक योग

पाप ग्रह राशि सन्धि में हो, वृषस्थ (उच्चस्थ) चन्द्रमा पर मङ्गल शनि और रवि की दृष्टि हो तो अधिक दिन के बाद बोलने की शक्ति होती है। अर्थात् वह बालक कुछ दिनों के बाद बोलता है।

जड एवं सदन्त योग

यदि समस्त पाप ग्रह राशि सन्धि में हो व चन्द्रमा शुभ ग्रहों की दृष्टि से हीन हो तो जातक जड़ (मूर्ख) होता है।

यदि शनि, मङ्गल बुध के नवमांश में हो तो गर्भस्थ बालक सदन्त (दाँत के सहित) जन्म लेता है।

अधिकाङ्ग योग

लग्न से ९/५ में बुध हो और शेष सब ग्रह निर्बल हो तो २ मुख, ४ हाथ, ४ पैर वाला जातक होता है।

वामन एवं कुब्ज योग

मकर के अन्तिम नवांश में लग्न हो और उस पर रवि, चन्द्र, शनि की दृष्टि हो तो गर्भस्थ बालक वामन (बौना) होता है।

यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा हो उसे मङ्गल और शनि देखते हो तो गर्भस्थ बालक कुबड़ा होता है।

पङ्गु योग

मीन लग्न हो उस पर मङ्गल, शनि और चन्द्र की दृष्टि हो तो गर्भस्थ बालक पङ्गु होता है। ऊपर कहे हुए योगों में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यत्न करते रहने से दोष की निवृत्ति समझना चाहिये।

बिना शिर, पैर, हाथ वे जन्म योग

आधान काल में पंचम भावस्थ द्रेष्काण मंगल से युत हो और शनि, चन्द्र, सूर्य से दृष्ट हो तो गर्भ में स्थित बालक को हाथ से रहित कहना चाहिए।

यदि नवम भावस्थ द्रेष्काण मंगल से युत या उक्त ग्रहों से दृष्ट हो तो बिना पैर का अर्थात् पङ्गु का जन्म होगा।

यदि लग्नस्थ द्रेष्काण मंगल से युत या उक्त ग्रहों से दृष्ट हो तो बिना मस्तक का गर्भस्थ बालक को कहना चाहिए।

इस आधानाध्याय में जो योग कहे गये हैं उनमें जो युक्त हो वे जन्म लग्न से भी समझना चाहिये तथा जो आधान में नहीं कहे गये हैं तथा आगे जन्म या सूतिका में कहे गये हैं उनको भी आधान लग्न से विचार करना उचित ही जानना चाहिए।

लग्न काल के निर्णयार्थ आधान काल कहने के पश्चात् जन्म या सूतिका का प्रतिपादन करते हैं—

लग्नादि से जन्मयोग का ज्ञान

जन्मकाल के समय लग्न में शीर्षोदय राशि हो तो मस्तक से, पृष्ठोदय राशि हो तो पैर और उभयोदय राशि हो तो हाथ से प्रसव (जन्म) होता है।

लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सुख पूर्वक, अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कष्ट के साथ जन्म समझना चाहिए।

प्रसव स्थान का विचार

लग्न में जो नवमांश हो उस राशि के सदृश स्थान में प्रसव होता है अर्थात् बालक का जन्म होता है।

यदि द्विस्वभाव नवांश हो तो मार्ग में तथा स्थिरनवांश हो तो अपने स्थान में अर्थात् सिद्ध हुआ कि चर नवांश हो तो परदेश में जन्म समझना चाहिए।

लग्न में अपना नवांश हो तो अपने घर में अन्य नवांश हो तो अन्यत्र जन्म समझना चाहिए। पितृसंज्ञक आदि ग्रह के बल से वन में जन्म होता है।

अर्थात् पितृ संज्ञक सूर्य शनि ग्रह बली हो तो पिता के घर में, मातृसंज्ञक ग्रह बली हो तो माता के घर में जन्म कहना चाहिए।

सभी शुभ ग्रह नीच राशि में हो तो प्राकार अर्थात् घर के बाहर चहारदीवारी, वृक्ष के नीचे नदी तट में जन्म कहना चाहिये।

यदि सभी ग्रह एक स्थान में होकर यदि लग्न और चन्द्रमा को न देखे तो महावन (निर्जन स्थान) में जन्म होता है।

जल चर राशि लग्न हो उसको जलचर राशिस्थ पूर्ण चन्द्र देखता हो और चतुर्थ लग्न या दशमभाव में हो तो जल में प्रसव होता है।

लग्न में शुभग्रह हो और पूर्ण चन्द्र स्वराशि या जलचर राशि में हो अथवा शुभ ग्रह चतुर्थ भाव में हो या लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो तो जल में प्रसव समझना चाहिए।

वृश्चिक या कर्क लग्न में शनि हो उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो अवट (गड्ढे) में प्रसव होता है।

ऐसा यवन और मणित्थ आचार्यों की सम्मति है।

जलचर राशि लग्नगत शनि को बुध देखता हो तो क्रीडास्थान में, रवि देखता हो तो देवालय में, चन्द्रमा देखता हो तो ऊपर भूमि में प्रसव होता है।

वन चर राशि लग्न हो तो पर्वत, वन, दुर्ग, स्थान में जन्म कहना चाहिए।

एवं द्विपद राशि लग्न में शनि को मङ्गल देखता हो तो शिल्पशाला में, रवि देखता हो तो गोशाला में, राजभवन या देवालय में जन्म हो।

और शुक्र चन्द्रमा देखते हों तो रम्यस्थान में और गुरु देखता हो तो अग्निहोत्र स्थान में जन्म होता है।

सूतिकागृह विचार

जन्मकाल में यदि कर्करशि गत गुरु दशम भाव में हो तो २, ३ या ४ मंजिल के मकान में जन्म होता है।

शुभग्रह यदि शनि के नवांश में ४, १० वें भाव में हो तो असाल (वरामदा रहित) घर में प्रसव कहना चाहिए।

सूतिका गृह में शयन स्थान ज्ञान

यदि जातक के जन्मकाल में मेष, वृष लग्न हो तो घर के पूर्वभाग में, मिथुन लग्न में अग्निकोण में कर्क, सिंह, लग्न में दक्षिण में, कन्या लग्न में नैर्ऋण्य कोण

में, तुला वृश्चिक में, पश्चिम और धनु में वायव्य कोण में, मकर कुम्भ में उत्तर, मीन में ईशानकोण में सूतिका का शयन स्थान होता है।

सूतिका गृह के स्वरूप ज्ञान

जन्म काल में यदि शुक्र बली हो तो नवीन और चित्रयुत गृह में, गुरु बली हो तो दृढ (मजबूत), मङ्गल बली हो तो जला हुआ, रवि बली हो तो अधिक कष्ट से युक्त, चन्द्र बलवान् हो तो नवीन गृह में और शनि बलवान् हो तो प्राचीन सूतिका गृह में जन्म होता है।

सूतिका की शय्या का विचार

जिस प्रकार गृह में मेषादि राशि की स्थिति कही गई है उसी प्रकार शय्या (खटिया) में भी समझना।

जिस स्थान में जो ग्रह हो उस स्थान में उस ग्रह के वस्त्र से निर्मित शय्या पर गलीचा, उल्लोंच आदि आस्तरण कहना चाहिए।

सिरहाने से पौथान पर्यन्त न्यारा करना तथा ग्रह के सदृशचिन्ह का विचार करना। जहाँ द्विस्वभाव राशि हो वहाँ खटिया में न तत्व (नीचे को दबा हुआ) समझना चाहिए।

खटिये के लग्न से ३, ६, ९, १२ भावों को चारों पाँव और शेष राशि शय्या के अन्य अङ्ग समझना चाहिए।

सूतिका का भूमि शयन एवं उपसूतिका ज्ञान

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा अपने नीच में होकर चतुर्थ या लग्न में हो तो भूमि में सूतिका का निवास समझना चाहिए।

चन्द्रमा से लग्न तक जितने ग्रह हो उतनी उपसूतिका सहायक संख्या होती है।

लग्न से आगे सप्तम भाव पर्यन्त जितने ग्रह हो उतनी उप-सूतिका भीतर और सप्तम से आगे लग्न पर्यन्त ग्रह हो उतनी बाहर में उपसूतिकाएँ जानना चाहिए।

उनमें भी जितने शुभ ग्रह हो उतनी सुलक्षणा, सुरूपा, सौभाग्यवती भूषणयुक्ता स्त्री, तथा जितने पाप ग्रह हो उतनी कुरुपा, दुर्भगा और मलिना स्त्री समझना चाहिए।

मिश्र ग्रह बलवान् हो तो मध्यम रूप गुण वाली समझना चाहिए।

इस प्रकार का विचार ग्रह बल के अनुसार करना चाहिए।

दीपक की वर्त्ति व तेल का ज्ञान

पूर्वोक्त विधि से सूतिका गृह में १२ विभागस्थ राशियों में जिस भाग में सूर्य हो उस स्थान पर दीप समझना चाहिए।

यदि चर राशि हो तो दीप को चल तथा स्थिर राशि हो तो स्थिर जानना चाहिए।

लग्न के जितने अंश उदित हो चुके हों उतने ही भाग वत्ती का भी जला हुआ कहना चाहिए।

चन्द्रमा जिस प्रकार पूर्ण या क्षीण हो उसी प्रकार दीप तेल भी पूर्ण या न्यून जानना चाहिए।

अधिक दीप का ज्ञान

यदि जन्म काल में बलवान् सूर्य भौम से दृष्ट हो तो प्रसव काल में अधिक दीप समझना चाहिए।

तथा अन्य ग्रह निर्बल हों तो प्रसव में तृण जलाकर प्रकाश होता है।

प्रसव के समय अन्धकार विचार

यदि जन्म काल में चन्द्रमा शनि के नवांश में या जलचर राशि के नवांश में हो या शनि से युत् चतुर्थ भाव में अथवा शनि से दृष्ट चन्द्र हो तो अन्धकार में जन्म होता है। इसमें सन्देह नहीं।

पिता की अनुपस्थिति में जन्म योग

यदि चन्द्रमा लग्न को नहीं देखता हो तो पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

यदि १० वें भाव से आगे होकर सूर्य चर राशि में हो तो परदेशस्थ पिता के परोक्ष में जन्म समझना चाहिए।

दिन में रवि और रात्रि में शनि यदि मङ्गल से दृष्ट हो तो पिता के परोक्ष में जन्म होता है।

यदि उक्त रवि या शनिश्चर राशि में मङ्गल युत दृष्ट हो तो पिता को परदेश में मृत समझना चाहिये।

सूर्य से ५, ९, ७ भाव पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो पिता को जेल में समझना चाहिए।

यहाँ भी चर राशि हो तो परदेश में, स्थिर हो तो स्वदेश में, द्विस्वभाव हो तो मार्ग में समझना चाहिए।

अन्य ग्रन्थों में जैसे लघु जातक एवं लग्न जातक में भी ऐसा ही कहा गया है।

अर्थात् लग्न को चन्द्रमा नहीं देखता हो तो पिता के परोक्ष में बालक का जन्म कहना चाहिए।

और सूर्य मध्यभ्रष्ट अर्थात् नवें आठवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान में चरराशि (मेष कर्क तुला और मकर) का हो तो उत्पन्न शिशु का पिता विदेश में समझना चाहिए।

कष्ट में प्रसव एवं माता के सुख का विचार

जन्मकाल के समय यदि ७, ९, ५ भावों में पाप ग्रह हो तो कष्ट युक्त प्रसव और यदि १०, ४ भाव में शुभ ग्रह हों तो सुख से प्रसव और अधिक सम्पत्ति प्राप्त होती है।

परजात जन्म योग

यदि लग्न और चन्द्रमा को गुरु नहीं देखता हो अथवा चन्द्र सहित सूर्य को या पाप युक्त रवि और चन्द्रमा को गुरु नहीं देखता हो तो परजात अर्थात् दूसरे से उत्पन्न नवजात को समझना चाहिए।

यदि गुरु, चन्द्र, रवि तीनों नीच राशि में हो तथा शनि लग्न में हो और लग्न, चन्द्रमा, शुक्र, इन पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हों तो भी परजात (अन्य से उत्पन्न) नवजात को समझना चाहिए।

प्रसव समय में मातृकष्ट का विचार

जन्मकाल के समय चन्द्र सहित पापग्रह चौथे, दशवें भाव में हो तो जातक की माता को क्लेश होता है। चन्द्रमा से सप्तम स्थान में पापग्रहों पर मङ्गल की दृष्टि हो तो मरण होता है।

चन्द्रमा से दशम स्थान में पापयुत रवि हो तो माता का मरण होता है तथा शुक्र से ५वें और ९वें स्थान में शनि सहित रवि हो उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो भी माता का मरण समझना चाहिए।

रात्रि में जन्म हो चन्द्रमा से ५/९ स्थान में शनि यदि पापग्रह से दृष्ट हो अथवा दिन में जन्म हो शुक्र से ५/९ स्थान में मङ्गल, पाप से दृष्ट हो तो माता का मरण होता है।

सर्पवेष्टित जन्म योग

लग्न में मङ्गल या शनि का द्रेष्काण हो उसमें पाप ग्रह व चन्द्रमा हो और २, ११ में शुभ ग्रह हो तो सर्प से वेष्टित बालक का जन्म होता है।

माता पिता का सुख योग

यदि जन्म के समय पञ्चम भाव में परिपूर्ण चन्द्रमा गुरु या शुक्र से युत हो और बुध से दृष्ट हो तो माता के लिए अत्यन्त शुभफल देता है।

इसी प्रकार सूर्य अपनी राशि में या स्वोच्च राशि में शुक्र गुरु से युत पंचम भाव में बुध से दृष्ट हो तो पिता को सुख देने वाला होता है।

आयु ज्ञान के अभाव में कुण्डली फल निष्फल होता है। इसलिए आयु ज्ञान के लिए सर्वप्रथम बालारिष्ट को कहते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहों के बल का ज्ञान

यदि जातक का जन्म शुक्लपक्ष और दिन में हो तो विषम राशि में पुरुष ग्रह बलवान् होते हैं। इसी प्रकार कृष्णपक्ष रात्रि में जन्म होने पर सम राशि में स्त्री ग्रह बली होते हैं।

तीन प्रकार के अरिष्ट

नियत, अनियत और योगज तीन प्रकार के अरिष्ट शास्त्रकारों ने बतलाया है, उनमें सर्वप्रथम योगज अरिष्ट को कहा जा रहा है। शेष दोनों (नियत और अनियत) को आगे कहेंगे।

तृतीय वर्ष में अरिष्ट योग

जन्मकालावधि में यदि मंगल की राशि (मेष वृश्चिक) में अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक की मृत्यु तृतीय वर्ष में होती है।

द्वितीय वर्ष में अरिष्ट योग

शनि यदि वक्री होकर मङ्गल की राशि में स्थित हो तथा चन्द्र ८, ६ या केन्द्र में स्थित हो उस पर बलवान मङ्गल की दृष्टि हो तो उत्पन्न जातक मात्र दो वर्ष तक जीवित रहता है।

नवम वर्ष के बाद अरिष्ट योग

यदि जन्म समय में सूर्य चन्द्रमा के साथ शनि हो तो नवम वर्ष के अनन्तर जातक की मृत्यु होती है। यह वाक्य ब्रह्मशौण्ड का है।

एक मास में अरिष्ट योग

यदि जन्म काल में मङ्गल, रवि, शनि मङ्गल की राशि अर्थात् १, ८ में हो तो जातक यमराज से रक्षित होने पर भी १ मास में अवश्य मर जाता है।

एक वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्मकाल में शुक्र की राशि २, ७ में अष्टमस्थ अर्थात् अष्टम भाव में २,७ राशियाँ हों और एक भी पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक १ वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। चाहे उसने अमृत का पान भी किया हो तो भी मृत्यु को प्राप्त होता है।

छठवें वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म के काल में शुक्र, सिंह या कर्क राशि में स्थित हो कर बारहवें, षष्ठ या अष्टम भाव में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो छठे वर्ष में मरण होता है। इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

चौथे वर्ष में अरिष्ट योग

यदि लग्न से ६, ८, १२ भाव में कर्क राशिस्थ बुध, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो ४ वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाती है।

दो मास में अरिष्ट योग

केतु का उदय जिस नक्षत्र में हुआ हो, यदि उसी नक्षत्र में किसी का जन्म हो तो जातक २ माह में मरण होता है।

शीघ्र अरिष्ट योग

यदि मङ्गल की राशि १, ८ या शनि की राशि १०, ११ में दशमस्थ सूर्य बली पापग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मरण होता है, इसमें संदेह नहीं।

जन्माधिपति के द्वारा शारीरिक पीड़ा का ज्ञान

यदि राशीश पापग्रह हो, या पापग्रह से दृष्ट या युत हो तो शरीर कष्ट देता है। यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो अधिक पीड़ा नहीं देता।

सात वर्ष में अरिष्ट का ज्ञान

यदि लग्न में निगड, सर्प, पक्षी, पाशधर संज्ञक द्रेष्काण पापग्रह से युत हो तो जातक का निधन हो जात है। यदि द्रेष्काणेश की दृष्टि न हो तो सप्तम वर्ष में जातक का निधन हो जाता है।

दश या सोलह वर्ष में अरिष्ट का विचार

यदि जन्म काल में राहु १, ४, ७, १० भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो कुछ आचार्यों के मत से १० वर्ष में और कुछ आचार्यों के मत से १६ वर्ष में मरण होता है।

शीघ्र मरण विचार

यदि सूर्योदय काल में जन्म हो और पापग्रह ५, ९, १, ४, ७, १० में हो तथा शुभग्रह ६, ८, १२ भाव में हो तो जातक का शीघ्र मरण होता है।

स्वल्पकाल में मरण योग

यदि नवांश पति राशिपति, लग्नपति ये तीनों अस्त हों तो जातक की अल्पकाल में मृत्यु हो जाता है।

एक, चार, आठ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि चन्द्रमा लग्न से छठे या आठवें भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो शीघ्र ही १ वर्ष के मध्य में मृत्यु हो जाता है।

यदि शुभग्रह से दृष्ट चन्द्र हो तो अष्टम वर्ष में निधन हो जाता है।

यदि शुभ पाप दोनों से दृष्ट हो तो ४ वर्ष में मरण होता है। ग्रहों की अल्पाधिक दृष्टिवशात् अनुपात द्वारा मरण काल का निश्चय करना चाहिए।

एक, छः, आठ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि शुभ ग्रह षष्टाष्टम भाव में वक्रगति वाले पाप ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो १ मास में निधन होता है।

यदि १२, २, ८, ६वें भाव में पाप ग्रह शुभ ग्रह से न देखे जाते हों तो ६ या ८ मास में मरण हो जाता है।

नवम वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म काल में चन्द्रमा, मङ्गल या सूर्य से युत या शुभग्रह से न देखे जाते हो या मिथुन अथवा कन्या राशि में स्थित हो तो जातक का नवम वर्ष में मरण होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

चतुर्थ मास में अरिष्ट का विचार

यदि लग्नेश अष्टम में समस्त पापग्रहों से दृष्ट हो तो ४ मास में निधन करता है। ऐसा मुनिजनों का कथन है।

माता के साथ अरिष्ट का विचार

यदि जन्म काल के समय चन्द्रग्रहण हो और चन्द्रमा पापग्रह के साथ लग्न में या मङ्गल, अष्टम भवन में हो तो माता के सहित जातक का मरण होता है।

यदि सूर्य ग्रहण काल में जन्म हो या पापग्रह से युत सूर्य लग्न में हो और अष्टम भवन में भौम हो तो भी माता के सहित जातक का निधन शस्त्र से अर्थात् आपरेशनादि से होता है।

शीघ्र निधन अरिष्ट योग

यदि क्षीण चन्द्रमा जातक के लग्न में विराजमान हो, एवं पापग्रह १, ४, ७, ८, १० में शुभ ग्रह से न देखे जाते हों तो शीघ्र ही मृत्यु होती है। ऐसा सत्याचार्य का मत है।

शीघ्र अरिष्ट योग

यदि जन्मकाल में सप्तम भाव में सूर्य या लग्न में शनि और मङ्गल हो तो शीघ्र ही निधन होता है।

अथवा अष्टम भाव में शनि या मङ्गल हो और लग्न में सूर्य हो तो शीघ्र मरण या चन्द्र मङ्गल या शनि से युत एवं पापग्रह दृष्ट हो तो शीघ्र निधन होता है।

यदि लग्न, अष्टम, सप्तम भवन में कोई पाप ग्रह हो तथा क्षीण चन्द्रमा द्वादशस्थ हो तो और केन्द्र में कोई भी शुभ ग्रह न हो तो भी शीघ्र ही मृत्यु होती है।

शीघ्र अरिष्ट का ज्ञान

यदि जन्म समय में १, १२, ९, ८ में चन्द्र, सूर्य, शनि, मङ्गल, क्रमेण युत हो या गुरु से अदृष्ट हो अर्थात् गुरु न देखता हो तो जातक का शीघ्र मरण होता है।

यदि लग्न में चन्द्रमा या सूर्य हो और बलवान् पापग्रह पञ्चम, नवम, अष्टम भवन में शुभ ग्रहों की दृष्टि या युति से रहित हो तो जातक का शीघ्र मरण होता है।

नवम वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म समय में शुक्र, सूर्य, शनि से युत हो तथा गुरु से दृष्ट हो तो जातक का नवें वर्ष में मरण होता है।

मातृ अरिष्ट योग

यदि जातक की पत्री में किसी भी भाव में चन्द्रमा, मङ्गल, सूर्य, शनि इन तीनों से दृष्ट हो तो माता का शीघ्र निधन होता है।

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो माता का निधन नहीं होता है।

पितृ अरिष्ट योग

जिस जातक का दिन में जन्म हो और सूर्य, मङ्गल, शनि ग्रह से देखे जाते हों, अथवा पाप ग्रह युत हो तो निश्चय पिता का मरण होता है।

यदि जन्म के समय में सूर्य, मङ्गल और शनि युत हो तथा बुध, गुरु, शुक्र से युत न हो तो जातक के पिता या पितामह का मरण होता है।

पिता के अरिष्ट का योग

यदि जातक का जन्म दिन में हो और सूर्य दो पापग्रहों के बीच में हो, अथवा सूर्य पापग्रह से युक्त हो तो अवश्य पिता का मरण होता है।

यदि जन्म काल में सूर्य की राशि से अष्टम राशि में शनि और मङ्गल शुभग्रह से न देखे जाते हो तो पिता का शीघ्र मरण होता है।

यदि जन्मपत्रिका में चरराशि में सूर्य, पापग्रह से युत हो तो अल्पायु में पिता की मृत्यु विष, शस्त्र या जल से (पानी में डूबने से) होती है।

माता के साथ निधन योग

यदि चन्द्रमा से अष्टम राशि में या नवम में या सप्तम में समस्त पाप ग्रह हो या एक भी हो तो माता सहित जातक का मरण होता है।

जन्म के समय पिता का स्थान

यदि जातक का जन्म दिन में हो और चरराशि में सूर्य, मङ्गल से दृष्ट हो तो जन्म के समय पिता को परदेश कहना चाहिए।

यदि जातक का जन्म रात्रि में हो और चरराशिगत शनि को सूर्य देखता हो तो इस योग में भी जातक का पिता परदेश में रहता है ऐसा फलादेश करना चाहिए।

अर्थात् जन्म लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो पिता का परोक्ष में बालक का जन्म कहना चाहिए और सूर्य मध्यमभ्रष्ट अर्थात् नवें ग्यारहवें और बारहवें स्थान में चरराशि का हो तो उत्पन्न जातक का पिता विदेश में समझना चाहिए।

पिता का निधन योग

यदि जातक का जन्म रात्रि में हो और चरराशि में शनि, मङ्गल से युत हो तो पिता का मरण परदेश में होता है। इसमें संदेह नहीं।

यदि जन्माङ्ग में जिस किसी भी राशि में सूर्य, शनि व मङ्गल से युत हो तो जन्म से पूर्व ही पिता का निधन कहना चाहिए।

माता के साथ निधन योग

यदि जन्मकाल में पापग्रह प्रथम, अष्टम, सप्तम, षष्ठ, द्वादश भवन में हो तो निःसंदेह माता के साथ जातक का निधन होता है।

माता एवं जातक में एक के निधन का ज्ञान

यदि जन्म पत्रिका में ६, ८, भवन में सब पापग्रह हो तो माता जीवित रहती है और बालक का निधन हो जाता है।

यदि लग्न अष्टम, सप्तम में पापग्रह हो तो बालक जीवित रहता है और उसकी माता का निधन हो जाता है।

नेत्र हानि योग

मङ्गल या शनि १२वें भाव में हों तो नेत्र नाशक होते हैं, शनि दक्षिण नेत्र को और मङ्गल वामनेत्र को नष्ट करता है।

रवि और चन्द्रमा दोनों साथ ही १२वें भाव में बैठे हों अथवा ६, ८ में पापग्रह हो तो जातक नेत्रहीन होता है।

अथवा इन दोनों में एक भी द्वादश भाव में हो तो नेत्र नाशक होता है, उनमें रवि दक्षिण नेत्र और चन्द्रमा वाम नेत्र को नष्ट करता है।

यदि राहु लग्न में हो और सप्तम स्थान में सूर्य हो तो जातक नेत्रहीन होता है।

पुनः नेत्र हानि योग

यदि द्वितीय भाव में चन्द्र या बारहवें में सूर्य हो तथा अष्टम या षष्ठ भाव में पापग्रह हों तो जातक नेत्रहीन होता है।

यदि षष्ठ भाव में चन्द्र या अष्टम भाव में सूर्य, शनि द्वादश में या मङ्गल द्वितीय भवन में हो तो इस योग में भी जातक नेत्रहीन होता है।

यदि चन्द्रमा मङ्गल या शनि से युत होकर षष्ठ भाव मेंया अष्टम भाव में हों तो पित्त या कफ के विकार से जातक का नेत्र नष्ट हो जाता है।

यदि अष्टम में स्थिति हो तो दक्षिण नेत्र षष्ठ में स्थित चन्द्रमा हो तो वाम नेत्र नष्ट होता है।

यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो जन्म समय में नहीं; कालान्तर में नेत्र हीनता होती है।

शनि के साथ चन्द्रमा यदि ८, १२ में पापग्रह से दृष्ट हो तो वात विकार से नेत्र नष्ट होता है।

उनमें अष्टमस्थ दाहिने और द्वादशस्थ वाम नेत्र का नाश करता है।

यदि शुभग्रहों से दृष्ट हो तो तत्काल नहीं कालान्तर में नेत्र नष्ट होता है।

एवं चन्द्रमा यदि शनि, सूर्य से युत हो तो नाना प्रकार के रोग से नेत्र में विकार उत्पन्न करता है।

नेत्रहीन योग का वर्णन जातकालङ्कार तथा जातक पारिजात में भी दिया गया है। छात्रों को ध्यान से पढ़कर चिन्तन करना चाहिए।

कर्ण रोग का ज्ञान

जन्मकुण्डली में पापाक्रान्त चन्द्रमा यदि ११, ३-१ में हो तो जातक को कर्ण रोग होता है। यदि पापग्रह की दृष्टि भी हो तो जन्म के समय में ही कर्ण रोग होता है।

यदि नवम और पञ्चम भाव दोनों में पापग्रह हों तो और पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो जन्म समय में ही कर्ण रोग होता है।

नवम में पापग्रह हो तो दाहिने कान में और पञ्चम में हो तो वाम कर्ण में रोग होता है।

यदि ९, ५ में शुभ ग्रह की राशि या शुभ ग्रह से दृष्ट भी हो तो शुभ फल कहना चाहिए।

बृहज्जातक में नवम में वाम कर्ण में और पञ्चम में दक्षिण कर्ण में रोग माना गया है।

अत: 'सुतभे दक्षिणकर्ण, वामं नवमे ग्रहो हन्यात' इस प्रकार निर्विरोध पाठ होना उचित है। इसका अर्थ है कि पञ्चम में ग्रह हो तो दाहिने और नवम में हो तो वाम कान में रोगादि कहना चाहिए।

चन्द्र राशि से कर्ण रोग का ज्ञान

यदि जन्म के अतिरिक्त जो व्यक्ति जिस राशि के चन्द्रमा में रोग प्राप्त करता है उसे ही उस रोग का लग्न समझ कर रोग का विचार करना चाहिए और जन्म कालिक चन्द्रमा से भी विचार करना चाहिए।

इस प्रकार योग कारक ग्रहों से दक्षिण वाम भाग में शुभग्रह चिन्ह करते हैं। यदि वे पापग्रह से दृष्ट हो तो शरीर के उस अङ्ग को विरुद्ध करते हैं।

इन तीनों अर्थात् जन्म, लग्न, जन्मराशि रोगोत्पति काल को ज्ञान कर के शुभाशुभ फल कहना चाहिए।

तीन दिन जीवन योग

जिस जातक की पत्री में मीन राशि के सूर्य और चन्द्रमा तृतीय भाव में हो

तो जन्म से ही व्याधि प्राप्त करके ३ दिन में उसका जीवन सामप्त हो जाता है अर्थात् ३ दिन में उस जातक की मृत्यु हो जाती है।

एक दिन का जीवन योग

यदि चन्द्रमा दशम स्थान में हो और चन्द्रमा से तृतीय नक्षत्र में सूर्य पापग्रहों से युत हो या अकेला ही हो तो जातक का जीवन १ दिन का होता है अर्थात् १ दिन के बाद मृत्यु हो जाती है।

सात दिन का जीवन योग

जिस जातक के चन्द्रमा से सप्तम भाव में मङ्गल, सूर्य दोनों हो तो वह जातक सात दिन तक जीवित रहता है।

रोगारम्भ से अरिष्ट का विचार

यदि जन्म के समय ४, ८ भाव में पापग्रह हों और वे पापग्रह १२, २ में हो तो उस समय में यदि जातक रोगी होता है तो वह १० दिन जीवित रहता है।

यदि रोगारम्भ के समय पञ्चम सूर्य और नवम चन्द्रमा ही हो तो १२ दिन तक जीवित रहता है।

पुनः रोगारम्भ से अरिष्ट

रोगारम्भ काल में यदि त्रिकोण के चन्द्रमा हो अर्थात् ९, ५ में चन्द्र हो, और ४, ८ में सूर्य विद्यमान हो तो वह जातक दुर्व्याधि से युक्त होकर ३ दिन में निधन को प्राप्त हो जाता है।

यदि लग्न से चतुर्थ भवन में चन्द्रमा हो तथा षष्ठ भाव में सूर्य हो तो वह जातक १८ दिन रोग से युक्त होकर निधन को प्राप्त करता है।

यदि चन्द्रमा से ९, ५ में सूर्य हो तो वह जातक रोगारम्भ से २० दिन जीवित रहता है। अर्थात् २० दिन के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है।

यदि रोग कालिक लग्न से अष्टम भाव में सूर्य, शनि और मङ्गल से दृष्ट हो तो उस व्यक्ति का जीवन न होकर मरण होता है।

पुनः जन्माङ्ग से अरिष्ट योग

यदि १, ४, ७, १० में मङ्गल हो, और गुरु केन्द्र में न हो तो मरे हुए बालक का जन्म होता है। यदि जन्म काल सूर्य लग्न में हो तथा गुरु केन्द्र से अन्य स्थान में हो तो जन्म के साथ मरण होता है।

अथवा अष्टम में कोई पापग्रह हो और गुरु केन्द्र से भिन्न स्थान में हो तो भी जन्म के साथ ही मरण होता है।

यदि लग्न या केन्द्र में चन्द्रमा हो और अष्टम में कोई पापग्रह हो तो जन्म के साथ मरण होता है।

यदि जन्म कालीन लग्नस्थ द्रेष्काण से सप्तम राशि में पापग्रह हो और लग्न में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मरण होता है।

एक मास वा सात दिन का आयु योग

जिस जातक के जन्म काल के समय अष्टम भाव में अधिक ग्रह हो तो उसकी आयु एक मास या सात दिन की होती है।

मृत जातक योग

यदि लग्न में शनि हो या अष्टम में भौम हो और गुरु केन्द्र (१/४/७/१०) से अन्य भाव में हो तो मृत बालक का जन्म होता है।

त्रिकोण गत पापग्रह से अरिष्ट योग

जन्म के समय लग्न में जो द्रेष्काण वर्तमान हो अर्थात् जिस राशि का द्रेष्काण हो यदि वह राशि त्रिकोण (५/९) में पाप ग्रह से युक्त हो तो आगे कथित ग्रह अपने समान फल देता है।

यथा—यदि शनि हो तो व्याधि, भौम हो तो मरण, सूर्य हो तो रोग से शरीर में कष्ट होकर मरण होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

यदि जन्म काल में भौम हो और शुक्र केन्द्र में हो तो पुनः भौम लग्नगत राशि में आता है। तब बालक (जातक) का मरण होता है।

शीघ्र निधन योग

यदि जन्म समय गुरु त्रिकोण में हो और लग्न स्वामी लग्न में हो तथा गुरु या जन्म लग्न से केन्द्र में भौम हो तो शीघ्र मरण होता है।

१०८ वर्ष की आयु का योग

यदि जन्म के समय अष्टमभाव या लग्न में कोई भी पापग्रह न हो तथा किसी भी केन्द्र राशि (१/४/७/१०) में गुरु हो तो जातक १०८ वर्ष जीता है।

यदि केन्द्र त्रिकोण अथवा अष्टम भाव पापग्रह से रहित हो तथा गुरु, शुक्र केन्द्र में हो तो जातक १०८ वर्ष जीता है।

१२० वर्ष की आयु का योग

यदि लग्न में शुक्र हो और किसी भी केन्द्र में गुरु हो तथा अष्टम भाव में पापग्रह न हों तो १२० वर्ष जातक जीता है।

यदि कर्क लग्न में गुरु शुक्र हो या गुरु चन्द्रमा से युत कर्क लग्न में हो तथा अष्टम में पापग्रह न हों तो भी उपयुक्त फल होता है।

देवतुल्य आयु योग

यदि केन्द्र, त्रिकोण व अष्टम भाव में पापग्रह न हो तो जातक की देवतुल्य आयु निःसंदेह कहनी चाहिये।

गतायु योग

यदि ८/७/१२/१/९/५ इन भावों में क्षीण चन्द्रमा बली पापग्रह से युत हो तथा शुभग्रहों से अदृष्ट हो तो जातक की आयु समाप्त कहना चाहिये अर्थात् जीवन नहींहोता है।

अनुक्तकाल योगों में निधन समय का विचार

जिन योगों में मरण का समय नहीं लिखा है उनमें योग करने वाले ग्रहों में से जो बली ग्रह हो उसकी राशि में जब चन्द्रमा का संचार हो तब अरिष्ट कहना चाहिए।

अथवा चन्द्रमा पुन: अपनी राशि में या लग्न में आये और पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का मरण होता है। यह विचार एक वर्ष के भीतर होता है।

पाँचवें वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जन्म के समय में सूर्य चन्द्र भौम, गुरु एक राशि में हो या भौम, गुरु, शनि, चन्द्र एक राशि में हो अथवा सूर्य शनि भौम चन्द्रमा एक राशि में हों तो पाँच वर्ष में जातक का मरण होता है।

ग्यारहवें वर्ष में अरिष्ट योग

यदि सूर्य से युत बुध (पाठान्तर से सूर्य चन्द्र से युत बुध) पापग्रहों से दृष्ट हो तो देवता से रक्षित भी जातक का ११वें वर्ष में मरण होता है।

सात वर्ष में अरिष्ट योग

यदि जातक की कुण्डली में लग्न में सूर्य, शनि या भौम हो तथा सप्तम भाव में शुक्र की राशि (२/७) में क्षीण चन्द्रमा गुरु से अदृष्ट हो तो सात वर्ष में जातक का मरण कहना चाहिए।

चतुर्थ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि क्षीण चन्द्रमा केन्द्र में सूर्य से युत हो तथा भौम या शनि से दृष्ट अथवा युत हो तो ४ वर्ष में जातक का मरण होता है। यहाँ (इस योग में) गणित करने की आवश्यकता नहीं होती है।

तीन वर्ष में अरिष्ट योग

यदि कुण्डली में लग्नेश से अष्टम स्थान में अत्यन्त कृश (क्षीण) चन्द्रमा हो और समस्त पाप ग्रहों से दृष्ट और शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो तो तीन वर्ष में जातक का मरण होता है।

नौ वर्ष में अरिष्ट योग

यदि पापग्रह लग्नेश होकर चन्द्रमा के नवमांश में चन्द्रराशि से बारहवें स्थान में हो व पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ९ वर्ष में मरण होता है।

पाँच वर्ष में अरिष्ट योग

यदि पाप ग्रह लग्नेश होकर चन्द्रमा के नवमांश में चन्द्र राशि से बारहवें स्थान में हो या पापग्रहों से दृष्ट राशि से बारहवें स्थान में हो अथवा पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक का ५ वर्ष में मरण होता है।

बारह वर्ष में अरिष्ट योग

यदि राहु सप्तम भाव में सूर्य व चन्द्रमा से दृष्ट हो एवं शुभ ग्रह से अदृष्ट हो तो १२ वर्ष में जातक का मरण होता है।

सात वर्ष में अरिष्ट योग

यदि कुम्भ वा सिंह वृश्चिक लग्न में राहु पापग्रहों से दृष्ट हो तो निश्चित ही ७ वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाती है।

दुर्मुहूर्त में अरिष्ट योग

यदि जातक के जन्म के समय से में प्रथम केतु का उदय हो, पीछे उल्कादि व वायु का निर्घात (आँधी) हो एवं रौद्र व सार्प मुहूर्त में जन्म हो तो भी जातक का मरण होता है।

अल्प समय में अरिष्ट योग

यदि क्षीण चन्द्रमा पापग्रहों से युत हो और राहु से दृष्ट हो तो बिना कारण अल्प समय में जातक का निधन होता है।

प्रत्येक राशि में चन्द्रकृत अरिष्ट योग

यदि जन्म कालीन चन्द्रमा कुम्भराशि के २१वें अंश में हो, या सिंह के ५वें अंश में हो या वृष के नवें अंश में हो तो मरण करता है।

वृश्चिक राशि के २३वें अंश में, मेष के अष्टम अंश में, कर्क राशि के २२वें अंश में चन्द्रमा हो तो निधन कारक होता है।

कन्या राशि के प्रथमांश में, धनु के १८ वें अंश में चन्द्रमा हो तो मरण कारक योग होता है।

कथित अंशों में निधन समय का विचार

जन्मकालीन समय में चन्द्रमा जिस राशि में जितने अंशों में मरण कारक कहा गया है उतने ही वर्षों में यमराज द्वारा रक्षित होने पर भी उस जातक का निधन होता है।

यहाँ जिन अरिष्टों का वर्णन किया गया है। उन अरिष्टों में सब का निधन नहीं होता, किन्तु अरिष्ट भङ्ग योग होने पर इन योगों में भी जातक का जीवन होता है।

प्रत्येक राशि में जिन जिन अंशो में चन्द्रकृत अरिष्ट कहा है; वहाँ अनुपात द्वारा समय का ज्ञान करके ही अरिष्ट कहना चाहिये ।

क्योंकि चन्द्रमा अंश कलादि से युत होता है। यथा—मेष के अष्टम अंश में चन्द्रमा अरिष्टकारक होता है।

कुण्डली में यदि ०/७/१०/२ चन्द्रमा है तो मेष के अष्टम अंश में होने से अष्टम वर्ष में अरिष्ट कारक हुआ।

अष्टम वर्ष में कब मरण होगा यह अनुपात द्वारा जानकर फलादेश कहना चाहिये।

गुरुवश निधन वर्ष का विचार

इस प्रकार प्रयत्न से जातक के राशि स्थान अथवा केन्द्र स्थान का विचार करके अरिष्ट कहना चाहिये।

गुरु जातक का जीवन है इसलिये बृहस्पति की स्थितिवश मृत्यु का विचार करना चाहिये।

यथा—यदि गुरु ३। ४। ५। ७। ९। १०। ११। १ भाव में हो तो क्रम से ५। १०। ४६ २१। १०० (अन्यत्र से ३०) ४०। ६०। ३० (अन्यत्र से ५०) वर्ष तक जातक का जीवन होता है।

राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान् योग

यदि जन्म समय में ३ या ४ ग्रह यदि हो तो अपने उच्च या मूल त्रिकोण में बली हो तो राजवंश में उत्पन्न मनुष्य अवश्य राजा होता है।

तथा ५ या ६ ग्रह यदि उच्च अथवा मूल त्रिकोण में हो तो दरिद्र कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

यदि २, या एक ग्रह उच्चस्थ हो तो धनवान होता है, परन्तु राजा नहीं होता है।

क्रूरकर्मा व सत्कृत राजयोग

यदि केवल पापग्रह उच्च में हो तो क्रूरकर्मा राजा होता है, ऐसा यवनाचार्य का मत है।

परञ्च पापग्रहों से राजयोग में उत्पन्न पुरुष राजा नहीं होता, किन्तु राजा द्वारा सत्कृत होता है, अर्थात् मन्त्री आदि होता है।

नीचकुल में उत्पन्न होने वाले राजयोग

जिन योगों में दरिद्र कुलोत्पन्न भी राजा होता है। उन राजयोगों को शास्त्रव के अनुसार यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

नीच कुलोत्पन्न राजयोगों के बत्तीस प्रकार

यदि जन्म कुण्डली में रवि, मंगल, शनि और गुरु इनमें चारों अथवा ३ यदि उच्च में हो और उन्हीं में से कोई एक लग्न में हो तो १६ प्रकार के योग होते हैं इनमें

नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है यदि भौमादि दो में से उच्च में हो और एक लग्न में हो तथा चन्द्रमा अपने गृह (कर्क) में हो तब भी सोलह प्रकार के राजयोग होते है, ऐसा प्राचीन महर्षियों ने कहा है।

अधमवंशोत्पन्न का राजयोग

लग्न अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तम नवमांश में हो तो तथा चन्द्र छोड़ कर अन्य ४, ५ या ६ ग्रहों से दृष्ट हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

अखिलभूमण्डल पालक योग

जन्म कुण्डली में जन्म समय मेष लग्न में चन्द्र, मङ्गल, गुरु हो तो जातक आसमुद्र पृथ्वी का पालक और समस्त शत्रु दल का संहारक राजा होता है।

विज्ञान कुशल राजयोग

एकादश भाव में चन्द्रमा, शुक्र, गुरु हो, मङ्गल मेष में शनि मकर में, कन्या में बुध यदि लग्न में हो तो निश्चय जातक विज्ञानी राजा होता है।

सद्भूपाल राजयोग

पूर्ण चन्द्रमा यदि कर्क लग्न में तथा बुध सप्तम भाव में छठे में सूर्य, चौथे में शुक्र, दसवें में गुरु और ३ में शनि मंगल हो तो राजा होता है।

यदि कुण्डली में परिपूर्ण चन्द्रमा कर्क लग्न में हो तथा सप्तम भाव में बुध, छठवे भाव में सूर्य, चौथे में शुक्र, दशम में गुरु, शनि व भौम तृतीय भाव में हो तो जातक चन्द्रमा की किरणों के समान शुभ्र चामर तथा राजलक्ष्मी से युक्त सज्जन (श्रेष्ठ) राजा होता है।

अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग

वृष लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो, कुम्भ में शनि, सिंह में सूर्य, और वृश्चिक में गुरु हो तो अधिक सम्पत्ति और वाहन युक्त राजा होता है।

इन्द्र तुल्य राजयोग

यदि कुण्डली में मकर लग्न में शनि, चन्द्रमा मीन राशि में तथा कन्या राशि को छोड़कर बुध के घर में अर्थात् मिथुन में भौम, कन्या में बुध, धनु राशि में गुरु हो तो जातक इन्द्र के समान महिमा पाने वाला होता है।

शत्रु से अजेय राजयोग

यदि कुण्डली में मकर लग्न में मंगल और सप्तम भाव में पूर्ण चन्द्रमा हो तो शत्रुओं से अजेय तथा वेदार्थ का ज्ञाता होता है।

शत्रु को पराजित कर्त्ता राजयोग

यदि अपने उच्च में स्थित सूर्य चन्द्रमा के साथ लग्न में हो तो जातक परमसुन्दर राजा होता है।

जिसके स्मरण से शत्रुओं की स्त्री की शोकाग्नि नयन जल से सिक्त होने पर भी सर्वदा हृदय में प्रज्वलित ही होती है। अर्थात् वह जातक शत्रु को जीतने वाला होता है।

स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग

जन्म कुण्डली में यदि पूर्ण बली बृहस्पति कर्क लग्न में हो, सूर्य दशम भाव (मेष) में हो और वृष में चन्द्र, बुध तथा शुक्र ग्रह हों तो वह जातक अपने भुजबल से पृथ्वीपति होता है।

अधिराजयोग

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा से षष्ठ, सप्तम, अष्ठम स्थानों में सब शुभ ग्रह उदित हो और उनपर पापग्रह की दृष्टि नहीं हो तो अधियोग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला आसमुद्र पृथ्वी के पालन करने वाला राजा होता है, सर्वदा अपने पराक्रम से युक्त रोगहीन, शत्रु के भय से रहित, धीर, सौभाग्यवान् और सुखी होता है।

अपारकीर्तियुत राजयोग

जन्म पत्रिका में मेष लग्न में सूर्य, धनु में गुरु तुला में शनि और चन्द्र दोनों हो तो अति कीर्तिमान राजा होता है।

प्रसन्न राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि वर्गोत्तम नवांश में तीन या चार शुभग्रह केन्द्र में हों, यदि पापग्रह युत नहीं हो तथा अस्त या क्षीण नहीं हो तो राजा होता है।

इन्द्रतुल्य बलशाली राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि जन्मराशीश चन्द्रमा से उपचप (३, ६, १०, ११) में हो और शुभ राशि या शुभ नवांश में केन्द्रगत शुभग्रह हो तथा पापग्रह सब निर्बल हो तो परम प्रतापी इन्द्र के समान बलशाली राजा होता है।

अखण्ड भूपतियोग

पत्रिका में यदि चन्द्रमापरमोच्च में हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो और सब पापग्रह आपोक्लिम स्थान में हो तो जातक राजा होता है।

यशस्वी व समस्त शत्रुहन्ता राजयोग

जन्म पत्रिका में वृष लग्न में गुरु और चन्द्रमा हो, बली लग्नेश त्रिकोण में हो उस पर बलवान् रवि, शनि, मङ्गल की दृष्टि नहीं हो तो जातक शत्रु रहित यशस्वी राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

जन्म पत्रिका में जन्म समय में सब ग्रह अपनी राशि में मित्र के नवांश या मित्र की राशि में अपने नवांश में हो तो जातक सार्वभौम राजा होता है।

देव-दानवों से वन्दित राजा

पत्रिका में सब ग्रह अपने अपने परमोच्च में हो और बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक समस्त सुरासुर से वन्दित त्रिलोकाधिप होता है।

शत्रुरहित राजयोग

पत्रिका में जिस जातक उत्तर (चतुर्थ भाव) में वसिष्ठ (सप्तर्षि गत नक्षत्र), पूर्व (प्रथम लग्न) में बृहस्पति पश्चिम (सप्तम भाव) में शुक, दक्षिण (दशम भाव) में अगस्त्य नक्षत्र हो तो वह शत्रुहीन पृथ्वीपति होता है।

सार्वभौम राजयोग

पत्रिका में यदि पूर्ण चन्द्रमा पर सब ग्रहों की दृष्टि हो तो वह जातक दीर्घजीवी होता है। इस योग में केमद्रुम या अन्य अशुभ फल न होकर जातक दीर्घजीवी राजा होता है।

सगरादि तुल्य राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि निर्मल किरण युत सबल होकर अपने नवांशगत ६ ग्रह उच्च में हो तो जातक सगर, वेन, ययाति के समान चक्रवर्ती राजा होता है।

तपस्वी राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि सब शुभग्रह परिपूर्ण किरण तथा शुभ राशि और शुभ नवांश में होकर लग्न में हो और पापग्रह अस्त (सूर्य से लुप्त किरण) होकर उनके साथ नहीं हो तो जातक राजा होकर वन, पर्वत में जाकर तपस्या करने वाला होता है।

बृहस्पति की बुद्धितुल्य राजयोग

जन्म कुण्डली में सब शुभ ग्रह शुभराशिगत पणफर स्थान में हो और पापग्रह द्विस्वभाव राशि में हो तो जातक शत्रुजेता और बृहस्पति तुल्य बुद्धिमान होता है।

दुर्वार शत्रुमारक राजयोग

जन्म कुण्डली में लग्नेश यदि लग्न में हो अथवा मित्र की राशि में मित्र से दृष्ट हो तो जातक राजा होता है। यदि शुभ राशि लग्न हो तो निष्कण्टक राज भोग करता है।

यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में पूर्ण चन्द्रमा अपने उच्च में हो और सब ग्रहों से दृष्ट हो तो हाथी, घोड़े और पदाति अनेकों सैन्य से युक्त परम यशस्वी राजा का जन्म होता है। जो समस्त पृथ्वी के भार से खिन्न शेष फणिराज के समान प्रजा का पालन करता है। अर्थात् चक्रवर्ती राजा होता है।

अधिक हाथी रखने वाला राजा

जन्म पत्रिका में अति स्वच्छ बिम्ब चन्द्रमार यदिसूर्य के नवमांश में हो और

सब शुभ ग्रह केन्द्र में हो उनको पापग्रहों का योगन नहीं हो तो बहुत हाथी (उपलक्षण से उत्तम उत्तम सवारी) रखने वाला राजा होता है।

स्वकीर्ति से दिशाओं का शुभ्रकर्त्ता राजयोग

यदि चन्द्र, बुध, मंगल ये नीच भिन्न स्थान में अपने अपने नवमांश में हों और १२, ३ भाव में हों तथा अस्त नहीं हो तथा चन्द्रमा सहित गुरु पञ्चम भाव में हो तो संसार में विख्यात कीर्ति राजा होता है।

शत्रुजेता राजयोग

जन्म पत्रिका में नीच और शत्रु के वर्ग से भिन्न स्थान में कोई भी ३ ग्रह अपने नवमांश में पूर्ण बली हो उन पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा पूर्ण निर्मल बिम्ब हो तो जातक शत्रु को जीतने वाला राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

कुण्डली में यदि वर्गोत्तम या स्व नवमांश स्थित चन्द्रमा को बलवान् ग्रह देखता हो तथा लग्न में कोई पापग्रह नहीं हो तो जातक सुन्दर शरीर वाला चक्रवर्ती राजा होता है।

अधिक हाथी वाला राजयोग

कुण्डली में चन्द्रमा यदि जलचर राशि नवमांश में हो तथा शुभग्रह अपने वर्ग में होकर लग्न में हो तथाकेन्द्र में पापग्रह नहीं हो तो जातक बहुत हाथी आदि सवारी रखने वाला राजा होता है।

अपूर्व यशस्वी राजयोग

पत्रिका में यदिपूर्ण चन्द्र मा वर्गोत्तम नवमांश में हो तो जातक परम यशस्वी राजा होता है। जिसके हाथी, घोड़े के खुर के आघात के धूलियों से आच्छादित सूर्य भी प्रात: काल के चन्द्रमा सदृश (निष्प्रभ) हो जाते हैं।

जन्म समय में सब ग्रह योगकारक हो तो जातक चक्रवर्ती होता है। एक, या दो ग्रह योग कारक हो तो मण्डल (प्रान्त या जिला) का अधिपति होता है।

निषाद कुलोत्पन्न राजयोग

अपने उच्च, त्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर कोई भी ग्रह चन्द्रमा को देखता है तो नीच कुलोत्पन्न भी जातक राजा होता है।

महाराज योग

यदि चन्द्रमा अपनी राशि या द्रेष्काण में हो तो जातक राजा होता है। यदि इसी योग में शुभ ग्रह पूर्ण बली हो तो महाराजा होता है।

ग्रामीण राजयोग

जन्म कुण्डली में लग्न में शनि और सप्तम भाव में नवोदित बृहस्पति हो, उन पर शुक्र की दृष्टि हो तो गाँव में जन्म लेने वाला भी राजा (मुखिया) होता है।

अधिक यशस्वी राजयोग

जन्म कुण्डली में शुक्र बुध मंगल तीनों लग्न में और चन्द्रमा से युत गुरु सप्तम भाव में हों उस पर शनि की दृष्टि हो तो महायशस्वी राजा होता है।

नीच कुलोत्पन्न राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि पूर्ण बली बृहस्पति मंगल के नवमांश में हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तथा मेष स्थित सूर्य दशम भाव में हो तो नीच कुलोत्पन्न जातक भी राजा होता है।

जन्म कुण्डली में यदि शुक्र, चन्द्र, सूर्य ये तृतीय भाव में हो मंगल सप्तम में, गुरु नवम में और लग्न में वर्गोत्तम नवमांश हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

देवतुल्य राजयोग

कुण्डली में यदि जन्म समय में देदीप्यमान किरण बृहस्पति, बुध, शुक्र, या चन्द्रमा ये सब या एक भी बली होकर नवम भाव में हो और अपने मित्र से दृष्ट हो तो जातक देव तुल्य राजा होता है।

नीच कुलोत्पन्न राजयोग

यदि कुण्डली में पञ्चम भाव में चन्द्रमा और बृहस्पति हो उन पर पञ्चमेश की दृष्टि हो और मीन में शुक्र हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

लक्ष्मीयुत राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा तृतीय या दशम भाव में हो और गुरु अपने उच्च में हो तो लक्ष्मी युक्त समस्त पृथिवी का राजा होता है।

प्रसिद्ध राजयोग

यदि कुण्डली में अपने उच्च का गुरु किसी केन्द्र में हो और शुक्र दशम भाव में हो तो जातक समस्त पृथिवी का सुप्रसिद्ध राजा होता है।

ब्राह्मणकुलोत्पन्न का राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में पूर्ण चन्द्रमा कर्क में हो तथा बली बुध, गुरु, शुक्र, ये अपने नवमांश में होकर चतुर्थ भाव में हो उन पर सूर्य की दृष्टि हो तो द्विज कुलोत्पन्न मनुष्य राजा होता है।

गौपालक राजयोग

जन्म कुण्डली में अपने मूलत्रिकोणस्थिति सूर्य दशम भाव में हो, शुक्र, गुरु, चन्द्र ये अपने- अपने राशि स्थित होकर ३, ६, ११ वें स्थान में हो तो गायों का पालन करने वाला अर्थात् ग्वाला भी राजा होता है।

सकलनृप पालक राजयोग

पत्रिका में अपने मित्र के नवमांशगत शुभग्रह सप्तमभाव में अपने मित्र से दृष्ट हो और मंगल अपने उच्च में हो तो समस्त भूमि का पालक राजा होता है।

यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में अपने नवमांश में बली होकर नवम भाव में हो, लग्न में शुभ वर्ग या शुभ ग्रह हो उस पर बुध की दृष्टि हो तो परम कीर्तिमान राजा होता है।

कुत्सित राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि मंगल अपने उच्च में हो उस पर रवि चन्द्र और गुरु की दृष्टि हो तो नीच कुलोत्पन्न भी समस्त पृथिवी का रक्षक राजा होता है।

नीचकुलोत्पन्न राजयोग

उक्त राजयोगों में अभिजित् (नक्षत्र या मुहूर्त) में जन्म हो तो नीच कुलोत्पन्न भी परमबलशाली राजा होता है, इसमें सन्देह नहीं।

शत्रुजेता राजयोग

जन्म पत्रिका में कृत्तिका नक्षत्रस्थित चन्द्रमा यदि लग्न में हो तथा गण्डान्त, भद्रा, परिघ या व्यतिपात योग हो तो जातक शत्रुओं को नाश करने वाला होता है।

निराकुल राजयोग

जन्म पत्रिका में लग्न में बुध, सप्तम बृहस्पति कर्कराशिस्थ चन्द्रमा चतुर्थ भाव में और शुक्र दशमभाव में हो तो जातक शासक होता है।

चक्र व समुद्र राजयोग

यदि जन्म पत्रिका में एक राशि अन्तर करके ६ राशि में सब ग्रह हों तो चक्र योग होता है इसमें जन्म लेने वाला राजा होता है।

यदि इसी योग में एक शुभ ग्रह लग्न में हो तो सम्पूर्ण भूमण्डल का राजा होता है।

उक्त योग में ही यदि दो ग्रह लग्न में हो तो समुद्र योग होता है, इसमें जातक राजा होता है।

यदि सब शुभग्रह केन्द्र में हो तो भी जातक राजा होता है।

अधिक सम्पत्तिवान् राजयोग

यदि सब ग्रह ५, ४, ३, १ भाव में हो तो धन पुत्र बन्धु और वाहनों से तथा बहुत नौकरों से युक्त राजा होता है ऐसा यवनादि आचार्यों का मत है।

नगर नामक राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि १०, ७, ४, १ इन सब ग्रह हों तो नगर नामक योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पृथ्वीपति होता है।

प्रशान्त राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि सब ग्रह चतुर्थ, लग्न और सप्तम भाव में तथा मंगल,

रवि एवं शनि ये तृतीय, षष्ठ और एकादश भाव में हों तो जातक न्यायप्रिय राजा होता है। यह राजयोग यवनाचार्यों ने कहा है।

कलश संज्ञित राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि सब शुभ ग्रह ११, ९ भाव में हो तथा सभी पापग्रह दशमभाव में हों तो कलश नामक राजयोग कहा गया है।

पूर्ण कुम्भ नामक राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि ३, ५, ११, भाव में ३ ग्रह, षष्ठाभाव में २ ग्रह और शेष २ ग्रह सप्तम भाव में हो तो यह कुम्भ नामक राज योग होता है।

इस प्रकार जन्म कुण्डली में ऊपर प्राय: नीच कुलोत्पन्न जातक के लिए भी अनेक प्रकार के राजयोग कहे हैं, इसके आगे केवल राजवंशियों के राजा होने वाला योग मुनियों द्वारा कहा गया है।

सर्ववन्दित राजयोग

जन्म कुण्डली में सिंह लग्न में सूर्य, मेष में चन्द्रमा, कुम्भ में शनि, मकर में मंगल हो तो जातक सबका वन्दनीय होता है।

स्थिर लक्ष्मीवान् राजयोग

जन्म कुण्डली में एक बलवान् शुभग्रह लग्न में और अन्य शुभग्रह ९, १, २ भाव में तथा शेष ग्रह ३, ११, ६, १० भाव में हो तो जातक स्थिर लक्ष्मी वाला राजा होता है।

जिसकी विजय यात्रा में हाथियों का समूह अपने मद जल वृष्टि से लोक में मेघ का भ्रम उत्पन्न कर देता है।

अति लक्ष्मीवान् राजयोग

जन्म काल में स्वराशिस्थ बृहस्पति चतुर्थ भाव में और पूर्ण चन्द्रमा नवें भाव में तथा शेष ग्रह १, ३ भाव में हो तो जातक बुद्धिमान्, सब सम्पत्ति और वाहनों से युक्त राजा होता है।

चन्द्रांशतुल्य यशस्वी राजयोग

जन्म काल में अपने उच्च में स्थित चन्द्रमा यदि लग्न में हो, धन भाव में बृहस्पति हो, तुला में शुक्र, कन्या में बुध, मेष में मंगल तथा सिंह में सूर्य हो तो जातक अति यशस्वी राजा होता है।

स्वगुण प्रख्यात राजयोग

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा और रवि दशम भाव में, लग्न में शनि, चतुर्थ में गुरु, शुक्र, बुध, मंगल, ये एकादश भाव में हो तो गुणों से सुप्रसिद्ध राजा होता है।

यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में लग्न में मंगल दशम में शनि और रवि, ७ में गुरु, ९ में शुक्र, ११ वें में बुध और चतुर्थ भाव में चन्द्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला यशस्वी राजा होता है।

पराक्रम धन वाहन से युक्त राजयोग

पत्रिका में यदि पूर्ण चन्द्रमा लग्न से भिन्न केन्द्र में हो तो जातक धन, वाहन और पराक्रम से युक्त राजा होता है।

सर्पराज के तुल्य प्रतापी राजयोग

जन्म समय में यदि शुक्र को बृहस्पति देखता हो तो जातक बहुत वाहनों से युक्त प्रतापी राजा होता है।

राजराजेश्वर राजयोग

यदि जातक के जन्मपत्रिका में जन्म समय में बुध को गुरु देखता हो तो वह जातक राजाओं से वन्दनीय होता है।

शत्रुजित राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि लग्नेश स्वोच्चगत होकर चन्द्रमा को देखता हो तो धन, वाहनों अर्थात् हाथी घोड़ा से युत से शत्रुओं को जितने वाला राजा होता है।

लक्ष्मीपति राजयोग

जन्म कुण्डली में अपने अधिमित्र के नवमांशस्थ चन्द्रमा को यदि शुक्र देखता है तो सदा धन–धान्यसम्पन्न लक्ष्मी का पति राजा का जन्म होता है।

ब्राह्मणकुलोत्पन्न राजयोग

पत्रिका में जन्मराशि का स्वामी बली होकर केन्द्र में हो तो ब्राह्मण कुलोत्पन्न भी राजा होता है। फिर राजकुलोत्पन्न की तो बात ही क्या?।

अंग देशाधिप राजयोग

जन्म कुण्डली में यदि सूर्य अपने अधिमित्र की राशि में हो, उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक अङ्ग देश का राजा धन, धर्म से युक्त होता है।

मगधाधिप राजयोग

जन्म पत्रिका में चन्द्रमा के साथ बुध अपने उच्च में हो तो जातक मगध देश का राजा होता है। जिसके हाथियों के मदगन्ध से सब दिशा सुगन्धित होती है।

शत्रुदमन राजयोग

जन्म पत्रिका में एक भी पूर्णिमा का चन्द्रमा यदि प्रधान (उच्च) बल से युक्त हो तो शत्रु को जीतने वाला राजा होता है।

गोप कुलोत्पन्न राजयोग

जन्म पत्रिका में एक भी लग्नेश पूर्ण बली होकर केन्द्र में हो तो गोपकुलोत्पन्न भी राजा होता है। राजवंशियों की फिर क्या बात है?।

समस्त भूमण्डल का स्वामी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि चन्द्रमा से दशवें भाव में कर्क का बृहस्पति हो तो जातक समस्त पृथ्वी का स्वामी होता है।

कश्मीरमण्डलीय राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि चन्द्रमा के साथ बृहस्पति कर्क राशि में हो तो जातक कश्मीर देश का राजा होता है।

तीन ओर समुद्र से वेष्टित भूमि का राजयोग

रवि से द्वितीयस्थान में यदि बुध, गुरु, शुक्र हो उन पर पापग्रह की दृष्टि या योग नहीं हो तथा अस्त नहीं हो तो जातक ३ दिशाओं से आवृत्त समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का स्वामी होता है।

प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजयोग

स्वच्छकिरण पूर्णिमा का चन्द्रमा यदि राशीश और बली शुभग्रह से दृष्ट हो तो अति सुन्दर स्वरूप, प्रख्यात यश वाला राजा होता है।

शत्रुजित राजयोग

गुरु और शुक्र दोनों यदि धन स्थान में हो तो शत्रुजेता राजा होता है।

द्वीपाधिप राजयोग

जन्म पत्रिका में कर्कलग्न में गुरु और चन्द्रमा हो मीन में शुक्र, तुला में शनि, मेष का सूर्य और मङ्गल अपने वर्ग में हो तो जातक राजा होता है।

त्रिभुवनाधिप राजयोग

जन्म पत्रिका में सब पाप ग्रह अपने नीच या शत्रुराशि में होकर ३, ६ स्थान में हो और बली शुभ ग्रह परमोच्च में होकर केन्द्र में हो, कर्कस्थ चन्द्रमा दशमभाव में हो और रात्रि में जन्म हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

शत्रुजित राजयोग

जन्म पत्रिका में मेष लग्न में रवि, चन्द्र, मंगल हो, वृष में शुक्र शनि, बुध हों; धनुराशिस्थ स्वनवांश में गुरु हो अथवा केवल रवि पूर्ण बली होकर अपने परमोच्च में हो तो शत्रु को जीतने वाला और विद्वान् राजा होता है।

विमल कीर्तिमान् राजयोग

जन्म पत्रिका में शुक्र बुध गुरु पञ्चम भाव में, षष्ठ भाव में सूर्य, अपने उच्च में मंगल, नवमभाव में शनि हो तो धर्मात्मा, यशस्वी और प्रतापी राजा होता है।

प्रसिद्ध यशस्वी राजयोग

जन्म पत्रिका में गुरु से दृष्ट रवि, चन्द्रमा से दृष्ट शुक्र, मंगल से दृष्ट शनि, यदि चरराशि लग्न में हो तो शत्रुजेता यशस्वी राजा होता है।

स्वभुज विजयी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि जातक के जन्मपत्रिका में कन्या लग्न में बुध हो, मीन लग्न में बलवान् बृहस्पति हो, मेष लग्न में मंगल हो, शनि षष्ठ भाव में और शुक्र चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो वह जातक अपने बाहुबल से सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला राजा होता है।

अस्थिर स्वभावी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि बली मंगल मकर लग्न में हो, नवम में शनि, सप्तम भाव में चन्द्रमा सहित सूर्य हो तो जातक अति चञ्चल स्वभाव का राजा होता है।

अजेय राजयोग

जन्म पत्रिका में मकर लग्न में शनि, सप्तम भाव में चन्द्र और बृहस्पति हो, कन्या में बुध यदिशुक्र से दृष्ट हो तो जातक दुर्धर्ष (अजेय) राजा होता है।

द्विज देवभक्त राजयोग

यदि कुण्डली में मित्र से दृष्ट गुरु धनु में हो, लग्न में शुक्र, कर्क में चन्द्रमा हो तो जातक तालाब, देवमन्दिर बनाने वाला ब्राह्मणों का परम भक्त राजा होता है।

सर्ववन्दित राजयोग

जन्म पत्रिका में एक भी स्वच्छरश्मि शुभग्रह उच्च में होकर केन्द्र में हो अथवा केवल पूर्ण बली सूर्य केन्द्र में हो उस पर पञ्चम भावस्थ गुरु की दृष्टि हो तो जातक वन्दनीय भूपति होता है।

स्वबाहुबल से शत्रु को जीतने वाले राजा का राजयोग

जन्म कुण्डली में मंगल शनि रवि षष्ठ या तृतीय भाव में हो, सिंह का गुरु एकादश भाव में हो उन पर शुभग्रह की दृष्टि हो और रवि चन्द्र की दृष्टि नहीं हो तो शत्रु पक्ष को पराजित करने वाला राजा होता है।

कीर्तिमान् राजयोग

जन्म पत्रिका में चन्द्र बुध मंगल ये अपने नवमांशस्थ होकर १२, ३ भाव में हो और नीच राशि में वा अस्त नहीं हों, गुरु और चन्द्र पञ्चम भाव में हो तो परम यशस्वी राजा होता है।

पुष्कल नामक राजयोग एवं फल

जन्म पत्रिका में पूर्ण बली जन्मराशिपति और लग्नेश अधिमित्र की राशि में स्थित केन्द्र में होकर लग्न को देखता हो तो पुष्कलयोग होता है। पुष्कलयोग में जन्म लेने वाला शत्रुजेता यशस्वी राजा होता है।

शतयोजन भूमि का स्वामी

रेवती, पू. फा. उ. फा. मूल या पुष्य में स्थित सूर्य लग्न में हो तो जातक सौ योजन भूमि अथवा देश का राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

यदि कुण्डली में लग्न के नवमांश का स्वामी अपने उच्च में होकर केन्द्र में हो तो जातक राजा होता है। जन्म राशीश या जन्म लग्नेश यदि केन्द्र में हो तो जातक धन सम्पन्न होता है।

वर्धितश्री राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा के साथ शनि केन्द्र में हो तो जातक परजात होकर भी धन वाहनों से परिपूर्ण राजा होता है।

शत्रुजेता राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र बृहस्पति बुध ये द्वितीय भाव में, चन्द्र रवि मंगल ये सप्तम भाव में हो तो जातक शत्रुहन्ता राजा होता है।

विश्व का कल्याण करने वाला राजा

यदि कुण्डली में कुम्भ के अष्टम अंश पर त्रिकोण (५, ९) में चन्द्रमा हो तो समस्त प्रजा का हित साधक राजा होता है।

वीर राजयोग

जन्म पत्रिका में किसी राशि के १५वें अंश पर एक राशि के ५ वर्ग में चन्द्रमा हो तो अपने भुजबल से पृथ्वी को जीतने वाला वीर राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

यदि कुण्डली में उक्त राजयोगों में यदि पूर्णचन्द्रमा पुष्य वर्गोत्तम नवांश, कृत्तिका या अश्विनी में हो वा त्रिपुष्करयोग हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

अतुल्य बलवान् राजयोग

यदि जन्म कुण्डली में पूर्ण रश्मि चन्द्रमा दशम भाव में, बली शुक्र नवम में, शेष ग्रह एकादश भाव में हो तो सर्वश्रेष्ठ पराक्रमी राजा होता है।

अहंकारी राजयोग

जन्म पत्रिका में सब ग्रह यदि चन्द्रमा से उपचय (३, ६, १०, ११) में हो तो मानी समस्त भूमण्डल का राजा होता है।

कुबेर के समान धनी राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि मंगल से गुरु, चन्द्र, सूर्य क्रम से ५, ९, ३ स्थान में हो तो धन में कुबेर तुल्य धन से सम्पन्न राजा होता है।

त्रिसमुद्रपारग राजयोग

पत्री में बुध से यदि तृतीय भाव में सूर्य, चतुर्थ में शुक्र तथा अन्य ग्रह पञ्चम भाव में हो और कोई भी नीच शत्रु राशि में नहीं हो तो तीन समुद्र पर्यन्त पृथ्वीपति होता है।

सिंहासनाधिशायी राजयोग

जन्म कुण्डली में शनि से यदि शुक्र और बुध केन्द्र में हो, शेष ग्रह उच्चस्थ हों तो सिंहासन पर सोने वाला राजा होता है।

अपने बाहुबल से पृथ्वी को जीतने वाला राजा

जन्म पत्रिका में पूर्ण रश्मि लग्नेश से यदि पापग्रह एकादश स्थान में और शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो अपने भुजबल से पृथ्वी के जीतने वाला पृथ्वी का राजा होता है।

समस्त नृपों से वन्दित राजा

जन्म पत्रिका में जन्म राशिपति से ११, ३, ६ में सब पापग्रह हो उन पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो सर्वश्रेष्ठ वन्दनीय राजा होता है।

सुनफादि योग में भी राजयोग का विचार

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से अगले पिछले तथा दोनों केन्द्र में सूर्य से भिन्न ग्रह हों तो क्रम से सुनफा, अनफा, दुरधरा योग होते हैं। इन योगों में राजकुल में जन्म लेने वाला अवश्य राजा होता है।

अतुल कीर्तिमान् राजयोग

जन्म पत्रिका में यदि चन्द्र और बृहस्पति केन्द्र में शुक्र से देखे जाते हो और कोई ग्रह नीच में नहीं हो तो कीर्तिमान राजा होता है।

सार्वभौम राजयोग

यदि जन्म पत्रिका में बली शुक्र अपने नवमांश में होकर लग्न में हो उन पर बुध शनि की दृष्टि हो तो तथा गुरु ५वें हो तो अपने बाहुबल से शत्रुओं को मारने वाला हाथियों से युक्त सार्वभौम राजा होता है।

जातक भङ्ग योग

चाण्डाल सदृशी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि गुरु, केतु अथवा राहु के साथ पापग्रह से देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य निश्चकर चाण्डाल सदृश होता है।

कुण्डली में यदि गुरु अपनी नीचराशि अथवा नीचराशि के नवांशगत हो, तो इस योग में मनुष्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर भी चाण्डाल सदृश हो जाता है।

ब्राह्मण सदृशी योग

जिस-किसी की कुण्डली में केतु, राहु और शनि से युक्त गुरु यदि शुक्र

अथवा बुध से देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त कर शूद्र कुल में उत्पन्न होकर भी ब्राह्मण सदृश होता है।

भिक्षाटन-धनरहित-नित्य लुब्ध योग

जिस-किसी की कुण्डली में मेष राशिस्थ चन्द्र यदि शनि से देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य भिक्षाटन करने वाला होता है।

यदि वह चन्द्र मंगल से देखा जाता हो तो इस योग में मनुष्य धनहीन होता है।

लग्न और चन्द्र यदि शनि से देखा जाता हो, तो इस योग में मनुष्य सदा लुब्ध अर्थात् धन की अपेक्षा वाला होता है।

दास और भिक्षाटन योग

जिस-किसी की कुण्डली में उपरोक्त योग तभी होता है, जब उस पर शुभग्रहों की दृष्टि नहीं होता, केवल पापग्रह की दृष्टि होती है।

कुण्डली में तात्कालिक लग्न का स्वामी मंगल केन्द्र में और शनि यदि लग्न में हो तथा उसको शुभग्रह नहीं देखता हो, तो इस प्रकार के योग में उत्पन्न मनुष्य दूसरे का दास हुआ करता है तथा भिक्षाटन कर जीवन रक्षा कर पाता है।

श्वास क्षयप्लीहगुल्मविद्रधि रोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में पापग्रहों के मध्य में चन्द्र स्थित हो और शनि सप्तमभाव में हो, तो इस योग में मनुष्य श्वास रोग, क्षयरोग, प्लीहा रोग, गुल्म रोग और विद्रधि रोग आदि से पीड़ित होता है।

अङ्ग वैकल्य व तनु शोषण योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य से वेशिस्थान अर्थात् द्वितीय भाव में शनि और दशम भाव में चन्द्र तथा सप्तम भाव में मंगल स्थित हो, तो इस योग में मनुष्य का कोई अङ्ग विकल होता है।

कुण्डली में यदि चन्द्र और सूर्य नवांश चक्र में परस्पर एक-दूसरे की राशि में स्थित हो, तो इस योग के रहने पर मनुष्य का शरीर क्लेश युक्त होता है।

सूखा रोग-अंधापन-विक्षिप्तता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य और चन्द्र सिंह राशि या कर्क राशि में एक साथ हों, तो इस ग्रह स्थिति में मनुष्य को सूखारोग से शरीर पीड़ित होता है।

कुण्डली में यदि सूर्य अष्टम भाव में, चन्द्र षष्ठभाव में, मंगल द्वितीय भाव में और शनि द्वादश भाव में क्रम से स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति के रहने पर मनुष्य उनमें से बलवान् ग्रह के धातु कोप से नेत्रों से हीन होता है।

कुण्डली में यदि लग्नभाव में गुरु और सप्तम भाव में मंगल स्थित हो, तो मनुष्य, इस योग के रहने पर उन्माद (विक्षिप्तता) से ग्रस्त होता है।

उन्माद व स्मृति भ्रंश योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शनि लग्न में, मंगल सप्तमभाव में अथवा त्रिकोण भाव में शनि और मंगल स्थित हों , तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य उन्माद रोग से ग्रस्त, बुद्धि-स्मृति भ्रंश से युक्त होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि लग्न में शनि, व्ययभाव में सूर्य अथवा त्रिकोण भाव में चन्द्र और मंगल स्थित हो, तो इसे आगे में कहा गया है।

पुनः उन्माद बुद्धि योग

पूर्वोक्तानुसार इस योग में उत्पन्न मनुष्य उन्मादी बुद्धि अथवा जड़ बुद्धि (बेवकूफ) वाला अथवा चञ्चल बुद्धि वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में लग्नभाव अथवा त्रिकोण भाव में सूर्य और चन्द्र अथवा शनि और गुरु केन्द्रभाव में हो तथा जन्म के समय शनिवार अथवा मंगलवार हो, तो मनुष्य उन्माद बुद्धि से युक्त होता है।

अथवा कुण्डली में केन्द्र भाव में बुध और चन्द्र शुभनवांश में न होकर पापनवांश में हो, तो इस योग में भी उत्पन्न मनुष्य बुद्धि भ्रम से युक्त होता है।

अन्य वसु (धन) स्त्री भोग करने वाला योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शनि, चन्द्र और सूर्य केन्द्र भाव में स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति में उत्पन्न मनुष्य मूर्ख और दूसरे के धन का भोग करने वाला होता है।

कुण्डली में भाग्येश (नवमेश) द्वादश स्थान में और व्ययेश द्वितीय (धन) स्थान में और तृतीय स्थान में पापग्रह स्थित हों, तो इस प्रकार 'केमद्रुम योग' में उत्पन्न मनुष्य कुभोजन (अखाद्य) करने वाला, दुष्कर्मरत और परायी स्त्री में गमन करने वाला होता है।

कुलनाशक-अल्पायु-भिक्षुक योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि लग्नेश, अपनी नीच राशि में अथवा नीच राशि के नवांश में तथा पापग्रह षष्ठ और अष्टम भाव में एवं मान्दि (गुलिक) लग्न में स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य अपने कुल का नाशक होता है।

यदि उपरोक्त ग्रहों पर शुभग्रह की दृष्टि का भी अभाव हो, तो मनुष्य अल्पायु होता है।

यदि सभी ग्रह अपनी-अपनी नीच राशि या शत्रु राशि में होकर दशमभाव को छोड़कर अन्य भावों में स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति में मनुष्य निश्चयकर भिक्षुक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

भिक्षाशनी-दुःखित देहभोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि द्वादशभाव में लग्नेश और दशमभाव में चन्द्रमा, मंगल और अन्य पापग्रहों के साथ स्थित हो, तो इस ग्रह योग में उत्पन्न मनुष्य अभिशप्त व परदेश में रहने वाला, भिक्षा से जीवन-यापन करने वाला और पीड़ित शरीर वाला होता है।

अपस्मार (मृगी) रोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि षष्ठभाव अथवा अष्टमभाव शनि और मंगल से युक्त हो, तो इस योग में मनुष्य अपस्मार (मृगी) रोग से युक्त होता है।

कुण्डली में यदि षष्ठभाव, द्वादशभाव और अष्टम भाव, इन भावों में पापग्रह स्थित हों अथवा गुरु केन्द्रभाव में परिधि संज्ञक अप्रकाशक ग्रह से युक्त होकर स्थित हो, तो भी इस योग के रहने पर मनुष्य अपस्मार (मृगी) रोग का शिकार होता है।

'गदा' नामक योग अपस्मार रोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सभी पापग्रह अष्टमभाव में और चन्द्र व शुक्र केन्द्र भाव में स्थित हों, तो इस प्रकार के 'गदा' नामक ग्रहयोगों में उत्पन्न मनुष्य अपस्मार (मृगी) रोग से सन्तप्त होता है।

यहाँ 'गदाख्य योग' को आश्रय योग कथित गदायोग नहीं समझना चाहिए।

चाण्डाल योग-कुलाचार-सत्कर्महीन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि बुध, चन्द्र और शुक्र एक साथ केन्द्रभाव में और लग्नभाव में राहु की स्थिति हो, तो यह चाण्डाल योग होता है। इस प्रकार के ग्रहयोगों में उत्पन्न मनुष्य अपने कुल के आचार-विचार या मर्यादा से रहित और असत् या बुरा कर्म करने वाला होता है।

वाग्दोष-परिभ्रंश योग

जिस-किसी की कुण्डली में दशमभाव अथवा द्वितीय भाव में यदि पापग्रह स्थित हो और वह शुभग्रह की युति और दृष्टि से रहित तथा गुरु बलहीन और नीचादि में स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य की वाणी दोषयुक्त और वह धर्मादि से हीन होता है।

कुलघ्न आदि योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि नवमेश पापग्रह के साथ अन्त्य (व्यय) भाव में तथा लग्नेश सूर्य के साथ स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य कुलघ्न अर्थात् कुल का नाशक होता है।

इस प्रकार उपरोक्त योग में शुभग्रह की दृष्टि अथवा युति का भी यदि अभाव हो, तो इस स्थिति में मनुष्य अपने पुत्र, स्त्री, धन आदि का भी नाश करने वाला होता है।

कुलध्वंस-विदार योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि केन्द्र भाव में शुभ और पाप अर्थात् मित्र ग्रहों की स्थिति-प्रभाव हो तथा चन्द्र लग्नेश से भी दृष्ट हो और वह शनि के नवांशगत अथवा शनि से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य अपने कुल का नाश करने वाला और भार्याहीन जीवन जीने वाला होता है।

गृह से बहिष्कृत-स्त्री-पुत्रहीन-मूर्ख योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि केन्द्रभाव में शनि और लग्न भाव में चन्द्र, तथा व्ययभाव में गुरु की स्थिति हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य भीख माँगने वाला, घर से बहिष्कृत और स्त्री-पुत्र के साथ गुणों से हीन अथवा होता है।

अति हीन वृत्ति योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा से पञ्चम स्थान अथवा द्वितीय स्थान में लग्नेश स्थित हो अथवा अष्टम भाव में पापग्रह और दशमभाव में चन्द्र स्थित हो, तो इस ग्रह योग में मनुष्य अतिनीच-हीन अथवा निन्द्य वृत्ति से जीवन यापन करने वाला होता है।

जन्मभूमि भ्रष्ट-भाग्यहीन योग

जिस-किसी की कुण्डली में लग्नेश स्थित स्थान से अष्टमस्थान, द्वादश स्थान और षष्ठ स्थान; इन स्थानों में पापग्रह स्थित हों, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति से युक्त मनुष्य अपने जन्मस्थान से बहिष्कृत जीवन जीने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि गुरु अपनी नीच राशि अथवा शत्रुराशि के नवांश में और शनि गुरु के नवांश में स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रहस्थिति में मनुष्य निश्चयकर स्त्री-पुत्रहीन और अति दुःखी तथा रोग से ग्रस्त भाग्यहीन होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी उच्चराशि में होकर भी अपनी नीच राशि के नवांश में सूर्य स्थित हो, तो इस ग्रह स्थिति में उत्पन्न मनुष्य राजपुत्र होकर भी नीचता को प्राप्त होता है। इस योग में यदि वह सूर्य यदि पापग्रह से दृष्ट लग्न में स्थित हो, तो उपरोक्त फल अर्थात् मनुष्य राजपुत्र अर्थात् राजुकमार होकर भी निश्चय ही नीच जैसा व्यव्रहार कर्म वाला होता है।

राज योग भङ्गार्थ योग

जिस-किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अपनी नीचराशि तुला के दस (१०) अंश में स्थित हो, तो इस स्थिति के प्राप्त रहने पर मनुष्य सहस्र या हजार राजयोगों के रहने पर भी हीनता को प्राप्त हो जाता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शुक्र भी नीच राशिगत हो, तो मनुष्य के

राजयोग का विनाश हो जाता है तथा जन्म के समय उल्का, पात आदि अप्रकाश ग्रह लग्न में स्थित होकर राजयोग को नष्ट करते हैं।

परप्रैष्य (दूत) योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शुक्र अपनी नीच राशि अथवा शनि के नवांश का होकर व्ययभाव में स्थित हो और सूर्य व चन्द्र सप्तम भाव में शनि से देखा जाता भी हो, तो इस ग्रह स्थिति को प्राप्त रहते उत्पन्न मनुष्य निश्चय ही दूसरे की आज्ञा पालन करने वाला 'दूत' होता है।

फटे-चिथड़े वस्त्र और बन्धन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्षीण अवस्था में हो, शुक्र सप्तमभाव में और शनि लग्न भाव में स्थित हो, तो इस ग्रहस्थित को प्राप्त रहते उत्पन्न मनुष्य भ्रष्टावस्था अर्थात् फटे-पुराने चीथड़ा वस्त्र पहनने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि लग्न में शनि और दशमभाव में चन्द्रमा हो तथा शुक्र से देखा जाता हो,तो मनुष्य, इस योग में बन्धन भोगने वाला अर्थात् कैदखाना (जेल, कारागार) की यात्रा करने वाला होता है।

मन्द-अक्षि रोगी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि व्ययभाव में चन्द्र अथवा सूर्य हो अथवा शनि त्रिकोण भाव में और सूर्य सप्तमभाव अथवा अष्टमभाव में हो, तो मनुष्य इन ग्रहयोगों में उत्पन्न होकर मन्दाक्षि रोगी अर्थात् मन्द दृष्टि युक्त रोग वाला होता है।

कुण्डली में यदि ये सभी ग्रह अपनी नीचराशि या शत्रुराशि के नवांश में हों, तो भी नेत्र रोग, मन्ददृष्टि रोग वाला मनुष्य होता है।

अन्धा योग

जिस-किसी की कुण्डली में पञ्चमभाव और चतुर्थ भाव में पापग्रह स्थित हों, विशेष रूप से चन्द्र अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो, तो इस योग की प्राप्ति से मनुष्य अन्धा होता है। यदि ये ग्रह पापग्रहों द्वारा देखा भी जाता हो, तो अन्ध और यदि शुभग्रहों से देखा जाता हो,तो किसी भी प्रकार की दृष्टि दोष नहीं होता है।

विकलाङ्गता-जाति भ्रष्टता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र दशम भाव में और सप्तमभाव में बुध तथा द्वितीय भाव में शनि स्थित हो, तो मनुष्य विकलाङ्ग होता है।

कुण्डली में उपरोक्त ग्रह अपनी नीच या शत्रु राशि के नवांश गत हों तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य निश्चय कर अपनी जाति से भी भ्रष्ट-पतित होता है।

कुष्ठ रोगी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा धनु राशि में होकर उसके मध्य नवांश (सिंह) में स्थित हो अथवा चन्द्र अन्य किसी भी राशि में होकर मकर, कर्क या वृष राशि के नवांश में स्थित हो और शनि और मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो इन योगों में मनुष्य निश्चय कर कुष्ठ रोगी होता है। लेकिन चन्द्र यदि शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट भी हो, तो मनुष्य उक्त योगों में कुष्ठ रोगी नहीं होता है।

गुल्म और कण्ठ रोगी योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र कर्क, कुम्भ, वृश्चिक आदि राशि में से किसी के नवांश में मान्दि के साथ स्थित हो, तो मनुष्य इस योग में गुल्म (वायु-गोला) रोग का शिकार होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र चतुर्थ भावस्थ होकर कर्क राशि या कुम्भ राशि या वृश्चिक राशि के नवांश में पापग्रह से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोगों में उत्पन्न मनुष्य दाँत और कण्ठ का रोगी होता है।

उन्माद (बाबलापन) क्रोधी-कलहप्रिय योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि व्ययभाव में चन्द्र राहु सहित पापग्रह के साथ तथा शुभग्रह अष्टमभाव में स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग की स्थिति प्राप्त रहने पर उत्पन्न मनुष्य सदा कलह करने वाला, क्रोधी और बावलापन से युक्त होता है।

हृदयशूल-भाग्यहीनता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र पापग्रह से युक्त अथवा उसके विपरीत शुभग्रह से युक्त वृष या कर्क राशि में स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य नित्य हृदय-शूल (दर्द) से युक्त होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि उन्मण्डल में अर्थात् लग्न अथवा सप्तमभाव में चन्द्र और मंगल पापग्रह से युक्त तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो इस योग में भी मनुष्य नित्य हृदयशूल से ग्रस्त होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सप्तम भाव में चन्द्र और मंगल स्थित हो, तो मनुष्य नित्य हृदयशूल से पीड़ित रहता है।

जिस-किसी की कुण्डली में केन्द्रभाव में स्थित शनि, जिससे लग्नभावस्थ गुरु अथवा चन्द्र अथवा सूर्य देखा जाता हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग की प्राप्ति की स्थिति में उत्पन्न मनुष्य निश्चयकर भाग्हीन होता है तथा उसके द्वारा स्वोपार्तित धन का भी चोर होता है , ऐसा ज्योतिषजन कहते हैं।

ज्ञान धनादि हीन-परान्नभुक्-रुग्णदेह-कलहप्रिय योग

जिस-किसी की कुण्डली में व्ययभाव में नवमेश और केन्द्र भाव में पापग्रह

स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य निश्चयकर ज्ञान, धन, बुद्धि आदि से रहित होता है। यदि वे शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो मनुष्य दूसरों के अन्न को खाने वाला, रोगी शरीर वाला और कलह करने वाला होता है।

संस्कारहानि योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि गुरु केन्द्र में स्थित हो, तो इस योग के रहने पर यह मानना चाहिए कि मनुष्य के पिता ने उसके जन्म के समय जातकादि संस्कार नहीं किया है अथवा केन्द्र भावस्थ गुरु यदि शुभग्रह की दृष्टि अथवा युति से रहित हो, तो इस योग के रहने पर यह जानना चाहिए कि मनुष्य ने पिता के मरने के समय, उसके ऊर्ध्व कर्मादि संस्कार नहीं किया है।

वाहन से भयप्रद योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि मंगल के साथ चन्द्र केन्द्रभाव में अथवा अष्टम भाव में स्थित हो अथवा चतुर्थ भाव में क्षीण चन्द्र तथा अष्टम भाव में कोई भी ग्रह स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोगों के रहने पर उत्पन्न मनुष्य को वाहन आदि से भय होता है, ऐसा ज्योतिषजन कहते हैं।

शारीरिक उष्णता और जल में पिता मृत्यु योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चतुर्थ भावस्थ सूर्य पापग्रहों से युक्त और देखा जाता हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य का शरीर प्राय: गरम अनुभव होता रहता है तथा वह स्वस्थ और सुखी होता है, ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषजन कहते हैं।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य स्थित स्थान से नवमभाव मे चन्द्र स्थित हो, तो इस प्रकार इस ग्रहयोग में मनुष्य के पिता की मृत्यु जल में कहना चाहिए।

पिता की जल में मृत्यु योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि मीन राशि में सूर्य और चन्द्र स्थित होकर पापग्रह से देखा जाता हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य के पिता की मृत्यु जल में जाननी चाहिए।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि मंगल और राहु से युक्त शनि अथवा चतुर्थ भाव में स्थित शनि हो, तो भी इन दोनों योगों में मनुष्य के उत्पन्न होने से उसे जल का भय कहना चाहिए।

द्विज (ब्राह्मणादि) प्रहर्ता-कर्ण रहित-शिशुघ्न योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच (कन्या) राशि में होकर शुक्र भाग्य (धर्म, नवम) भाव में पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य द्विज जाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) को मारने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच राशि में स्थित शुक्र राहु के साथ स्थित हो तो इस स्थिति में मनुष्य कर्ण (कान) से रहित होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि शुक्र दशम भाव में स्थित होकर मंगल से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य निश्चय कर शिशुओं को मारने वाला होता है।

शिशुघ्न और गोमृग जाति हन्ता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच राशि में स्थित गुरु अथवा सूर्य केन्द्रभाव में होकर पापग्रहों से युक्त हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में मनुष्य शिशु को मारने वाला होता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि केन्द्रभाव में पापग्रह से युक्त और शुभग्रह से दृष्ट अथवा अष्टमभाव में शुक्र स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रह योग के रहते उत्पन्न मनुष्य गाय, मृग, आदि को मारने वाला होता है।

नित्य पक्षिहन्ता योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि दशमभाव में स्थित चन्द्र और बुध पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा नीच राशि के नवांशों में शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोगों में मनुष्य निश्चय कर नित्य (सदा) ही पक्षियों का शिकार करने वाला होता है।

गलान्तमृत्यु और वामनयनहीन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच (मकर) राशि का गुरु अष्टम स्थान में स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रहयोग में उत्पन्न मनुष्य का गला दबाकर या घोंट कर मरण होता है, ऐसा ज्योतिषजन कहते हैं।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्रमा, शुक्र के साथ व्ययभाव अथवा सप्तम भाव में स्थित हो, तो इस प्रकार की ग्रह स्थिति के रहते उत्पन्न मनुष्य अपने वाम नेत्र से रहित होता है।

शिथिली भय-कृकलास भय योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अष्टम अथवा त्रिकोण भाव में सूर्य स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य के घर में शिथिली (कुचलैड़, एक प्रकार का जहरीला कीट) का भय रहता है।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि अष्टम अथवा त्रिकोण भाव में शनि अथवा केतु अथवा शनि के साथ केतु स्थित हो, तो इस प्रकार के ग्रह योग में मनुष्य के घर में कृकलास (छिपकली) का भय कहना चाहिए।

कौल्यादि पातित्य-कूर्म भय-दंशभय-स्त्रियों के निद्रा से भय योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थान अष्टम या त्रिकोण भाव में राहु स्थित हो, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य के घर में कुत्ता, सुअर आदि से अपवित्रता का होना, श्रेष्ठ ज्योतिषजन कहते हैं।

यदि उन (अष्टम भाव अथवा त्रिकोण) भावों में से किसी में मंगल हो, तो घर में कछुए का भय, बुध हो तो दंश (काटने वाले कीटों) का भय, शुक्र हो, तो घर में स्त्रियों के शयनादि से उत्पन्न अव्यवस्था से भय और यदि उन स्थानों (अष्टम या त्रिकोण) भावों में से किसी में शनि हो, तो मनुष्य के घर में अन्य लोगों के शयन आदि करने से उत्पन्न अव्यवस्था से भय कहना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त स्थितियों में ग्रहों के बलाबल को विचार कर अपने बुद्धि और अनुभव के अनुसार कम या अधिक भय, अपवित्रता आदि के विषय में ज्योतिषजनों को कहना चाहिए।

स्त्री गमन योग

जिस-किसी की कुण्डली में लग्न से सप्तम भाव में यदि सूर्य स्थित हो, तो मनुष्य बन्ध्या स्त्री का गमन करने वाला होता है। सप्तम भाव में यदि चन्द्र या चन्द्र की राशि हो, तो समान स्त्री से सम्भोग कहना चाहिए। मंगल वहाँ हो, तो रजस्वला स्त्री और बन्ध्या स्त्री दोनों में सम्भोग करने वाला मनुष्य होता है।

वहाँ बुध के होने पर मनुष्य वेश्या, हीन जातियों की स्त्री या वणिक् स्त्री आदि से सम्भोग करने वाला हो। यदि वहाँ गुरु हो, तो ब्राह्मणी स्त्री से; शुक्र के होने से गर्भवती स्त्री से, शनि और केतु आदि के होने से रजस्वला या जाति हीन स्त्री से गमन कहना चाहिए। यदि उस सप्तमभाव में राहु हो, तो गर्भिणी स्त्री से सम्भोग और चन्द्र के होने पर काली और कुबरी स्त्री से सम्भोग कहना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त फल ज्योतिषों को ग्रहों की नीचादि स्थिति और बलाबल का विचार कर कहना चाहिए। इस तरह का फल प्रायः नीचादि में स्थित या बलहीन ग्रह के रहने पर ही घटित होते देखा गया है।

सम्भोग और सम्भोग स्थान योग

जिस-किसी की कुण्डली में उपरोक्त प्रकार जो स्त्रियों में गमन करना कहा गया है, उसी प्रकार चतुर्थभाव में स्थित ग्रह से भी कहना चाहिए। लेकिन चतुर्थभावस्थ ग्रह के अनुसार मनुष्य के द्वारा गमन करने का स्थान विशेष रूप से कहना चाहिए।

इस प्रकार सूर्य आदि ग्रह जिस-किसी की कुण्डली में यदि चतुर्थभाव में हो,

तो उस स्थित ग्रह के अग्रकथितानुसार संगम या गमन या सम्भोग का स्थान या घर कहना चाहिए। यथा चतुर्थ भाव में सूर्य हो, तो वन में, चन्द्र से घर में, मंगल से एकान्त प्रान्त स्थित घर में, बुध से विहार स्थान में, गुरु से देवालय, मन्दिर आदि और जलाशय योग्य भूमि में, शुक्र से विष्णु या शिव स्थान में और शनि से दुर्ग या जीती गई जलप्राय भूमि में मनुष्य द्वारा सम्भोग कहना उचित है।

पशुसङ्ग या समान सम्भोग योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि प्रथमभाव, चतुर्थभाव, सप्तमभाव और दशमभाव, इन चारों केन्द्र संज्ञक भावों में पापग्रह स्थित हों तो मनुष्य पशुओं के साथ मैथुन करने वाला होता है। यदि तीन उक्त भावों में पापग्रहों की स्थिति हो, तो मनुष्य पशु की तरह से सम्भोग करने वाला होता है।

स्त्रियों के स्तन आदि स्वरूप योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सप्तम भाव में मंगल हो, तो स्त्री कृश (दुबली) स्तन वाली सम्भोगार्थ प्राप्त होती है। यदि सप्तमभाव में शनि, राहु या केतु हो, तो लम्बे स्तनों वाली स्त्री सम्भोगार्थ प्राप्त रहती है। यदि सप्तम भाव में सूर्य हो, तो कड़े या कठोर या ऊँचे स्तनों वाली स्त्री सम्भोगार्थ प्रस्तुत रहती है। यदि चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र में से कोई ग्रह सप्तम भाव में हो, तो मनुष्य से सम्भोगार्थ कोमलाङ्गी उत्तम या सुन्दर दर्शनीय स्तनादि अङ्गों वाली स्त्री होती है।

ग्रह स्थिति योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र क्षीण अर्थात् अमावस्या के पास का हो, तो घर पुराना व जीर्ण और चन्द्र यदि बलयुक्त अर्थात् पूर्णिमा के समीप का हो, तो घर दृढ़ और नवीन कहना चाहिए। यदि शनि राहु या केतु दुःस्थानों (६-८-१२) में हो, तो उस घर में गर्मी अधिक अनुभव होती है आदि नियमपूर्वक कहना चाहिए।

द्विज-देवतार्थ धन योग

जिस-किसी की कुण्डली में यदि द्वितीयेश और एकादशेश ये दोनों ही लग्नेश के मित्र हों, तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य के धन निश्चय पूर्वक देवता, ब्राह्मण के उपयोग में व्यय होता है, ऐसा कहना चाहिए।

विंशोत्तरी महादशा जन्मनक्षत्र से दशेश ज्ञान प्रकार

जन्म नक्षत्र की संख्या में से २ घटाकर शेष में ९ से भाग दें, एकादि शेष से सूर्यादि दशेश जानना चाहिए। यथा १ शेष से सूर्य, २ शेष से चन्द्र, ३शेष से मंगल, ४ शेष से राहु, ५ शेष से गुरु, ६ शेष से शनि, ७ शेष से बुध, ८ शेष से केतु ९ या ० शेष से शुक्र की दशा समझनी चाहिए।

विंशोत्तरी दशा ज्ञानार्थ महादशान्तर्दशा चक्र

सूर्य महादशा वर्ष ६
कृत्तिका उत्तरा फा. उत्तराषा. भरणी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
रवि	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
भौम	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०

चन्द्र महादशा वर्ष १०
रोहिणी हस्त श्रवण
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
चन्द्र	०	१०	०
भौम	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
रवि	०	६	०

भौम महादशा वर्ष ७
मृगशिर चित्रा धनिष्ठा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चन्द्र	०	७	०

राहु महादशा वर्ष १८
आर्द्रा स्वाती शततारका
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
रवि	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
भौम	१	०	१८

गुरु महादशा वर्ष १६
पनुर्वसु विशाखा पूर्वाभाद्रपदा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
भौम	०	११	६
राहु	२	४	२४

शनि महादशा वर्ष १९
उत्तराभाद्रपदा पुष्य अनुराधा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
रवि	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
भौम	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२

बुध महादशा वर्ष १७
आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	१०	६
चन्द्र	१	५	०
भौम	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	९

केतु महादशा वर्ष ७
मघा मूल अश्वनी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७

शुक्र महादशा वर्ष २०
पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा भरणी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	३	४	०
सूर्य	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
भौम	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०

ग्रहदशा वर्ष और भुक्त भोग्य वर्ष ज्ञान प्रकार

विंशोत्तरी दशा क्रम में सूर्य की दशा वर्ष ६, चन्द्र की १० मंगल की ७, राहु १८, गुरु १६, शनि की १९, बुध की १७, केतु की ७ और शुक्र की २० वर्ष की होती है।

अब जन्म नक्षत्र वश भयात व भभोग की गणना कर भयात में जन्म नक्षत्र वश ज्ञात दशेश ग्रह की दशा वर्ष से गुणा कर भभोग से भाग देने पर जो लब्धि होती है, उसे दशा वर्ष और शेष में १२ से गुणा कर भभोग से भाग देने पर लब्धि मास; इसी तरह पूर्वोक्तानुसार वर्ष, मास, दिन, घटि और पल प्राप्त वर्षादि को दशा वर्ष से घटाने पर भोग्य वर्षादि हो जाता है।

विंशोत्तरी दशा क्रम जानने का प्रकार

विंशोत्तरी दशा क्रम में कृत्तिकादि भरणी पर्यन्त २७ नक्षत्र (अभिजित् को छोड़कर) तीन आवृत्तियों में क्रम से सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र आदि ९ ग्रहों के कहे गए हैं। दशा अथवा अन्तर्दशा और उसके स्वामियों का नाम और वर्षादि संख्या का क्रम पूर्वोक्तानुसार जानना चाहिए।

पुनः अन्तर्दशा ज्ञान प्रकार

अपनी प्राप्त दशा वर्ष को ३ से गुणा कर प्राप्त फल में जिस ग्रह की अन्तर्दशा लानी हो, उसकी दशा वर्ष से पुनः गुणा करके ३० से भाग देने से अन्तर्दशा वर्ष, मास, दिन आदि में प्राप्त होता है।

सूर्यान्तर्दशा फल

देशान्तरवास, बन्धु वियोग, दुःख, मनोद्वेग, रोग, भय, चोर पीड़ा, सञ्चित धन का नाश होना आदि सूर्य दशा का फल कहा गया है।

चन्द्रान्तर्दशाफल

चन्द्र की अन्तर्दशा के समय सुवर्ण आदि ऐश्वर्य, अश्व, गज, पालकी आदि श्रेष्ठ वाहन का लाभ, शत्रु पराजय, बल में वृद्धि, नाना प्रकार के सुरस अन्न, दान, शयन, उत्तम आसन और भोजन की प्राप्ति होती है।

भौमान्तर्दशा फल

राजा और चोर के कारण भय, अग्नि कृत् पीड़ा, सर्वाङ्ग रोग, सदा दुःखी, नाना प्रकार की चिन्ता, ज्वर, कष्ट आदि भौम की दशा में सम्भव होते हैं।

राह्वन्तर्दशा फल

राहु की अन्तर्दशा के समय मनुष्य बुद्धिहीन, दीन, चिन्तायुक्त, सर्वांग-पीड़ित, भयभीत, दुःखी, बन्धन, कष्ट और दरिद्रता के कारण क्लेश में रहता है।

गुर्वन्तर्दशा फल

राज्याधिकार, उत्कृष्ट चित्तवृत्ति, धर्म में निष्ठा, आरोग्यता, निश्चय ही धन धान्य वृद्धि आदि गुरु की अन्तर्दशा में सम्भव होता है।

शन्यन्तर्दशा फल

मिथ्यापवाद, हिंसक वृत्ति, बन्धन, द्रव्य नाश, मित्रों व बान्धवों से कलह करने की प्रवृत्ति, कार्य हानि आदि शनि अन्तर्दशा के समय सम्भव होता है।

बुधान्तर्दशा फल

अति सुन्दर स्त्रियों का भोग, सब प्रकार के भोग विलास, स्वर्ण-रत्न आदि की प्राप्ति, धनार्जन, ईश्वर स्मरण इत्यादि बुध की दशा के समय सम्भव होते हैं।

केत्वन्तर्दशा फल

स्त्री वियोग से शरीर क्लान्त, धन नाश, कष्ट, रोग, बन्धु कलह और देशान्तर गमन आदि केतु दशा में सम्भव होता है।

शुक्रान्तर्दशा फल

बाग-बगीचा आदि स्थान की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ व पुष्ट, श्वेत छत्र की प्राप्ति, धन-धान्य वृद्धि, आयु वृद्धि, पुत्र-पौत्र की प्राप्ति आदि शुक्र दशा के समय सम्भव होते हैं।

योगिनी दशा के स्वामी कथन

योगिनी दशा क्रम में मंगला, पिङ्गला आदि दशा के स्वामी क्रम से चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र और राहु-केतु सङ्कटा दशा के अर्थात् राहु पूर्वार्द्ध का स्वामी और केतु परार्द्ध का स्वामी जानना चाहिए।

जन्मनक्षत्र वश योगिनी दशा ज्ञान

जन्म नक्षत्र में ३ को मिला करके ८ का भाग देने से शेषांक मङ्गलादिक दशा क्रम से जाननी चाहिए। विशेष कोष्टक से स्पष्ट हो जाएगा।

योगिनी दशा के नाम

मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, सङ्कटा, ये आठ योगिनी दशा के नाम कहे गए हैं।

योगिनी दशा वर्ष

मंगलादि योगिनी दशाओं के वर्ष क्रम से १, २, ३, ४, ५, ६, ७ और ८ कहे गए हैं, उनमें अन्तर्दशा लाने की विधि यह है कि प्रथम दशा वर्ष १ अर्थात् ३६० दिन में ३६ से भाग देने पर लब्धि अन्तर्दशा निकल आती है। आगे भी इसी तरह निकालना चाहिए।

अन्तर्दशा लाने में विशेष

प्राप्त दशा में जिस दशा का अन्तर्दशा लाना हो, उसके वर्ष संख्या से प्राप्त दशा को गुणा कर, उसमें ३६ से भाग देने पर अन्तर्दशा आ जाती है। अधोलिखित चक्र से अन्तर्दशा स्पष्ट हो जाएगा।

योगिनी दशान्तर्दशा चक्र

मङ्गला दशा वर्ष १ दिन ३६०		पिङ्गला दशा वर्ष २ दिन ७२०		धान्या दशा वर्ष३ दिन १०८०		भ्रामरी दशा वर्ष ४ दिन १४४०		भद्रिका दशा वर्ष ५ दिन १८००		उल्का दशा वर्ष ६ दिन २१६०		सिद्धा दशा वर्ष ७ दिन २५२०		सङ्कटा दशा वर्ष ८ दिन २८८०	
आ. चि श्र.		पुन. स्वा. ध.		पु. वि. शत.		अ.श्ले. अ.पूर्वाभा.		ध.म. ज्ये.उभा.		कृ. पूफा. मू.रे.		रो.उफा. पूषा.		मृ.ह. उषा.	
मङ्गला	१०	पि०	४०	धा०	९०	भ्रा०	१६०	म०	२५०	उ०	३६०	सि०	४९०	सं०	६४०
पिङ्गला	२०	धा०	६०	भ्रा०	१२०	म०	२००	उ०	३००	सि०	४२०	सं०	५६०	मं०	८०
धान्या	३०	भ्रा०	८०	म०	१५०	उ०	२४०	सि०	३५०	सं०	४८०	मं०	७०	पिं०	१६०
भ्रामरी	४०	म०	१००	उ०	१८०	सि०	२८०	सं०	४००	म०	६०	पिं०	१४०	धा०	२४०
भद्रिका	५०	उ०	१२०	सि०	२१०	सं०	३२०	म०	५०	पिं०	१२०	धा०	२१०	भ्रा०	३२०
उल्का	६०	सि०	१४०	सं०	२४०	मं०	४०	पिं०	१००	धा०	१८०	भ्रा०	२८०	म०	४००
सिद्धा	७०	सं०	१६०	मं०	३०	पिं०	८०	धा०	१५०	भ्रा०	२४०	म०	३५०	उ०	४८०
सङ्कटा	८०	मं०	२०	पिं०	६०	धा०	१२०	भ्रा०	२००	म०	३००	उ०	४२०	सि०	५६०
योग	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

योगिनी दशा फल

मंगला दशा में शत्रु के उपद्रव का नाश, हाथी-घोड़ा-स्वर्ण-रत्न आदि का लाभ, स्त्री-पुत्र-गृहादि का लाभ और मंगलादि कार्य का होना सम्भव होता है।

पिङ्गला दशा का प्रारम्भ सुख से होता है, तदनन्तर दुःख, शोक, कुल रोग की वृद्धि, चित्त में व्याकुलता और बन्धुओं में वैरभाव होता है।

धान्या दशा में धन वृद्धि, धान्य वृद्धि, राजपूजित, युद्ध में सदा विजय, धैर्य्य प्राप्ति, स्त्री-पुत्र का सुख प्राप्ति, चित्र वस्त्र लाभ आदि सम्भव होता है।

भ्रामरी दशा में विदेश भ्रमण, युद्ध में हानि, स्त्री को पीड़ा, सुख हीन होना, ऋण बोझ का भारी होना, रोग वृद्धि होना, स्वजनों का प्रकोप होना, देश-देश भटकते फिरना आदि सम्भव होता है।

भद्रिका दशा में धन की प्राप्ति, आनन्द में वृद्धि, गुण का प्रकाशन, उत्तम वस्त्र प्राप्ति, राजमान्य, भूषण प्राप्ति, स्त्री भोग आदि का सुख, कल्याण मार्ग का प्रशस्त होना आदि सम्भव है।

उल्का दशा में भ्रमण, रोग, दुःख, ज्वरकोप, धनवियोग, देशवियोग, स्त्री वियोग, गोत्र कलह, बन्धु व मित्र से वैर, नाना प्रकार के अनर्थ आदि सम्भव होते है।

सिद्धा दशा में राज्याभिमान, मित्र-बन्धु का सुख, धान्य लाभ, गुणों की सिद्धि, कीर्ति प्राप्ति, राज्यादि प्राप्ति, पुत्रादि सुख, सर्वकार्य सिद्धि आदि सम्भव होता है।

सङ्कटा की दशा में जनों में कलह, ज्वर पीड़ा, स्त्री आदि कष्ट, पशुओं का नाश, गृह अल्पवास, प्रवास की अभिलाषा, राजपक्ष से सङ्कट आदि होते हैं।

पुनः मंगलादिदशा फल

१. मङ्गलादशा में शुभ कार्य, आनन्द, यश और द्रव्य की प्राप्ति होती है।
२.पिङ्गला में शरीर पीड़ा, मन में दुःख, भ्रमित होना आदि सम्भव है।
३. धान्या में धन प्राप्ति, मित्र-बन्धु मिलन, आरोग्यता, सुन्दरता आदि होते हैं।
४. भ्रामरी में स्थान नाश, दिक् भ्रमण होते हैं।
५. भद्रिका में सुख, सम्पत्ति, विलास, यश आदि मिलते हैं।
६. उल्का में राज से भय, धन-नाश, रोग ग्रस्तता, पीड़ा आदि होते हैं।
७. सिद्धा में कार्य सिद्धि, सुख प्राप्ति आदि सम्भव होता है।
८. सङ्कटा में व्याधि, मरण, क्लेश आदि मिलते हैं।

वर्ष दशा क्रम प्रकार

वर्ष दशा का क्रमारम्भ जन्म राशि से माना जाता है। इस तरह जिस मास में जन्म राशि का सूर्य हो, उस राशि से द्वादश (१२) मास में वर्ष दशा का क्रम पूरा होता है। यहीं से सूर्यादि नवग्रहों की दशा का क्रम अधोलिखित काल क्रम से भुक्त होता है।

२० दिन सूर्य की दशा जन्म राशि वाले स्थान से होती है, इसका फल भ्रमण है। ५० दिन चन्द्र की दशा, जो तीसरे स्थान के १० दिन रवि भोगते हैं, इसका फल नाना प्रकार के उत्तम भोग की प्राप्ति है।

२८ दिन मंगल की दशा, जो चौथे स्थान के ८ दिन रवि भोगते हैं, इसका फल रोग व सन्ताप है। ५६ दिन बुध की दशा, जो छठें स्थान के ४ दिन रवि भोगते हैं, इसका फल सुखकारक है।

३६ दिन शनि की दशा, जो सप्तम स्थान के रवि १० दिन भोगते हैं, इसका फल पीड़ादायक है। ५८ दिन गुरु की दशा, जो नवमस्थ सूर्य ८ दिन में भोगते हैं। इसका फल धन प्राप्ति है।

४२ दिन राहु की दशा, जो दशम स्थान को २७ दिन भोगते हैं, इसका फल नाना प्रकार का सोच के उत्पन्न होने हैं। ७० दिन शुक्र की दशा, जो द्वादश स्थान को रवि सम्पूर्ण भोगते हैं, इसका फल सर्व सुखकारक है।

ग्रहों की नित्यानित्य दशाओं का प्रकार

गत तिथि, वार, नक्षत्र तथा नामाक्षर, इन सबके योगफल में ९ का भाग देना चाहिए। शेष १ से सूर्य की दशा, २ से चन्द्र की दशा, ३ से मंगल की दशा, ४ से राहु की दशा, ५ से गुरु की दशा, ६ से शनि की, ७ से बुध की, ८ से केतु की, ९ या ० से शुक्र की दशा जाननी चाहिए। इस प्रकार नित्य दशाक्रम जानना चाहिए और फल वर्ष दशा क्रम के समान समझें।

नित्यदशाज्ञानार्थ अन्य प्रकार

जन्मकालिक नक्षत्र की संख्या को ४ से गुणा करके गुणन फल में गत तिथि और वार की संख्या मिला करके ९ का भाग देने पर शेष १ से एक दिन की रवि की दशा जाननी चाहिए। जिसका फल है, शोक सन्ताप देने वाला। २ शेष से चन्द्र की दशा, फल कल्याण व लाभकारक। शेष ३ से मंगल की दशा मृत्यु कारक, शेष ४ से बुध की दशा, बुद्धि वृद्धिकारक। शेष ५ से गुरु की दशा धन देने वाली, शेष ६ से शुक्र की दशा सुख कारक, शेष ७ से शनि की दशा पीड़ा कारक, शेष ८ से राहु की दशा घातक, शेष शून्य से केतु की दशा मृत्यु देने वाली जाननी चाहिए।

पञ्चमहापुरुष-भूत विचार

पञ्चमहापुरुष लक्षण कथन

अब यहाँ पञ्चमहापुरुष लक्षणों को पहले कहा जा रहा है। भौमादि ग्रह बली होकर स्वोच्च या स्वराशि का केन्द्र में स्थित हों, तो क्रमशः रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शश नामक पंचमहापुरुष योग पूर्वाचार्यों ने बतलाया है।

रूचक लक्षण

रुचक योगोत्पन्न जातक का मुख लम्बा, अति उत्साही, निर्मलकान्ति, बलवान्, सुन्दर भ्रू युक्त, कृष्ण केश, सुरुचिवाला, युद्धप्रिय, रक्तश्यामवर्ण, शत्रुहन्ता, विवेकी, चोरों का स्वामी, क्रूर, राजा,मन्त्रज्ञ, दुर्बल जङ्घा, ब्राह्मण भक्त, हाथ में वीणा-वज्र-धनुष-पाश-वृषभ और चक्र रेखा से युक्त तथा अभिचार (मारणमोहन) कर्म में निपुण होता है। सौ अङ्गुल लम्बा, मुख व मध्य (कटिभाग) में तुल्य तथा वजन में एकहजार तुल्य होता है। विन्ध्य और सह्याचल पर्वतीय प्रदेश का शासक होता है। अन्त में ७० वर्ष की आयु में शस्त्र या अग्नि के द्वारा स्वर्ग जाता है।

भद्र लक्षण

भद्रयोग में उत्पन्न पुरुष सिंह सदृश, उच्च वक्षःस्थल युक्त, हाथी सदृश धीर गति, लम्बी भुजावाला, पण्डित, चतुरस्र, योगक्रिया का ज्ञाता, सत्त्वगुणी, सुन्दर पैर व दाढ़ी-मूँछ, भोगी, शङ्ख-चक्र-गदा-शूल-हाथी-ध्वजा-हल रेखाओं से चिह्नित हाथ-

पैरवाला, सुन्दर नासिकायुक्त, शास्त्रज्ञ, काले बालों से शोभित, सब कार्यों में स्वतन्त्र तथा अपने परिवार का पालक होता है।

मित्र लोग भी उसका धनभोग करते हैं। वह तौल में पूर्णभारयुक्त होता है। स्त्री-पुत्रादि से संयुक्त, सकुशलराजा, वह मध्यदेश का रक्षक होकर सौ वर्ष तक जीवन जीता है।

हंस लक्षण

हंस योग में उत्पन्न पुरुष-हंस समान ध्वनि, सुमुख और उन्नत नासिका युक्त, कफप्रकृति, पिङ्गल नेत्र, रक्तनख, तीक्ष्णबुद्धि, पुष्ट कपोल, गोलमस्तक, सुन्दर पैर युक्त, उसके हाथ व पैर में मत्स्य-अङ्कुश-धनुष-शङ्ख-कमल-खाट सदृश रेखाचिह्न होते हैं। वह कामुक होता है, उसे स्त्री भोग से तृप्ति नहीं होती। उसके कद की लम्बाई ९६ अङ्गुल, वह जलक्रीड़ा प्रेमी, सुखी, गङ्गा-यमुना के मध्यवर्ती देश का पालक होकर सर्व सुख भोगते हुए सौ वर्ष जीता है।

मालव्य लक्षण

मालव्य योग में उत्पन्न पुरुष पतली कमर वाला, चन्द्र के समान कान्ति, सुगन्ध युक्त शरीर वाला, हल्का रक्तवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर व स्वच्छ दाँत, हाथी के जैसा गम्भीर स्वर, घुटने तक लम्बी बाहु, उसके मुख की लम्बाई १३ अंगुल और चौड़ाई १० अंगुल होती है। वह ७० वर्ष तक सिन्धु और मालवक्षेत्र का सुखपूर्वक पालन करने के बाद सुरलोक को जाता है।

शश लक्षण

शश योग में उत्पन्न पुरुष छोटे दाँत और छोटे मुख वाला, शरीर मध्यम, पतली कमर, सुन्दर जाँघ, बुद्धिमान्, वन और पर्वत आदि में विहार करने वाला, शत्रु के भेद का ज्ञाता, सेनानायक, ऊँचे दाँतों से युक्त, चञ्चल, धातुज्ञाता, स्त्री प्रेमी, परधन पाने वाला होता है। हाथ पैर में माला-वीणा-मृदङ्ग और शस्त्र चिह्न से युक्त वह सत्तर वर्ष तक सुखपूर्वक राज्य करते हुए अन्त में सुरधाम को जाता है।

पञ्चमहाभूत का प्रयोजन

अब पाँच प्रकार के महापुरुष योग कहने के अनन्तर अब आकाशादि पञ्चमहाभूत को प्रस्तुत करने की चेष्टा करते हैं। जिसके द्वारा अज्ञात जन्म लग्न वालों के लिए ग्रहों की वर्तमान दशा का ज्ञान किया जाता है।

अग्नि, भूमि, आकाश, जल और वायु के स्वामी क्रमशः भौमादि पाँचों ग्रह होते हैं। ग्रहों के बलानुसार ही उस ग्रहसम्बन्धी पञ्चमहाभूत का फल जानना चाहिये।

जातक प्रकृति

जिसके जन्मसमय में भौम बलवान हो वह अग्निप्रकृति का, बुध बलवान हो तो भूमि प्रकृति का, गुरु बली हो तो आकाश प्रकृति का, शुक्र बली हो तो जल प्रकृति का और शनि बलवान हो तो वातप्रकृति का होता है। यदि अधिक ग्रह बलवान रहें तो मिश्रित प्रकृति का होता है।

पंचभूत स्वभाव लक्षण

सूर्य बली हो तो अग्निस्वभाव और चन्द्र बली हो तो जलस्वभाव होता है। सभीग्रह अपनी-अपनी दशा में अपने महाभूत सम्बन्धि छाया (स्वभाव) का बोध कराते हैं।

अग्निस्वभाव का मनुष्य क्षुधार्त, चञ्चल, वीर, दुर्बल, विद्वान्, अधिक भोजन करने वाला, तीक्ष्ण, गौरवर्ण और स्वाभिमानी होता है।

भूमिस्वभाव का मनुष्य कपूर व कमल के समान गन्ध वाला, भोगी, स्थिरसुख से युक्त, बलयुक्त, क्षमाशील और सिंह की तरह गम्भीर स्वर वाला होता है।

आकाशतत्त्व स्वभाव का मनुष्य शब्दार्थ का ज्ञानी, नीतिनिपुण, प्रतिभायुक्त, ज्ञानी, खुले मुख और लम्बा कद वाला होता है।

जलतत्त्व स्वभाव का मनुष्य कान्तियुक्त, भारवाही, मधुरभाषी, राजा, बहु मित्र वर्ग युक्त और विद्वान् होता है।

वायुतत्त्व स्वभाव का पुरुष दानी, क्रोधी, गौरवर्ण, भ्रमणप्रिय, राजा, शत्रुजेता और दुर्बल शरीर वाला होता है।

पंचतत्त्वों की छाया

अग्नितत्त्व स्वभाव पुरुष का शरीर सुवर्णकान्ति का, शुभ्रदृष्टि, सब कार्य सिद्धि, शत्रुविजय और धनलाभ करने वाला होता है।

भूमितत्त्व स्वभाव का पुरुष (बुध की प्रबलता) सुन्दर सुगन्धि युक्त शरीर वाला तथा नख-केश-दन्त सब स्वच्छ, एवं धर्म-धन-सुख से युक्त होता है।

आकाश तत्त्व स्वभाव का पुरुष (बृहस्पति प्राबल्य) रहे तो बोलने में चतुर तथा गीत-वाद्यादि के श्रवण से सुख प्राप्त करने वाला होता है।

जलतत्त्व स्वभाव का पुरुष (शुक्र या चन्द्र की प्रबलता) शरीर से कोमल तथा स्वस्थ और विविध सुस्वाद भोजन से सुखी होता है।

वायुतत्त्व स्वभाव का पुरुष (शनि की प्राबलता) रहे तो मलिन शरीर, मूढ, दरिद्र, वातरोगी और शोक-सन्ताप से युक्त होता है।

इस प्रकार पञ्चतत्त्वों के जो फल होते हैं वे भौमादि ग्रहों के बली रहने पर ही पूर्णरूप से होते हैं, बलहीन रहें तो फलों में बलानुसार अल्पता समझना चाहिए।

ग्रह यदि नीच में, शत्रु या दुष्टराशि में रहे तो विपरीत फल समझें। ग्रह यदि बलहीन रहे तो उसका फल स्वप्न अथवा मन में प्राप्त होता है।

जिसका जन्मकाल अज्ञात हो उसका वर्तमान लक्षण से वर्तमान ग्रह की दशा समझें और दुष्टफल शान्त्यर्थ शान्तिग्रह की आराधना करें और करावें।

प्रयोजन

जिस समय जिस ग्रहतत्त्व का उदय हो, तदनुकूल कार्य से लाभ, अन्यथा हानि होती है। इसीलिए मुनियों ने ग्रहों के तत्त्वादिफल कहे हैं।

तत्त्व के उदय (ग्रह की दशा) अनुसार कार्य करें। अशुभ ग्रहों के लक्षण (अशुभ फल) में उनकी शान्ति करावें।

जैसे—अग्नितत्त्व (भौम की दशा) में जो फल कहे गये हैं वह लक्षित हो तो समझें कि इस समय भौम का समय है। तत्तद फलों की प्राप्ति से ग्रह की प्रसन्नता और फलहानि से क्रूरता समझकर उनकी शान्ति और तदनुकूल कार्य करना चाहिए।

जिस ग्रह की दशा में धन या सुखादि जो फल उक्त हैं—वह ग्रह यदि जन्मसमय या दशासमय में बलवान रहे तो जाग्रत् में प्रत्यक्ष फल, यदि निर्बल रहे तो स्वप्न में अथवा मानसिक चिन्ता में वह फल प्राप्त होता है।

सत्त्वादिगुणफल

अब सत्त्व, रज और तम; इन तीनों गुणों के अनुसार फल को बतलाते हैं—

जब सत्त्वगुण ग्रह की प्रबलता रहे उससमय उत्पन्न हुआ जातक सत्त्वगुणी और विद्वान होता है।

रजोगुण ग्रह के समय में रजोगुणी व बुद्धिमान् तथा तमोगुण ग्रह के समय में तमोगुणी व मूर्ख होता है।

गुण-साम्य हो अर्थात् तीनों गुणवाले ग्रहों का गुण रहे उससमय में उत्पन्न जातक मिश्रगुणी व मध्यम बुद्धि का होता है।

गुण के प्रकार

उत्तम-मध्यम-अधम और उदासीन चार प्रकार के गुण होते हैं। अतः चार तरह के प्राणी होते हैं। इनके गुणों को यहाँ प्रकट करने जा रहे हैं, जिसे प्राचीन (नारदादि) मुनियों ने कहा है।

उत्तम-मध्यम-अधम के लक्षण

सत्वगुण में इन्द्रिय और मन का संयमी, तपस्या, शौच, क्षमा, सरलता, सत्यवादिता, अलोभी व तपस्वी ये स्वभाव होते हैं।

रजोगुण में शूर, प्रतापी, धीर, चतुर, युद्ध में पीछे न हटने वाला तथा सज्जनों का रक्षक ये स्वभाव होते हैं।

तमोगुण में लोभी, मिथ्याभाषण, मूर्ख-आलसी और सेवाकार्य में पटु ये स्वभाव होते हैं।

उदासीन के लक्षण

गुणसाम्य में कृषिकार्य-वाणिज्य-पशुओं की सेवा में पटु तथा सत्य या असत्य भाषण करना ये स्वभाव होते हैं।

इस प्रकार लक्षणों देखकर ही उत्तम-मध्यम-अधम और उदासीन प्रवृत्ति के अनुसार समझना चाहिए तथा तदनुसार उसी कार्य में संलग्न करना चाहिये।

त्रिगुणों में से दो गुण प्रबल रहें तो उसकी प्रबलता अन्यथा (बल दो से अधिक नहीं रहे तो) गुणसाम्य होता है।

गुण प्रयोजन

स्वामी-सेवक एवं स्त्री पुरुष में यदि समान गुण (स्वभाव स्वरूप आदि) हों तो प्रेम-स्नेह होता है।

पूर्वोक्त चार प्रकार के मनुष्यों में यदि अधम-उदासीन, उदासीन-मध्यम और मध्यम-उत्तम का सम्बन्ध रहे तब भी परस्पर प्रेम एवं स्नेह होता है।

मेलापन विचार

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि यदि वर से कन्या और स्वामी से सेवक गुणों में कम रहें तो परस्पर प्रेम व स्नेह होता है। अन्यथा वर से कन्या और स्वामी से सेवक गुणों में अधिक रहें तो प्रेम व सौहार्द्र की हानि होती है।

गुणों से जातक भेद विचार—माता-पिता-जन्मसमय और सङ्गति (संसर्ग) ये उत्तम मध्यम आदि चार गुणों के कारण होते हैं, इनमें उत्तरोत्तर कारण बलवान् होता है।

अतः इससे यह सिद्ध होता है कि पिता के गुण बल १ माता में २, जन्मसमय में ३ और संसर्ग में ४ गुण बल होते हैं।

जन्मसमय में जिस गुण की प्राबलता रहती है, वही गुण जातक में होता है, अतः जन्म का समय परीक्षण करके ही फलादेश करना चाहिये।

त्रैलोक्य का ईश्वर अविनाशी-व्यापक-भगवान्स्वरूप काल ही समस्त चराचर का उत्पादक, पालक और संहारक होता है।

कालस्वरूप भगवान् की त्रिगुणात्मिका शक्ति ही प्रकृति होती है। उस त्रिगुणात्मक शक्ति से विभाजित अव्यक्तकाल भी व्यक्त रूप में होते हैं।

भगवान् काल के गुणों के अनुसार क्रमशः उत्तम-मध्यम-उदासीन और अधम ये चार अङ्ग होते हैं।

काल स्वरूप भगवान् के उत्तम अङ्ग से उत्तम जन्तु (चर वा अचर), मध्यम से मध्यम, उदासीन से उदासीन और अधमाङ्ग से अधम की सृष्टि होती है।

उत्तम अङ्ग कालभगवान् का शिर, मध्यम हाथ व वक्ष, उदासीन दोनों जङ्घा और अधम अङ्ग दोनों पैर होते हैं।

इस प्रकार गुणभेदानुसार काल के भेद और चर-अचर में जातिगत भेद होता है।

॥ इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत काल (ज्योतिष)शास्त्र चतुर्थ परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ॥४॥

॥ शुभमिति ॥

□□□